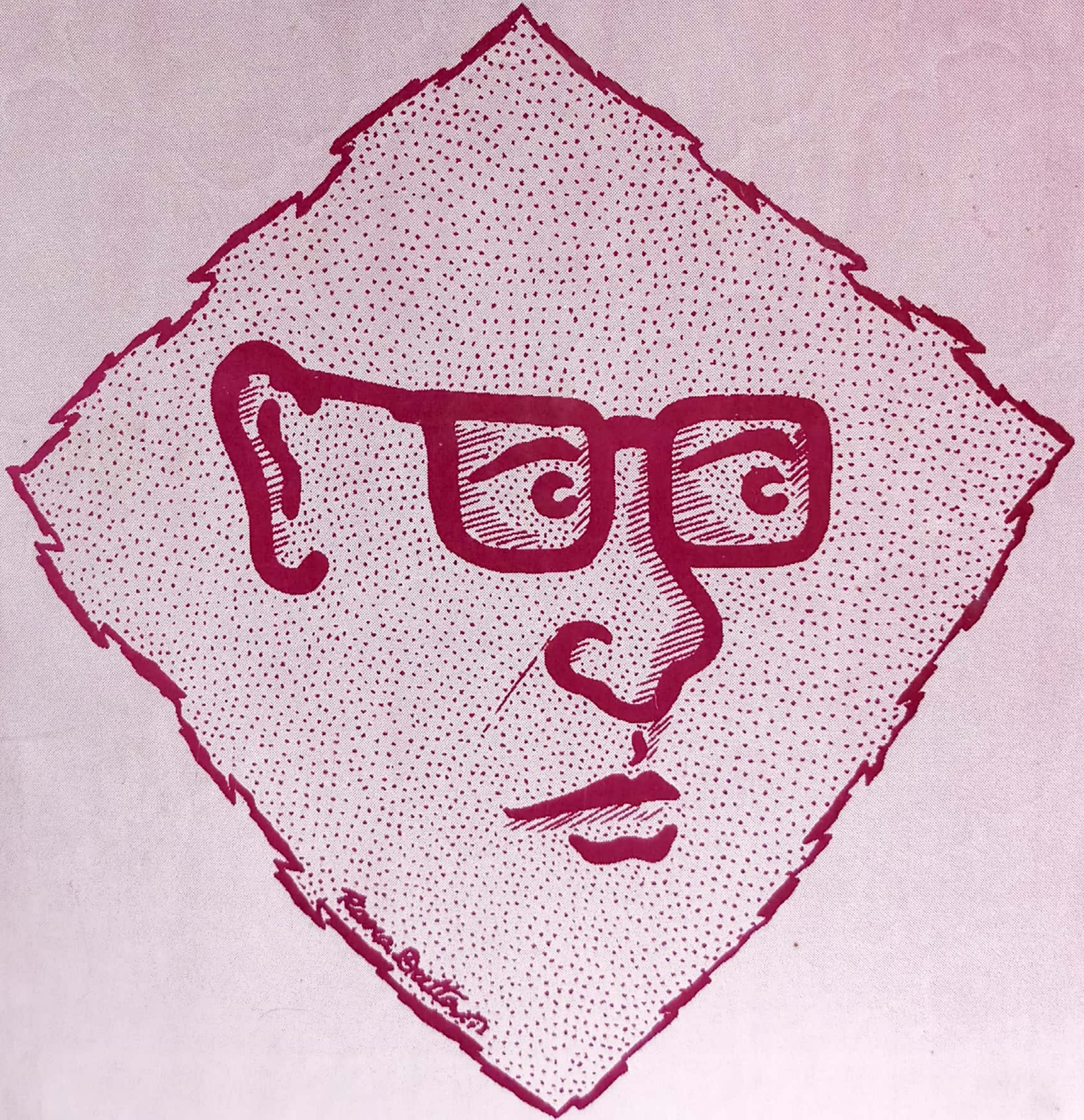
जीरोपावर



श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

जीरोपावर

[हास्य-व्यंग्य मूलक गल्प]

श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

आदित्य सदन

मिश्रटोला, दरभंगा

ZEROPOWER
SRI CHANDRANĀTH MISHRA 'AMAR'

प्रकाशक :
मिथिला विकास परिषद्
कोलकाता

प्राप्ति स्थान :
आदित्य सदन
मिश्रटोला, दरभंगा- 846004
दूरभाष : 06272-223485

मिथिला विकास परिषद्
रवीन्द्रसरणी, 243, कोलकाता- 700007

पहिल खेप : नवम्बर, 2006

प्रति : 300

मूल्य : 100/- (एक सय टाका मात्र)

मुद्रक : प्रिंटवेल,
टावर चौक, दरभंगा
दूरभाष : 06272-248421

कहबाक अछि जे...

युग बदलि गेलैक, जमाना बदलि गेलैक, शताब्दीकेँ के पूछय सहस्राब्दी बदलि गेलैक । तेँ लोक बदलि गेल, लोकक वेद बदलि गेलैक, मानसिकता बदलि गेलैक, चिन्तन ओ चिन्ता बदलि गेलैक । पहिने मनुष्य साधनासँ देवत्व दिस उन्मुख होयबाक प्रयत्न करैत छल, आब साधन-सम्पन्नतासँ तीव्रता पूर्वक पशुत्व दिस अग्रसर भऽ रहल अछि ।

पहिने पेटक भूख ओ मानसिक भूख छलैक, आब शारीरिक भूख ततेक प्रबल भऽ गेलैक अछि जे मनुष्य अपनाकेँ पशुसँ एको मिसिया झूस नहि राखऽ चाहि रहल अछि । शारीरिक भूख जगलापर बकरी मेमिआइत अछि, गाय-महिंस डिंड़िआइत अछि, मुदा पहिने मनुष्य आत्म-संयम ओ आत्मदमन कऽ एहि भूखसँ निपटैत छल, आब ईहो बोमिआइत अछि, डिंड़िआइत अछि, मानवीय मर्यादाक मानमर्दन करबामे चूल्हिपर चढ़ल दूध जकाँ उधिआइत अछि आ उधिया-उधिया चुलहाक आगिमे खसैत अछि आ पत्रकार लोकनि चिचिआइत छथि जे देशमे एड्स रोग पसाहीक आगि जकाँ पसरल जा रहल अछि । तथापि कौमारकेँ भ्रष्ट होयबाक आब प्रश्ने नहि रहि गेल अछि । एकरे प्रतिविम्ब आइ कथा-साहित्यमे मुख्य रूपेँ प्रतिविम्बित भऽ रहल अछि । सेहो प्रतिविम्बित करबामे जे कथाकार जतेक बेसी चटकार लेनिहार से ततेक उच्चासन पर सुप्रतिष्ठित, युग प्रवर्त्तकक सम्मानोपाधिसँ विभूषित ।

मान्यता एहन बनि रहल अछि जे महाकवि विद्यापति, जनिक नामक जादू, जनिक नामक संकीर्त्तन मैथिलीकेँ भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे संस्थापित करबामे समर्थ भऽ सकल, से विद्यापति कविक पाँतीसँ घुसकाय गीतकारक पाँतीमे धकियाओल जा रहल छथि । क्रम एहन सन जे गीतकार आ कवि भिन्न-भिन्न गोत्रक होथि । वर्त्तमान युगक सर्वाधिक लोकप्रिय साहित्यकार, अमैथिलीभाषीओ जनकेँ मैथिली पढ़बाक हेतु बाध्य कयनिहार, जनिक लिखल पुस्तक एखनो पुस्तकमेलामे लोक तकने फिरैत अछि,

जनिक रचनाकेँ आजुक सम्पादक लोकनि धरोहरक रूपमे अपना-अपना पत्रिकामे छापि पत्रिकाकेँ लोकप्रिय बनयबाक चेष्टा कऽ रहल छथि से हास्य-सम्राट प्रो० हरिमोहन झा 'टाइम पास' रचनाकार घोषित कयल जा रहल छथि । तेहन स्थितिमे हमरा सन कलम घसनिहार लोकक लेल 'कुत्र गण्यो गणेश:' ई उक्ति सर्वथा सार्थक ।

तथापि लौल तँ सबकेँ होइते छैक, सेहो एतेक दूर धरि जे लोकोक्तिओ बनि गेल अछि– ''सब सखी झुम्मरि खेलय लुल्ही कहय हमहूँ'' । छोट-छिन ई संकलन एहने सन लौलक प्रमाण मानल जा सकैत अछि । लौल करबाक सेहो किछु कारण होइत छैक ।

1954 ई.क अन्त होइत-होइत विगत 45 वर्षसँ दरभंगासँ मैथिली-हिन्दी मिश्रित मिथिला मिहिरक प्रकाशन बन्द भऽ गेलैक । पुन: 1960 ई.क सितम्बरक दोसर सप्ताहसँ विशुद्ध मैथिलीमे प्रकाशित होअऽ लगलैक । तकरो एक टा इतिहास छैक । जकर उल्लेख आनो ठाम भेल छैक । एहि ठाम एतबे उल्लेख प्रयोजनीय जे मिथिला मिहिरक पुन: प्रकाशनक अवसरपर शेखरजी, अर्थात् मिहिरक नव-नियुक्त सम्पादक सुधांशुशेखर चौधरीकेँ संस्थापित करबामे कतेक आ कोन-कोन प्रकारक सहयोग करऽ पड़ल ताहि नेपथ्य कथाक चर्च करब आत्मश्लाघा होयत, तथापि किछु प्रत्यक्ष प्रमाणसँ क्यौ अनुमान कऽ सकैछ । ओ प्रमाण थीक जे 1960क सितंबरक दोसर सप्ताहसँ 31 दिसंबर अर्थात् पौने चारि मासक अभ्यन्तर अपन नाम ओ बतहू मिसरक नामसँ सात गोट गल्प कही वा कथा तथा तीन गोट कविता छपल अछि । आइ जे तेसर चारिम पीढ़ीक साहित्यकार छथि तनिका सभक कोन गप्प, दोसरो पीढ़ीक कतोक गोटे हाइ स्कूलक छात्र रहल होयताह । हुनका लोकनिक दृष्टिपर एहि संकलनक कतिपय रचना नहिएँ गेल होयतनि । ओहि समयक जनरुचिकेँ ध्यानमे रखैत लिखल ई रचना आजुक पाठककेँ स्वरुचिक अनुकूल लगैत छनि वा आब ई सब कालबाह्य भऽ गेल तकरे अंदाज लेबाक उद्देश्यसँ संकलित कयल गेल अछि । ओना छद्म नामसँ लिखल रचना पर जेना अनैतिक दावा कयल जा रहल अछि तकरो उदाहरण अंगरेजी फूलक चिट्ठी आदि अछिए । एकरा कदाचारक संज्ञा देल जाय वा दुराचारक ? ओहि युगक वरेण्य साहित्यकार चिरस्मरणीय किरणजी हास्य रसकेँ एक निबन्धमे द्वेष रस घोषित कऽ देने छथि । ई संकलन छाँटि कऽ हास्ये-व्यंग्य रचना समेटने अछि । पाठक वर्गकेँ एहिमे कतहु द्वेषक दर्शन होइत छनि वा नहि तकरो परीक्षा भऽ जायत ।

आजुक समयमे ततेक प्रकारक पुरस्कार सब प्रचलित भऽ गेल अछि आ तकरो राशिक आधारपर पैघ-छोटक पाँतीमे परिगणित कयल जा लागल अछि, संगहि 'बायोडाटा' ओ फोटोक प्रचलन ततेक-ततेक विस्तार पाबि रहल अछि जाहिसँ रचनाकार लोकनिक आँखि चोन्हराय लागल छनि । वाक् स्वातन्त्र्यक अधिकारक दुरुपयोग वाक् संयमक सीमाक अतिक्रमण कयने जा रहल अछि । एहन स्थितिमे दुर्दान्त आलोचक

(समीक्षक नहि) दुर्दमनीय रचनाकार तथा सस्त लोकप्रियता-लोलुप सम्पादक वर्ग किच्छु कहि सकैत छथि, किच्छु बाजि सकैत छथि, किच्छु लिखि सकैत छथि, किच्छु छापि सकैत छथि ।

मैथिलीमे कथा शब्द अनेक अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि । जखन कोनो 'वर' नहि, दू-चारि बेर सौराठ सभासँ घमाकऽ झमाकऽ घूरल वराँठकेँ कतहु सभागाछीमे कथाक उत्थान होइत छलनि तखन जे हुनकर रोमकूप कंटकित होइत छलनि, ताहि मनोभावकेँ शब्दमे बान्हब कठिन काज अछि । जखन कोनो प्रकारक अनुशासन भंग कयलापर ककरो अपन अभिभावक (गार्जियन)सँ दस टा कथा सुनऽ पड़ैत छैक ताहि कालक ओकर मनोभावक अंकन करब सेहो दुरूह । तहिना दू मित्र बैसिकऽ शतरंज खेलाइत रहैत छथि, एक पक्ष चालि उफाँटि भेला पर चालि फेरऽ चाहैत छथिन, तखन जे दुनूमे कथा-कथान्तर आरम्भ होइत छनि ताहू कालक दूनू मित्रक मानसिक उत्तेजित मनोभावक वर्णन करब असम्भवप्राय होइत अछि । मैथिलीमे तँ गल्प लिखाइत छलै, हेवनिमे एकरा कथा कहल जाय लगलैक अछि ।

ई लघु संकलन ''जीरो पावर'' साधारणसँ साधारण पाठक निधोख पढ़ि ओहिना आनन्द उठा सकैत छथि जेना कोनो सौखीन नवयुवक बिना कोनो आँखिक डाक्टरसँ आँखि जँचौने जीरो पावर चश्मा बाजारसँ कीनि चशमाक मध्य भाग उत्तुंग नाकपर राखि दूनू कमानीसँ दूनू कानकेँ पकड़ाय निधोख उतान भऽ चलि सकैत छथि । ई ने कोनो समस्याक समाधान प्रस्तुत करैत अछि ने कोनो सन्देश बिलहैत अछि । एक मात्र मनोरंजन करत से आशा कयल जा सकैछ । हँऽ मिथिलाक माँटिक सुगन्ध आ मैथिलीक स्वाद पाठक वर्गकेँ भेटि सकतनि से अपना बुझाइत अछि सेहो 'निज कवित्त केहि लाग न नीका' सन्त तुलसी दासक एहि कथनक आधारपर । असल बात तँ पाठकक समक्ष गेलाक उपरान्ते स्पष्ट भऽ सकत । अन्तमे– कागतक समुद्रसँ छानिकऽ छिड़िआयल एहि गल्प सभकेँ बाहर करबामे सहयोग देनिहार, एकर प्रेस कापी प्रस्तुत आ प्रेससँ संपर्क करबामे सहायता कयनिहार दौहित्र श्रीशंकरदेव, पौत्र युगल श्रीआदित्यभूषण ओ श्रीविभूतिभूषणक संगहि समर्पित अन्तेवासी श्रीसुमितकुमारझा 'नटवर', श्रीप्रवीणजी, श्रीलूटनकेँ अशेष शुभाशीर्वाद देबे करैत छियनि, वीणा-पुस्तक धारिणी भगवती वाग्देवीसँ प्रार्थना सेहो करैत छियनि जे हिनका सभक ''शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु बुद्धिर्माऽस्तु कुण्ठा कदापि'' प्रकाशक श्रीअशोकझा, अक्षर संयोजक श्रीअरुणजी, मुद्रक श्रीसंजूजी धन्यवादक पात्र छथिहे, आशीर्वाद स्वतः प्राप्त छनि । इत्यलम् ।

–श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

जितिया पावनि
प्रो. हरिमोहनझा जन्म-दिवस
2006 इ.

प्रकाशकीय

1941सँ साहित्य क्षेत्रमे प्रवेश कऽ आइ धरि कविता, कथा, निबन्ध, एकांकी, संस्मरण, स्तम्भ लेखनसँ मैथिली साहित्यक श्रीवृद्धिमे लागल, केवल साहित्ये नहि, साहित्यकारो सभक निर्माणमे लागल तथा एकैसम शताब्दीक पहिल वर्षमे ठाँहि-पठाँहि (कविता संग्रह) तेसर वर्षमे 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्यकथा' (संस्मरण) पाँचम वर्षमे 'खजबा टोपी' (एकांकी संकलन)क बाद छठम वर्ष अर्थात् 2006मे 'जीरोपावर' हास्य व्यंग्य मूलक गल्प संग्रह लऽ उपस्थित भेनिहार श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'सँ मैथिली साहित्यकेँ और बहुत किछु आशा छैक।

श्रीअशोक झा

अध्यक्ष, मिथिला विकास परिषद्
243, रवीन्द्रसरणी
कोलकाता- 700007

अनुक्रम



कन्तू भाइ आ कदीमा

हमर कन्तू भाइ यदि कोदराष्टकमे पण्डित छथि तँ अहाँ जुनि बूझि लियनि जे ओ कर्मकाण्डक कनमो भरि नहि जनैत छथि । कनेक-मनेक कसरत आ कनेक मनेक-कुस्ती-किछुकेँ छोड़ने नहि छथि; कोनो-ने-कोनो कान सब कथुक पकड़नहि छथि । से, एक बेर कन्तू भाइ कूशे कामतिक संग गेलाह नेपाल तराइ । कूशे कामति केदार झा पुरोहितक संग अधिक काल ओहि 'पानी' गेल करय आ मास दू मास घूमि-घामिकऽ देहो पोसि लेअय आ चालिस-पचास टाकाक आमदनियो भऽ जाइक । संगहि थारू सभक बीच कोन तरहेँ पुजाओल जाइत छैक आ कतेक तरहेँ पाइ घिचबाक जोगाड़ धराओल जाइत छैक ई तऽरी-भिट्ठी कूशे कामति सिखिये लेने छल ।

कूशे कामतिक घर लग कन्तू भाइक केरा बाड़ी, जकर एक टा कोन धूर सातेक टेढ़ । जँ कन्तू भाइ ओतबा जमीन कूशे कामतिकेँ दऽ दैत छथिन तँ हिनको बाड़ी सोझ आ कूशे कामतिकेँ जे बासमे सिकस्ती छैक से कनेक खुलफैल भऽ जयतैक ।

कन्तू भाइक लग जखन ई प्रस्ताव अयलनि तँ ओ अपना बाड़ीकेँ चौखुट करबाक विचारसँ स्वीकार कऽ लेलथिन । गामक लोक तँ एक नम्बरक जरनियाह होइत अछि ! कूशे कामतिक देयाद कैलू कामति । जखन कैलू कामति सुनलक जे कन्तू बाबू कूशेकेँ बाड़ीक ई कोन दऽ देबऽ चाहैत छथिन तँ जोर लगौलक जे कूशेसँ पाँच रुपैये धूर हम बेसी देब आ ई हमरे लिखि दियऽ । दू सय रुपैये कट्ठा दऽर टूटल रहनि से कैलू तीन सय रुपैये पर पहुँचि गेल । तीस-पैंतीस टाकाक लाभ छलनि तेँ हमर भौजी कन्तू भाइपर कस्ती कयलथिन जे कैलूकेँ छोड़ि अनका ई जमीन दइये ने सकैत छिऐक । कन्तू भाइ एक बोलिया लोक । कहथिन जे जखन एक बेर कहि देलिऐक तखन बात कोना लौटू ? मर्दक बात हाथीक दाँत जे मुँहसँ बाहर भेल, बाहर भऽ गेल । हम कोनो कांग्रेसी नेता तँ छी नहि जे कखनहुँ किछु कहलहुँ, कखनहुँ किछु ।

मुदा हमर भौजी टससँ मस भेनिहारि नहि । कतबो कन्तू भाइ बुझौलथिन जे

कैंचा-कौड़ी हाथक मैल थिक, एहिना अबैत छैक, एहिना जाइत छैक । कैलू तँ देयादी डाहक कारणेँ लेबऽ चाहैत अछि आ कूशेकेँ घरक खगता छैक । ताहिपर हमर भौजी सनकि उठलीह– बड़ महतमा गान्धी भेलहुँ अछि तँ जे फूरय से करू, मुदा हमरा नूआ फाटि गेल अछि से एखने आनि दियऽ । कतेक दिनसँ नेयारने छी, गंगामे डूब देना दस बरखसँ उप्पर भऽ गेल, से एहि बेर दशहरा दिन हम जयबे करब । तकर खर्च जोड़िकऽ दऽ दियऽ तखन जाकऽ मङनीयेमे ककरो लिखि दियौक, हमरा की ताहिसँ ?'

कन्तू भाइ एहि पेकड़मेसँ छुटबाक हेतु कहलथिन– 'बेस, ओरियान करैत छी तँ सबटा बेगर्त्ता शांत कऽ देब ।' मुदा अड़ारिमे मोहल्लति कोना ? हमरा भौजीकेँ तँ ठाढ़े-ठाढ़ चाहियनि । बस, बाताबाती रेका-तोकी पर उतरल आ अंतमे कन्तू भाइ कुटम्मस शुरू कयलनि तँ परोसिया चूड़ा पैंच लेबऽ पहुँचि गेलथिन । धम-धम जे सुनथिन से भेलनि जे चूड़ा कूटल जा रहल छनि ।

कन्तू भाइ मारैत-मारैत अपस्याँत छलाह आ भौजी हमर मारि खाइत-खाइत अपस्याँत छलीह । एहि तरहेँ कन्तू भाइक आङनमे लंका-काण्डक प्रथम सर्ग समाप्त भेल । भौजी भानसक कोहा-कराहीपर अपन रोब झाड़लनि आ कन्तू भाइ अपन कुर्त्ता पहिरि धोतीकेँ काँखियौलनि । भौजीकेँ विश्वास छलनि जे पहर डेढ़ पहरमे अपने फेर घूरि औताह, तखन मनाओन करताह, तखन हम चूल्हिक पूजा शुरू करब, मुदा भौजीक अनुमान ठीक नहि भेलनि । अहर बीतल, पहर बीतल, दुपहरसँ बेर ढरऽ लागल, धीया-पूता खयबा लेल काँउ-काँउ करय, मुदा बिनु मनाओने भौजी जँ भानस कइये लेथि तँ मर्यादा रहलनि कोना ? दिन भरि धीया-पूता फलाहार कऽ गेल, बाड़िये-बाड़ी लतामक गाछपर घुमैत रहल । दिनकर भगवान रंगमंच छोड़ि पाट गेलाह आ भौजिओक जठरानलमे तीक्ष्णता अयलनि तँ उठिकऽ गेलीह चूल्हिक मुँह झरकाबऽ ।

मास बीतल, दू मास बीतल, तेसर मास आरम्भ भेल, मुदा हमर कन्तू भाइ गाम नहि अयलाह । आब जे भौजीक प्राण सुखायल जाइनि तँ लोक आरो टीप देल करनि जे हुनकर दूनू साँझक सिदहा बचल जाइत अछि ताहीसँ गंगा नहा लियऽ ।

कन्तू भाइ आङनसँ चललाह तँ कूशेक ओहि ठाम पहुँचलाह । ओकरा सब हाल-चाल कहि सुनौलथिन । संगहि इहो कहलथिन जे क्यो किछु कहत, कतबो बेसी टाका देत, मुदा हम अपन बातसँ लौटि नहि सकैत छी । तोँ आइए चलह आ हमरासँ रजिष्ट्री करा लैह ।

कन्तू भाइक एहि वचनक दृढ़ताक कारणेँ कूशे कामतिकेँ हिनका प्रति अपार श्रद्धा भऽ गेलैक । ओ मनहि मन सोचि गेल– जँ कैलूकेँ लिखि दितथिन तँ हिनका पैंतीस टाका आरो होइतनि, जँ हमरा लेबाक खाँहिस होइत तँ डाक बढ़ऽ पड़ैत आ से

आङनवालीसँ झगड़ाकऽ कन्तू बाबू हमरे जमीन लिखऽ चाहैत छथि, सोआइत ई धरती एखन धरि बाँचल अछि, एहन-एहन धर्मात्मा जें एखन धरि एहि दुनियाँमे छथि, तें संसार अछि, ने तँ ततेक पाप लोक करैत अछि जे धरती रसातल चल गेल रहितथि ।

एही सोचबाक प्रसंग कूशे कामति सोचि लेलक जे एकर बदला दोसर तरहें अवस्से चुकयबाक चाही । ओकरा फूरि गेलैक जे कण्टीर पुरोहितक जजमनिकासँ बाहर जँ हिनका ओहि पानी लऽ चली तँ अपनहुँ किछु आमद होयत आ हिनको आमदनी करा देबनि ।

जखन कन्तू भाइक सोझाँ ई प्रस्ताव रखलकनि तखन तँ ई सात हाथ कूदि उठलाह । दूनू गोटे गामसँ चलि देलनि । खजौली होइत रजिस्ट्री करैत जयनगर उतरलाह आ ओम्हरेसँ खाबा पार भऽ थारुसभक गाम पहुँलाह । कूशे कामतिकें ओ सब चिन्हिते छलैक, मुदा एहि बेर पुरोहितकें अनचिन्हार देखि एक टा बुढ़बा बाजि उठलैक– 'आरौ छिनरीके, ई तऽ दोसर पुरहीत छियइ ।' ई अपशब्द सुनिते कन्तू भाइक कान ठाढ़ भेलनि, कहलथिन– 'हौ कूशे, ई तँ गारि पढ़ैत अछि हौ !'

कूशे कामति आश्‍वासन दैत कहलकनि– ई गारि नहि पढ़ेत अछि, ई एकरासभक लबधि थिकैक, एकरा कान-बात नहि धरब ।

थारुसबकें अछिन्नरे गाय । से, गाइक दूध आ गाइक घिउसँ बूझू स्नाने करबऽ लगलनि । जखन कूशे कामति कहलकै जे ई पुरहित नहि, गुरु थिकाह ।

ओ सब गुरुक अर्थ बुझैत छैक जे यन्त्र-मन्त्र जनैत अछि, झाड़-फूक करैत अछि, फूल-विभूतिसँ घर-द्वार, नेना-भुटका, माल-जालसभक रक्षा करैत अछि से थिक गुरु ।

कूशे कामति सिखबैत गेलनि– 'जतेक टोमन-टामन करब, ई सब ततेक पैघ गुनी मानत आ जँ मन्त्र लऽ लेलक तँ बूझू जे जजमनिका जागि गेल ।'

कन्तू भाइ जे पूजा-पाठक टोप-टहंकार आरम्भ कयलनि तँ ओ सब दंग रहि गेल । परोपट्टामे गर्द पड़ि गेलै जे बड़ी भारी गुरु अयलैक अछि । ई बैसथि पूजापर आ चारू भाग तमसगीरक टाट लागि जाय । ई एक टाङपर ठाढ़ भऽ जप करऽ लागथि तँ ओ सब अपनामे गप्प करऽ लागय– 'कतेक गुरु आ कतेक पुरहीत देखली, महज ई गुरु छिनरी के असलकी छिऔक । एक टङरीपर ठड़ा छौक आ एको मसुरी भरि ने डोलैत छौक ।' कन्तू भाइ नाक दाबिकऽ प्राणायामक अभिनय करथि तँ ओ सब विस्फारित नेत्रें एक दोसर दिस तकैत । अन्तमे मन्त्र लेनिहारक ढेबाहि लागि गेलनि ।

कूशे कामति टहल-टिकोरा करनि । अपने दुनू साँझक सत्ती एके साँझ रान्हिकऽ चारि बजेमे भोजन नहि, भक्षण करथि आ साँझू पहर जोर-जोरसँ अमरकोषक स्वर्ग वर्ग जे नेनामे अभ्यास कयने रहथि तकर पाठ करथि ।

पहिल दिन जे मन्त्र देबऽ गेलथिन तँ घरमे एक कोनमे सीकपर बेस पाकल पैघ कदीमा छलैक टाङल । कन्तू भाइ कदीमाक प्रेमी, कारण तरकारीमे जेठरैयति तँ कदीमे होइत अछि । ओकर लोभ जोर कयलकनि तँ दक्षिणा लेबाक काल कहि देलथिन– 'कदीमा लऽकऽ स्वाच्छन्न ।'

एक जोड़ धोती, एक टा कम्मल, एक आ बाछी, दस टाका नगद, पाँच पसेरी चाउर, एक पसेरी घिउ यैह सब एक मन्त्रक पाँछा दक्षिणा भेटल करनि, ताहिपरसँ एक कदीमा । अढ़ाय मास जे रहलाह से अपने लाल बुन्द भइये गेल रहथि । बीस गोटे एहि यात्रामे मन्त्र लेलकनि ।

जखन कन्तू भाइ घुरलाह तँ एक टा बैलगाड़ीपर बोरामे चाउर, कंटरमे घिउ, मोटामे कपड़ा ओ कम्मल आ सबसँ ऊपर बीस गोट कदीमा लदने जजमान संग अयलनि ।

भौजी हमर कूदि उठलीह, टोल भरि बेनमे कदीमा परसल गेल । सबसँ बड़का कदीमा जे भौजी सीकपरकऽ टाङऽ लगलीह तँ कन्तू भाइ टीप देलथिन– 'गंगास्नान नीक की कदीमा ?' भौजीकेँ एकर दोसरे अर्थ लगलनि ओ झट दऽ अपन पेट परक सरकल नूआकेँ ससारलनि ।

कूशे कामति जखन कदीमाक रहस्योद्घाटन कयलक तँ कन्तू भाइ कदीमा गुरु नामेँ प्रसिद्ध भऽ गेलाह ।

[मिथिला मिहिर, 20 सितंबर 1960]





कन्तू भाइ आ कुसिआर

आइ साँझखन हाटपरसँ गामपर आपस भेलहुँ तँ नवका पोखरिक भगवानक मन्दिरपर लोकके‌ँ थहाथहि करैत देखलिऐक । हाथ दुनू बाझल छल, आन दिन तँ प्राय: हमही नहि, गाम भरिक लोक कतहु बाहरसँ आयल तँ गामक बाहरे ई पोखरि भेटैत छैक ते‌ँ एहीमे हाथ-पयर धोलक, भगवानक दर्शन कऽ चरणोदक लेलक तखन टोल दिस डेग बढ़ौलक, मुदा आइ आगाँ-आगाँ कंटीर, नवका जोड़ा बच्छा जे किनने छलहुँ, तकरा हँकने जाइत छलाह आ पाछाँ-पाछाँ हम हाटपरसँ जे तरकारी, गुड़, कड़ू तेल, नोन, मसाला सभ किनने छलहुँ से लेने चल अबैत छलहुँ; ताहिपरसँ उसरैत हाटमे कपार जोरगर छल ते‌ँ एक फड़ी रोहु पक्की अढ़ाय सेर चारिए टाकामे भेटि गेल छल, सेहो छल । सोचलहुँ, पहिने गामपरसँ सभ वस्तु रखनहि आबी तखन मन्दिरपर बैसी, मुदा एतेक लोकके‌ँ जमा देखि पहिने आदंक भेल जे फेर कोनो उधबा तँ ने गाममे उठल ।

हमर गाम जे अछि से वीर बंकड़ा । एतनीओ टा बातपर जे ओहिठाम धुकारी उठैत छैक ताहि लपटमे परोपट्टाक गाम झरकि जाइत अछि । एक बेर बीस हजार रुपैया खर्च भऽ गेलैक एही बातपर जे एकटा कुलीन ब्राह्मणक ऐंठारपर ककरो पेयाजुक खुँइचा देखना गेलनि । भऽ सकैत छैक कुजड़नीसँ तरकारीक लेन-देन काल सेहो गोटेक खुँइचा उड़ि गेल होइक, मुदा सभ लोक एहिपर विश्वास करक हेतु प्रस्तुत नहि भेल, जखन गौ‌ँआरे भोज भेलैक तँ एक भागसँ प्रस्ताव अयलैक जे फल्लाँ बाबूक आङनमे पेयाजुक खर्च छनि ते‌ँ समस्त गौ‌ँआक पंक्तिमे नोंत दऽकऽ हुनका यदि नहि बैसऽ देथिन तखने नोंत मानल जाइनि । किछु गोटे एहि गोलमे, किछु गोटे ओहि गोलमे आ अन्तमे तेहन पैघ गोलैसी भेलैक जे बीस हजार मोकदमाय स्वाहा भऽ गेलैक ।

अस्तु, ओही थहाथही लोकमेसँ एक गोटाके‌ँ कातेमे बजाकऽ पुछलिऐक जे ई हुमेला कथीक थिकैक ? ओ कहलक- आहि वा... आइ कन्तू भाइ ननकिरवा क्योटके‌ँ बिनु अपराधे‌ँ मारलथिन अछि तकरे पंचैती करबाबऽ लेल ओ सभके‌ँ बजौलकैक अछि ।

हमरो उत्सुकता भेल जे कन्तू भाइ सन हँसमुख, विनोदी, सहनशील ओ मिलनसार लोक मारि बैसलथिन तँ अवश्ये ननकिरवा कोनो तेहन अपराध कयने होयतनि। कन्तू भाइ तँ अपने झगड़ाक भीड़ गेनिहार लोक नहि छथि। चटपट गामपर गेलहुँ आ फूसि कथी लेल कहू, साँझखन कऽ एक सुपारी भरिकऽ महादेवबाबाक बूटी दऽ दैत छिऐक तँ भरि दिनुक ठेहीकेँ ओ सोझे बन्दूकक गोलीक काज करैत छनि। जोड़ा बच्छाकेँ पहिने ड्योढ़ीक टाट लग निहुँछल गेलैक तखन ओकरा खुट्टापर बान्हि एक पथिया घास आगाँ कऽ देलिऐक आ कंटीरोक भानस आइ अपने आङनमे होइनि, कारण भरि बाट हुनक आँखि ओही रोहुपर लागल छलनि तेँ हुनका बिनु खोऔने ओ माछ, सभक हेतु माहुर होइत। अपने गोली खाकऽ लोटा लऽ नवका पोखरि दिस चलि देलहुँ। मोनमे सोचलहुँ जे ओम्हरे बाह्यभूमिसँ भऽ आयब आ कनेक कन्तू भाइक पंचैती सेहो देखबनि।

कंटीर सेहो अपना आङनमे अपन भानस बन्द करबैत हमरा संगहि चललाह। भगवानक मन्दिरपर लोक तँ बहुत छल, किन्तु आन दिनुक पंचैतीमे जे रीसा-रीसी, कूदफान, गरजागरजी होइत छलैक से आइ नहि किछु देखना गेल। बाह्यभूमिसँ आबि हाथ लोटा मटियाकऽ हमहूँ कंटीरक संग मन्दिरपर जाकऽ बैसलहुँ। नजरि खिड़ौलहुँ जे कतहु कन्तू भाइ देखि पड़थि, से कतहु देखि नहि पड़लाह।

वातवरण एकदम शान्त-गंभीर; जेना, बिहाड़िक अयबासँ पूर्व रहैत अछि। एहि गम्भीरताकेँ देखि आरो आशंका होअऽ लागल जे हो ने हो, कोनो पैघ घटना भेलैक अछि।

एक भागमे टोलक किछु निम्न वर्गीयसबकेँ गोठ बनाकऽबैसल देखलिऐक। बड़द हट्टाक बड़दक दाम आ शुद्धक माथे वरसभक दामक चर्चा गप्पक विषय बनल छल। फल्लाँ भाइक सरबेटाकेँ उतरवारि गामवला एतेक हजार दैत छनि तँ चिल्लाँ भाइक सद्बुबेटाकेँ पछबारि गामबला एतेक गछिकऽ पाछाँ एना औंठा देखा देलकनि। कहबाक आशय ई जे ने कतहु कन्तू भाइक पता ने कतहु हुनका झगड़ाक खोरचाल। भेल जे बूझि पड़ैत अछि भोलबा हमरा ठकि लेलक। कन्तू भाइपर कतहु पंचैती होइनि ? ओ आइ धरि एहन काज करबे ने कयलनि अछि तखन आइ किएक करताह ?

तावत पुजेगरीजी कहलथिन- तँ तावत भगवानक आरती बेर उनहल जाइत छनि से किएक ने सम्पन्न कऽ ली। सभ कहलकनि- बेस, बेस; कि चुल्हबा आबिकऽ फौदार झा सरपंचकेँ कहलकनि जे कन्तू बाबू कहलनि- चल, चल, हमरा ठकऽ अयलेँ हेँ ? हम अपन बेरपर भगवानक मन्दिरपर जाइते छी से जयबे करब।

मन्दिरपर आरती शुरू भेलैक, घड़ी-घंटाक शब्द सुनैत देरी कन्तू भाइ ससरलाह मन्दिर दिस। आरती भेल, स्तुति पाठ भेल, चरणोदक बाँटल गेल। आन दिन सब लोक अपन-अपन बाट धरैत छल आ आइ फेर सब बैसि गेल तँ कन्तू भाइ कहलथिन- आइ, किछु प्रसादोक जोगाड़ छैक जे सभ फेर आसन जमबैत छिऐक ?

फौदार झा कहलथिन– अहाँकेँ तखनसँ समाद दैत छलहुँ तँ किएक ने अबैत छलहुँ ?

कन्तू भाइ– हँऽ औ सरपंच, चुल्हबा गेल छल, कहऽ लागल जे सरपंच बजबैत छथि, अहाँपर पंचैती होयत । हम दबाड़लहुँ छौंड़ाकेँ जे ठकऽ लेल एक हमहीं भेटैत छियनि । कहू तँ, हमरापर पंचैती कथीक होयत ?

फौदार झा– ननकिरबा क्योट अहाँपर नालिसी कयलक अछि । साँझसँ अहींक बाट तकैत हम सभ बैसल छी आ अहाँ अबिते ने छलिऐक ।

कन्तू भाइ हँसैत कहलथिन– ननकिरबाक नानीक सगाइ करा दैत छिऐक । ओ हमरापर पंचैती बैसाओत से की ओकरा बरियातीमे नहि लऽ जयबैक ?

फौदार झा ननकिरबाकेँ पुछलथिन– बाज रौ ननकिरबा ! तोरा कन्तू भाइक विरुद्ध की कहबाक छौक ?

ननकिरबा– सरकार ! आइ हम धरमबान्हक नीचाँमे जाफरी बनाबक लेल बाँस फाड़ेत छलहुँ आ कन्तू काका बान्ह धयने चल अबैत छलाह । धयले सटका हमरा पीठपर मारलनि । से सरकार सभ पुछियनु जे हम हिनकर कोन अपराध कयने छलियनि ?

कन्तू भाइ सन्न रहि गेलाह ।

फौदार झा पुछलथिन– ननकिरबा अहाँक कोनो अपराध कयने छल ?

–'कहू ई एहन सद अछि, ककरो अपराध नहि करैत छैक, तखन हमर अपराध किएक करत ।' कन्तू भाइ उत्तर देलथिन ।

फौदार झा ननकिरबासँ पुछलथिन– तोरा कन्तू भाइ कोन ठाम मारलथुन ?

ननकिरबा पीठ उघाड़िकऽ सभकेँ देखा देलकनि । ओकर पीठ दू दालि भऽकऽ फूटल छलैक । कन्तू भाइ अपनहुँ आँखि निड़ारिकऽ देखलथिन तँ आश्चर्यचकित भऽ गेलाह ।

ओ हाथ जोड़िकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह आ कहऽ लगलथिन– औ पंचलोकनि, जखन एकर पीठ देखलिऐक अछि, तखनसँ हम अपने अपनाकेँ महाअपराधी मानि रहल छी । मुदा असल जे बात छलैक से आब अहाँ लोकनिक सोझाँ सत्य बात हम कहैत छी । आब अहाँ लोकनि जे दण्ड देब से हम शिरोधार्य करब ।

सभ उत्सुकतापूर्वक हुनका दिस ताकऽ लगलनि । कन्तू भाइ कहऽ लगलथिन– असल बात भेलैक जे हम आइ रौआहीसँ धीया-पूता लेल चारि टोनी कुसिआर लेने चल अबैत छलहुँ आ ननकिरबा धरमबान्हक नीचामे बाँस फाड़ैत छल । एकर पीठ छलैक

एकदम धोबियाक पाट जकाँ चौरस, से देखि हमरा भेल जे एहन चौरस पीठपर सटका केहन सटीक बैसतैक । काँखतऽर कुसिआर छल । भगवान सोझाँमे छथि जे फूसि कहैत होइ । हमरा भेल जे कुसिआर तँ मधुर होइत छैक, एहिसँ चोट नहिएँ लगतैक, कोन क्षति जे सटका सटीक बैसतैक की नहि से जाँचि लेल जाय । गुरुक सप्पत खाकऽ कहैत छी, जँ ई बूझि पड़ैत जे कुसिआर सन मधुर वस्तुसँ चोटो लागि सकैत छैक तँ एहन काज हम किएक करितहुँ ?

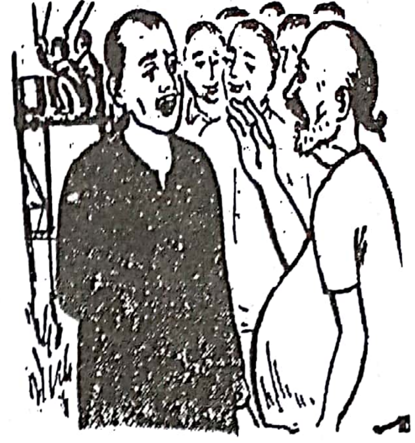
मुदा आब हमरा एहिमे सन्देह नहि रहि गेल जे कुसिआरोसँ चोट लगैत छैक से यदि नहि तँ भला बेचाराक पीठ एना कोना फूटि जइतैक । आब एहि अपराधमे ननकिरबा जे जड़ीमाना करय, जे कहय से हम तैयार छी । एतबा कहैत-कहैत कन्तू भाइ ततेक भाव-विह्वल भऽ गेलाह जे लोकके बूझि पड़लैक आब हिनका आँखिसँ नोर खसि पड़तनि ।

बहुत लोक तँ हमरे जकाँ एही उत्सुकतासँ आयल छल जे कन्तू भाइपर आइ पंचैती बैसलनि, ई एक अद्‌भुत घटना हमरा गामक इतिहासमे भेल । कन्तू भाइक ई सफाइ सुनि जतेक लोक रहय सभकेँ हँसी लागि गेलैक । हुनक एहि सुधपनापर ननकिरबोक मुँहपर मुसकी आबि गेलैक । फौदार झा ननकिरबा दिस तकलथिन तँ ओ मुसकुराइत कहलकनि जे कन्तू काका एहि अपराधक जड़ीमानामे काल्हि साँझखन कुसिआरक रस एक-एक गिलासकऽ सभकेँ पियबथुन ।

काल्हि सबेर-सकाल गोली दऽ सभकेँ मन्दिरपर चलक चाही । एहि निर्णयक संग पंचैती उठि गेल ।

[मिथिला मिहिर, 10 जून 1962]





कन्तू भाइ आ केरा

कन्तलाल झा, आ सन्तलाल झा नाम सुनिकऽ साधारण लोककेँ बुझाइत छैक जे दुनू सहोदरे होयताह जेना मैथिलीक सांस्कृतिक मंच पर रवीन्द्र आ महेन्द्र । एक तबला दोसर डुग्गी, एकक बिना दोसर प्रभाहीन, अकाजक । ओना चतुर ठेकैता विशेष स्थिति उत्पन्न भेला पर केवल डुग्गीसँ जेना-तेना ताल-मात्राक निर्वाह कऽ लैत अछि ।

कन्तलाल सन्तलाल एक गामक निवासी । सन्तलाल वयसमे कन्तलालसँ गोटेक वर्षक छोट । ओना साक्षात् रक्तक सम्बन्ध दूनूमे बहुत दूरक, तथापि गौँआरे रहलाक कारणेँ दूर सम्बन्ध होइतो अपेक्षितारेमे दूरी नहि, मुदा सन्तलालकेँ कन्तलालक बापेसँ भैयारी । माने कन्तलाल जेठ होइतो सन्तलालक भातिज । जेठ भऽ कऽ छोटकेँ काका कहबामे अनकट्ठल लगितनि तेँ दूनू अपनामे भजार लगौने रहथि ।

कन्तलालक घरक पछुआड़मे बेस पैघ पोखरि । दलान पूब मुहेँ आ पछुआड़मे पोखरिक कछेड़ धरि बेस ऐल-फैल बाड़ी । बंगालीक बाड़ी नहि, मैथिलक बाड़ी, जाहिमे दस गाछ केरा, गोटेको लताम, सरिफ्फा, दाड़िमक गाछ, किछु ओल, दू, चारि खम्हारु, तेकुनाक लत्ती, तिलकोड़ इत्यादिक रहब स्वाभाविक । कन्तलालक घर पुवरिया मोहारपर आ सन्तलालक घर पछवरिया मोहारपर तेँ हिनकर दलानक आगाँ पोखरि । दूनू भजारमे घुट्ठा-सोहार । दूनू कन्तू आ सन्तू नामसँ समाजमे संबोधित होइत छलाह ।

सन्तूक ममियौतक एक मसियौतकेँ कन्यादान छलनि । कन्तूक ममियौतक मसियौतकेँ बालकक विवाह कर्त्तव्य छलनि । तेहल्ला द्वारा एहि प्रसंग सन्तूक ममियौतक मसियौत, जनिक नाम छलनि घूरन, कथाक प्रस्ताव कन्तूक ममियौतक मसियौतक ओहिठाम जनिक नाम रहनि पूर्णेन्दु, मुदा लोक पूरन नामेँ संबोधित करनि, उपस्थित करौलनि । जहिना कन्यागतकेँ बालकक रूप-गुणक प्रसंग बुझबाक उत्सुकता रहैत छनि तहिना वरागतकेँ सेहो कन्याक प्रसंग । दूनू दिसकेँ विश्वस्त गुप्तचर चाही जे वास्तविकताक पता लगा सकय ।

कन्यागतकेँ चिन्ता रहैत छैक जे कन्या अनस्थरिमे ने पड़ि जाय । केवल धने-सम्पत्ति रहलासँ सुख नहि भेटि जाइत छैक । सामान्यो आस्था-पातक लोक जँ विवेकशील रहल तँ कन्याकेँ सुख होइत छैक आ धनधान्यसँ सम्पन्न रहितो अविवेकी, चरित्रहीन पियक्कड़क पालाँ पड़ि गेलि तँ जीवन भरि हकन्न कनैत रहलि । तहिना बालककेँ सेहो पूर्ण रूपवतीसँ संग भेलैक, मुदा स्वभावसँ कर्कशा रहौक तँ परिवारकेँ छिन्न-भिन्न कऽ दैत छैक । पुरुषकेँ सेहो नारकीय जीवन बिताबऽ पड़ैत छैक ।

कथा उपस्थापित भेलापर पूरन कन्याक प्रसंग निस्तुकी सबपता लगयबाक हेतु जोगाड़ धराबऽ लगलाह आ घूरन बालकक । गुत्थी सोझरयबाक क्रममे जखन पता लगलनि जे कन्यागतक मसियौतक पिसियौत ओही गामक थिकथिन तहिना वरागतक मसियौतक पिसियौत सेहो । तखन दूनू पक्ष अपना-अपना पिसियौत सँ सम्पर्क कयलनि । वरागतक प्रस्ताव जे हमरा दिससँ दू गोटे कन्या निरीक्षणमे जयताह । यदि मनोनुकूल रिपोर्ट भेटल तँ लेन-देनक कोनो तेहन समस्या नहि रहत । हमरा विवाहक रातिक खर्च मात्र चाही । कन्यागत अपना कन्याकेँ जे किछु जेवर-जेवरात देबऽ चाहथिन से हमरा पठा देताह । ओ हमरे हाथेँ कन्याकेँ पड़तनि । साल भरिक पावनि-तिहार हम अपने दिससँ करब । एक तरहेँ ई कथा आदर्श होयत । बरियाती सेहो 20-25 सँ अधिक नहि, सेहो एक संझू ।

एहि काजक सम्पादन लै सन्तू आ कन्तू यैह दूनू गोटे उपयुक्त व्यक्ति मानल गेलाह । घूरन कहलथिन जे जखन वरागत कन्तलालझाक अपने ममियौतक मसियौत थिकथिन तखन तँ गतातेक लोक भेलाह, तेँ कन्या निरीक्षणमे निधोख आबि सकैत छथि । साँचमे आँच की ? हमर बेटी कोनो कनाहि-कोतरि अथवा कुरूप अछि ? कन्या तँ कन्ये अछि, साक्षात लक्ष्मी स्वरूपा, जाहिघरमे जायत तकरा स्वर्ग बना देतै ।

दिन निर्धारित भेल । दूनू भजार कन्या-निरीक्षणमे जयताह तँ बिना पाग पहिरने जायब उचित नहि होयतनि । कतबो जमाना फर्दवाल भऽ गेलैक अछि, अवसर-अवसरक बात अपन भिन्न होइत छैक, मुदा कन्तूक घरमे तँ मैल चिकाइटे रहनु, एकटा पाग कोठीक कान्ह पर छनि, सन्तूकेँ सेहो नहि । आब प्रश्न उठल जे पागक कोन उपाय हो । ई तारतम्य करिते छलाह ता एक टा कौलेजिया छौंड़ा कोम्हरोसँ आयल, हिनकर चिन्ता जानिकऽ कहलकनि- पागक कोन कमी छैक । नवटोलिया चल जाउ, ओ जे भैरवनाथ झा 'भुम्हुर' कविजी छथि, हुनका घरमे एक-दू टा पागकेँ के कहय, दस-बीस टा ताकब तँ भेटि जायत ।

सन्तू पुछलथिन- कवि भुम्हूरजी पागक कारवार करैत छथि ? विद्यार्थी कहलकनि- कारवार तँ नहि करैत छथि, मुदा आइ काल्हि कवि सब जे कविता पाठ करऽ जाइत छथि तँ ओहि ठाम सम्मान कयल जाइत छनि आ ताहि सम्मानमे सामान रहैत

छनि एक टा माला एकटा तौनी आ एकटा कूटक बनल पाग । एक लपकन चल जाउ । हमरा तँ लगैत अछि जे सौराठ सभाक प्रकरणमे कविजी रहिका चौक अथवा पोखरौनीक मोड़ पर सम्मानमे भेटल सब पाग लऽकऽ बैसि जाथि तँ सय–दू सय बेचि कऽ आनि सकैत छथि ।

सन्तू तकलथिन कन्तू दिस । कन्तू कहलथिन– चलह दूनू भजार, ओना हमरा घरमे एकटा अछि, काज चला सकैत छी, कने मैल भऽ गेल छैक आ पागक पेंचकें मुसरी कने कुतरि देने छैक । नवटोलिया छैके कते दूर, दू ने अढ़ाय कीलोमीटर होयतैक । कुकुरक पैरें जायब आ विलाड़िक पैरें दूनू भजार घूरि आयब, अयलाक बादे स्नान –ध्यान करब । दूनू भजार नवटोलिया गेलाह । कविजीकें पाग दऽ कहलथिन जे एक कुटमैतीमे जयबाक अछि । घुरलापर अनामति पाग पहुँचा देब । कविजी हुलसिकऽ आङन गेलाह, दू टा टेढ़बकुली पाग आनि, हाथकऽ दैत कहलथिन– घुरयबाक काज नहि, राखिए लेब, एहन–एहन बेर पर काज अबैत रहत ।

एहि तरहें दूनू भजार पूरा तैयारी कऽ निर्धारित दिनमे कन्या–निरीक्षणमे पहुँचलाह । कन्यागत बड़ आदर भावसँ स्वागत सत्कार कयलथिन । सबसँ पहिने शर्बत अयलनि, पान–सुपारी अयलनि । तकर बाद वरागतक मन्तव्य सुना देलथिन । आदर्शक नाम सुनि कन्यागत आरो गद्‌गद भऽ उठलाह । कथा एक तरहें स्थिर जकाँ भऽ गेलनि । तकर बाद भोजनक आग्रह भेलनि । कन्तू ताहिपर कहऽ लगलथिन जे सेहो सब होयबे करतैक, पहिने सम्बन्ध तँ भऽ जाय ।

ताहिपर घूरन बजलाह– की एखन हमरा अहाँकें सम्बन्ध नहि अछि ? जखन हमरा मसियौतक अहाँ साक्षात पिसियौत छियनि तँ सम्बन्ध कोना नहि भेल ? हँऽ एतबा हम अवश्य कयलहुँ अछि जे सिद्धक व्यवस्था नहि कऽ चूड़ा–नोनक प्रबन्ध कयने छी । आङनमे साफ–साफ कहनहु नहि छिऐ । भोजनक काल नोन लऽकऽ जे आओत तकरे कन्यादान करबाक अछि । एकदम स्वाभाविक रूपमे कन्याकें देखि लेबै, किछु पुछबाक हो तँ पूछि लेबै' । हम ककरो आभास पर्यन्त नहि लागऽ देने छिऐ' जे अहाँ लोकनि कन्या निरीक्षणमे आयल छी ।

ऊपरसँ नाकर–नूकर करैत भीतरसँ मनहिमन प्रसन्न होइत दूनू गोटे भोजनक पात पर बैसलाह । चूड़ा–दही–अमौट आ दगायल खुइँचावला बड़हरीचम्पा केरा गमगम करैत, ताहिपरसँ मेरिचाइक निमकी, आमक कुच्च अँचार परसल गेलनि । घूरन तखन अपन कन्याकें नोन आनऽ कहलथिन । प्रज्ञा नोन लऽकऽ आइलि तँ कन्तू भाइ पूछि देलथिन– की नाँव थीक । कन्या बाजलि–

'प्रज्ञा ।'

'प्रज्ञा माने की होइ छै' ?

'प्रजा माने बुद्धि ।'

'किछु पढ़ितो छी ?'

'हँऽ मैट्रिकक परीक्षा देने छलहुँ, फस्ट डिवीजन भेल ।

''वाह, वाह, बड़ सुन्दर । आगाँ पढ़बै ?'

'जेहन कर्म-भाग्यमे हैत, अपना तँ इच्छा अछि । एतबा कहैत प्रज्ञा चल गेलि ।'

घूरन उचिती करैत कहलथिन– हम चीनी एखन नहि देलहुँ अछि से एहि द्वारेँ जे पहिने ई केरा खा लियौ तखन जँ चीनीक प्रयोजन हो तँ हम एतहि रखने छी । एतबा कहैत पाछूमे राखल मटकूड़ी आगाँ कऽ रखलनि । जखन दूनू गोटे उत्सुकतासँ केरा खयलनि तँ चकित रहि गेलाह । नहि नहि कहिते रहलथिन, तावत घूरन एक-एक लप चीनी दऽ देलथिन । अगन्न भऽ दूनू भजार भोजन कयलनि । पान सुपारी भेलाक बाद सन्तू कहलथिन– अहाँ अपन परिचय लिखि कऽ दऽ दिअऽ जे अधिकार तका लेल जाय ।

घूरन तुरन्त लाल कलम आ कागत अनलनि, अपन परिचय लिखिकऽ सन्तूक हाथ कऽ देलथिन । सन्तू पढ़ऽ लगलाह– आहि रे बा ! अहूँ काश्यप गोत्रीए छी औ !

घूरन कहलथिन– से किएक ?

सन्तूक उत्तर छलनि– सब मेहनति बेकार गेल । वरागत अहाँक समगोत्रीए थिकाह । अहाँक ई खर्च सेहो मङनीमे गेल ।

कन्तू बजलाह– हमरा दूनू भजारकेँ हिनका बाड़ीक ई बड़हरीचम्पा जे कपारमे लिखल छल, भगवान सभक जोगाड़ धरौने रहैत छथिन ने ।

सन्तू बजलाह– हँऽ से सत्ते । एक टा बात कहू ।

घूरन– कहू ने ।

सन्तू– एतेक टा वयस बीतल, एहन मधुर आ एहन सुगंधित केरा आइ धरि नहि खयने छलहुँ । मन भेल जे एकटा पौछ भेटैत तँ अपना बाड़ीमे लगबितहुँ ।

घूरन बजलाह– डाक कहि गेल छथि–

''केरा रोपी चारि विचारि, भादब, भदवा, शी मी बारि''

मास फागुन, भदवा नहि छै आ आइ चौठ थिकै तेँ आइए पौछ लेनहि जाउ ।

सम्बन्ध तँ नहिए भेल, कमसँ कम एहि लऽकऽ हम सब दिन मन रहब । घूरन उठलाह बाड़ी जाकऽ डाँड़ भरिक एक टा पौछ उखाड़िकऽ आनि देलथिन । दूनू भजार ढेकरैत विदा भऽ गेलाह । आयल गप्प, गेल गप्प बाटहिं लियल गप्प, चिह्न कहू स्मारक कहू, घूरनसँ संबंध सूत्र कहू, से रहल ई केराक पौछ । बेराबरी फेराफेरी करैत दूनू भजार अनलनि ।

सन्तू ओरिया कऽ बाड़ीमे रोपलनि, लागि गेलनि। वैशाखक अन्तमे ओहिमे कोसा बहरयलै, भरल पूरल 14 हत्थाक घौड़ बहरयलै । भादब अबैत-अबैत खूब जोआ गलैक । एक दिन ई खुशखबरी सन्तू भजारकेँ सुनौलथिन । कन्तू भाइ उत्सुकतावश घौड़केँ देखऽ गेलाह । घौड़क लम्बाइ आ छिम्मड़िक मोटाइ देखिकऽ चकित रहि गेलाह । अँटकरसँ उपरका हत्थाक छिम्मड़ि गनलनि एक हत्थामे 16 छिम्मड़ि । हत्था सेहो गनलनि 14 हत्था । 16केँ 14सँ गुणा कयलनि चौदह गरहन चौवन्ना सय... चौदह सोड़हन दू सय चौबीस । कहलथिन– भजार ! एहि घौड़मे हमरो हिस्सा बऽ बराबरि आधा-आधी ।

सन्तू कूदि उठलाह आ रौ मर्दे ! तोहर हिस्सा कथी साती ?

कन्तू भाइ बजलाह– हमरे ममियौतक मसियौत द्वारा पठाओल गेल छलाह कन्या निरीक्षणमे ।

सन्तू– हम तँ अपन ममियौतक मसियौतक ओतऽ गेल रही आ पौछ लै हमही मुँह फोलने रही ।

कन्तू– आधा बाट तँ हमहूँ पौछ उघने रही ।

सन्तू– तकर मेहनतानामे एक हत्था आ भजार थिकाह तेँ एक हत्था आरो । बस, एहिसँ अधिक लोभ नहि देखाबह ।

कन्तू कहलथिन– आब पूरा जोआ गेलह, काटि लैह ।

सन्तू– एकरा चौठचन्द्र लै रखने छी । एखन चौठचन्द्रकेँ पन्द्रह-सोड़ह दिन छैक तेँ अगिला सप्ताहमे ।

कन्तू– आ जँ एहि बीचमे क्यौ काटि कऽ लऽ जाह ?

सन्तू– काटिकऽ कोन बाटेँ लऽ जायत ? आगाँ आङने अछि, उत्तर आ दच्छिन काँटसँ सकबेधल अछि, पछबारी कात पोखरिए छैक ।

कन्तू– बेस, हम चेता देलियह अछि । एकर खुइँचा दगा जाइत छै तैयो केरा नहि सड़ैत छैक तेँ काटि लेबह ताहीमे कल्याण छह । नहि तँ पाछाँ हाथ मलैत रहि जयबह ।

सन्तू– ककर दिन थिकै जे हमरा बाड़ीमे पैर राखत । हम सोझे मूड़ी छोपि लेबै ।

कन्तू– बेस, कहने जाइत छियह, सावधान रहिहऽ, बहुतो गोटेक नजरि पर घौड़ चढ़ि गेलह अछि । एतबा कहि कन्तू भाइ चल गेलाह ।

चारि दिनक बाद तीन बजे रातिमे कन्तू भाइ उठलाह । एकटा पघरिया हाँसूकेँ फाँड़ बान्हिकऽ डाँडमे खोँसलनि, अंगपोछासँ माथकेँ बन्हलनि आ हरलदहा डोरी डाँड़मे लेपटा लेलनि चुप्पहि पोखरिमे धसि गेलाह । हेलैत हेलैत पहुँचलाह सन्तूक बाड़ी लग । गओँसँ हरलदहाकेँ केरा गाछमे बन्हलनि, पघरिया हाँसूसँ गाछक अधगेंड़ पर तेहन समधानि कऽ छओ मारलथिन जे आधा थम्ह कटि गेलनि, दोसर छओमे दू तेहाइ कटि गेलनि । एक हाथेँ डोरीकेँ घिचलनि आ दोसर हाथेँ झुकैत गाछकेँ उपरे टेकने रहलाहजे हड़हड़ाय नहि । घौड़केँ काटि हरलदहाक एक छोर डाँड़मे दोसर छोड़ घौड़मे बान्हि कान्हपर उठा पानिमे पैसि गेलाह । डाँड़ भरिक घौड़ बड़ भारी बूझि पड़लनि तैयो जेना तेना एक हाथेँ पानिकेँ टारैत, हेलैत अपन दलान लग पहुँचि गेलाह । एतबामे साढ़े चारि बाजि गेलनि ।

कन्तू भाइ अपना दलान लग पोखरिसँ बहराइत छथि आ अकस्मात एक कोनसँ बसातक तेहन झोंक उठलैक जे उपर लटकल कटलाहा केरा थम्ह हड़हड़ा कऽ खसलै । आबाज सुनिते देरी आँखि मिड़िते बाड़ी दिस दौड़लाह । झलफल छलैहे तेँ बेटाकेँ टॉर्च लऽकऽ अयबा लै गर्द करऽ लगलथिन । से आबाज सुनि एहि पारसँ कन्तू भाइ हाक पाड़ैत कहलथिन– भजार, हओ भजाऽऽऽर ! गारि नहि पढ़िहक । तोहर हिस्सा पाँच हत्था, आबि कऽ लऽ जाह । चौठचन्द्र लै निहुँछल सौंसे घौड़ हम नहि ने राखि लेबह ।

सन्तू लत्ते पत्ते दौड़ल अयलाह । कन्तू भाइ बाँट-बखराक सब हिसाब जोड़ैत कहलथिन– चौठचन्द्र तोरे टा नहि होइत छह । टोलमे सबकेँ होइत छैक । तेँ ऊपर चारि हत्था हमर, बीचसँ पाँच हत्था तोहर आ निचला पाँच हत्यामे चारि-छओ छिम्मड़ि सौंसे टोलबैयाकेँ । बाँटि-कूटि खाइ राजाक घर जाइ'' ई गप्प होइत होइत अड़ोस-पड़ोसक पाँच-सात गोटे जूमि गेल छलाह । तनिका सब दिस तकैत कन्तू भाइ कहलथिन– अहीं लोकनि कहैत जाउ कोनो बेजाय कहैत छियनि ?

सब समर्थन करैत कहि उठलथिन– सर्वथा उचित ।

[अक्टूबर 2006]





कन्तू भाइ आ कोजागरा

हमर कन्तू भाइ जखन कलकत्तामे कन्डक्टरक काज करैत रहथि तखन देशसँ गेल निम्न वर्गसँ लऽ बाबू भैयाक घरक फालतू लफंगा नेना-भुटका पर्यन्त जे पड़ाकऽ कलकत्ता जाइत छल तकरा सभक हेतु कन्तू भाइ अपन कन्तोड़ फोलि दैत छलथिन । परोपकारेमे अपन जीवन बितबैत कोन तरहेँ ओ अपन स्वार्थ सिद्ध करैत छलाह से आइ मोन पड़ि रहल छनि ।

विचार करू जे कलकत्ता सन शहर आ ताहिठाम पन्द्रह-पन्द्रह, मस-मस दिन अपना डेरापर राखि, अपना मेसमे भोजनक जोगाड़ धरा, सबकेँ कोनो ने कोनो नोकरी अवश्ये धरा दैत छलथिन । ई तँ अवश्य जे कन्तू भाइ कोनो तेहन ओहदापर नहि छलाह जे प्रिंसिपल, प्रोफेसर, मास्टर, सम्पादक अथवा कोनो कलक्टर-मजिस्टर ककरो बना दितऽथिन, मुदा अपन-अपन योग्यताक अनुसार ककरो बंगाली सभक धीया-पूताकेँ खेलयबाक लेल, ककरो दरवानी, ककरो भनसीया, ककरो ट्राममे कन्डक्टर, ककरो चौके वर्त्तन आ क्यो तेहन प्रतिष्ठित घरक गेल तँ काली सहस्त्रनाम, गोपाल सहस्त्र नाम, विष्णु सहस्त्र नाम आदिक पाठे, धरा धरि दैत छलथिन किछु ने किछु अवश्य । तखन ईहो बात सत्ते जे ककरोसँ औंठा छाप लऽ लेथिन आ ककरो विश्वासे पर छोड़ि देथिन, दरमाहा की दक्षिणा भेटलापर चुकता कऽ देल करनि ।

ताहि युगमे जखन हमर कन्तू भाइ अपन छोट भाय मन्तूक बियाह करौने रहथि तँ पछवारि गामवला मन्तूक कोजागरामे सत्ताइस टा भार पठौने रहनि ।

आइ विजया दशमीक उल्लास भरल पर्वमे टीकमे एक पाँज जयन्ती बन्हने नाकेँ कानेँ कपारेँ जगजगार चानन ठोप आ बैद्यनाथी पासाक उज्जर दप-दप त्रिपुण्डसँ विभूषित दलानपर एकसरे बैसल हमर कन्तू भाइ दूरसँ बूझि पड़ैत छथि जेना कोनो स्कूलक मास्टर करिया बोर्डपर उजरा पथरखड़ीसँ चटिया सबकेँ रेखागणित पढ़ौने हो अथवा लत्ता भिजाय खापरिक पेन परक कारिख बोरि, पाटीकेँ पोति, मजबूत कचड़ासँ कचड़ि कोनो प्राथमिक

पाठशालाक विद्यार्थी शनेचरीमे गूड़-चाउरक लोभेँ दू कानसँ बीस कान धरि लिखि गेल हो, ने तँ ई बूझू जे हुनका कपार परक दूनू ठोप लगैत छल जेना ''दू बुन्ना दू पासीक:'' हो । से कन्तू भाइ एकान्तमे आङुर पर किछु हिसाब कऽ रहल छथि– शुक्र एक, शनि दू, रवि तीन, सोम चारि, मंगल पाँच... पाँचम दिन कोजागरा थिक । एखन धरि ने घर आङन नीपल-पोतल ने छछारल-ढेउरल गेल अछि ने दरवज्जा छीलल-छालल गेल अछि आ ने बौआ चुमान कराबऽ अयलाह अछि आ ने ई कुटुबे समाद देलनि अछि जे कतेक भार पठा रहल छथि ।

एही प्रसंगमे सन्तूक कोजगराक भारदोर मोन पड़लनि... लोक कहौक छोटबभना, मुदा हाय-हाय हाय-हाय ! एक एकटा भार जे सीटल छलैक ! मखाने पठौलक तँ तेरह कूँड़ा, बड़का पनबट्टासँ मखान परसने रही, पुरुष-पातक फाँफड़, जनी-जातिक आँचर, नेना-भुटकाक घड़िया आ धी-बेटीक घघरी भरि देने रहिऐक । इह... ताहि मे दूधकेँ मोटकऽ ओँटि दही जे पौरने रहय से खोआक नाक छप दऽ काटि लैक । कन्तू भाइकेँ बूझि पड़नि जेना कल्हुके गप्प हो । की मनक्का देल टिकरी, खोआ भरल पिड़ुकिया, गुलाबक अँतर देल चन्द्रकला, चारि चङेरा पकमान तँ छओ चङेरा मधुर... इह... खाजा जे छल नेनु सन कोमल, मधु सन मधुर ! मुँहमे दिऐक तँ बूझि पड़ैक मिसरीमे लेपटाय बकेन महिसीक पझायल दूधक छाल्ही मुँहमे देने होइ । एतवा मोनमे सोचैत सोचैत कन्तू भाइक मुँहसँ ढब् दऽ एक बुन्द कुर्सी पर खसि पड़लनि तँ जेना तन्द्रा भंग भेल होइनि, चारू कात अकचकाकऽ जेना मचान परसँ खसल होथि ताकि बामा हाथक तर्जनीसँ चट ओकरा पोछैत लगमे राखल गिलासक पेनीमे लसकल दू बुन्द जलसँ हाथ धो चौकीकेँ पोछि पवित्रताक रक्षा कयलनि आ जेना किछु भेबे ने कयल अछि तेहन सन मुखमुद्रा बनबैत पुनि अतीतक ओहि मधुर स्मृतिक चभच्चामे चुभकऽ लगलाह... केहन रुन्-झुन् रुन्-झुन् बजैत पटनिया हलुकाहा खराम ! लौंग, अणाची, छहोड़ा, नारिकेर सभक बनौलहा गाछ सब... सेहन्ता होयतनि केहन केहन पाग ओ धोधिवला सबकेँ ।

एतबेमे हुनक बालक जे कलकत्तेमे बी.ए.मे पढ़ैत छथिन, हाथक सूटकेश राखि, बापकेँ प्रणाम कयलथिन तँ आशीर्वाद ठोरक भितरेसँ दैत चट कहि बैसलथिन– कहऽ काल तँ तोहर ससुर यौँ लम्बा चौंड़ा गप्प हँकैत छथुन जतेक लम्बा चौड़ा सरकारी ट्रकसँ लऽ टाटाक लारी पर्यन्त नहि होइछै आ बुद्धि एहने भोथ छनि पाकल अल्हुआक कतरा बनयबाक जोग जे एखन धरि ई हो समाद नहि पठौलनि अछि जे कतेक भार पठौताह । तोहर विदाइयो रखनहि छथुन । आबहुँ विदा करथुन की नहि ?

बौआ कहलथिन जे हमरा लोकनि लिखि पढ़िकऽ समाजक रोगकेँ दूर नहि करबैक तँ समाजक उद्धार कोना होयतैक ?

कन्तू भाइ पुछलथिन– कोन रोग ?

'भार-दोर लेन-देन, वर-विदाइ ई सब असार-प्रसार जे दिनानुदिन बढ़ले जा रहल छैक, तखन समाजक निर्वाह होयतैक ?

कन्तू भाइ- भार-दोर, वर-विदाइ ई सब रोग थिकै ? हौ, तोरा सभक बुद्धिमे लाही लागि गेलह ? ई सब थिकै शोभा-सुन्दर । जीवनमे आर होइते की छैक ?

बौआ कहलथिन जे हम साफ शब्दमे कहि देने छियनि जे हमरा ओहिठाम ई किछु नहि चलत । जँ भार-दोर पठौलहुँ तँ बात केहन दन भऽ जायत । कन्तू भाइ जेना साओनक पुरिवामे मकै खेतक उँचका मचान परसँ औंघायले भट्ठ दऽ खसि पड़ल होथि । बुमकार छोड़ैत बजलाह- तोहर बुद्धिक बोतलमे विद्याक बदलामे क्यो तीसीक तेल भरि देने छलह । तेल सठि गेलह आ भरिपेन काटि टा लेभड़ल रहि गेलह ? अपने कोन हलकौरा लेबऽ गाम दौड़ल अयलाह अछि । बड्ड बुधियारी कयलनि... ससुरकेँ साफ-साफ कहि देलथिन जे हमरा ओतऽ भार-दोर नहि चलत । आब कोजागरा दिन दच्छिन भरसँ मोट-मोट अल्हुआ आनि दैत छियह पहिने मखानक बदला मखानक पातसँ मुँह पोछि, अल्हुआकेँ पका कऽ सोहि-सोहि खा लिहऽ आ गौआँकेँ केसौर परसि दिहक ।

बौआ कहिते रहलथिन जे आब समय बदलि गेलैक, लोक सिकस्त भेल जा रहल अछि । ई आडम्बर सब सामान्य आस्था-पातक लोककेँ कुटुम्बक संग समुचित सौजन्य, सौमनस्य बना कऽ राखऽमे बाधक बनल जाइत छैक । एकरा सबकेँ दूर करब आवश्यक छैक । से लिखले-पढ़ल लोककेँ विचार करबाक चाहिऐक, नै तँ समाज घोर संकटमे पड़ल जा रहल अछि ।

मुदा कन्तू भाइ तामसेँ थरथर कपैत उठि कऽ आङन गेलाह कान्ह पर मिर्जइ, हाथमे फराठी, माथपर साठा पाग, अंगपोछामे बान्हल दोसर खण्ड धोती लऽ ई कहैत विदा भऽ गेलाह जे तोँ अपन कविलती छँटैत रहिहऽ, फल्लाँ विदा भेलाह बाबाधाम वैद्यनाथक शरणमे । भरि कातिक हम घुरिकऽ नहि आयब, कोन मुँह लऽकऽ गौआँ सभक सोझाँ बहरायब ? जाहि हाथेँ भरि-भरि पनबट्टा मखान परसने छी, ताहि हाथक औंठा हम गौआँकेँ देखबयैक ?

बेटा अवाक्, मुँह तकिते रहलथिन । हमर भौजी, जे बेटाक आगमनक उल्लासमे छनर-मनर कऽ खोअयबाक लेल ठाँओ-पीढ़ीकऽ रहल छलीह ठामहि ठमकि गेलीह आ हमर कन्तू भाइ सोझे सरसरायल पच्छिम मुँहेँ जाइत आँखिक इरोत भऽ गेलाह ।

[मिथिला मिहिर, 2 अक्टूबर 1960]





कन्तू भाइ आ कंटर

एक बेर हमरा कन्तू भाइकेँ भेलनि मलेरिया । मलेरिया ताहि दिनक होइक तीन प्रकारक । ककरो होइक चौठैया, जे चारि दिनपर भूत जकाँ सवार होइक । हुहुआकऽ धाह चढ़ैक आ भरि दिन भरि रातिमे रोगीकेँ तेना झमारि दैक जे पुनि तीन दिन होश होयबाक बाट नहि । जा धरि मोन टनमनाइक तावत फेर पार पहुँचि जाइ । दोसर होइक तेहैया । तीन दिनपर लागि अबैक, दस बारह घंटामे ज्वर उतरि जाइक । एहि दूनूमे जे लागि अबैक से घर भरिक कम्मल-सीरक ऊपरसँ ओढ़ाय दू गोटे दूनू कातसँ दबने रहैक आ ताहिपर बूझि पड़ैक जे भीतरमे 1934क भूकम्प भऽ रहल हो । आ तेसर प्रकारक होइक सब दिन । कनेक हाथ-पयर, नाक-कान ठरलैक आ देह गम-गमा जाइक, पुनि किछु कालमे साफ, जेना कनहा नक्षत्रक मेघ एक कोनसँ ढनढनाइत उठल, फूही-फाही करैत बिला गेल । मुदा कुसंयमी लोककेँ तऽरे-तऽर भऽ जाइक भरि पेट पिल्ही... पेट नमरिकऽ कोहा आ... गाल सुटुकिकऽ चोटकल मालदह आमक चोकड़ ।

से हमरा कन्तू भाइकेँ सैह भऽ गेलनि । ई जीहक पातर लोक, जन्मेसँ मछगिद्ध । तेँ कतहु खत्तो-खुत्तीमेसँ दू चारि टा गरचुनियेँ पकड़ि अनलहुँ, कोनो मालजालक घूड़मे पका, नोन-मेरचाइ मखा-मखा खा लेलहुँ । आङनमे रान्हल जाइनि पथ्य आ तरघुसकी चलनि अँचारक मसाला पर्यन्त । अंतमे पेट बढ़िकऽ भऽ गेलनि नङाड़ा । बेटा अयलथिन पटनासँ, तखन हिनक पेट देखल गेल । खयलनि गरचुन्नी आ भऽ गेलनि चेङा, बेस पैघ, छट-छट करैत । अंतमे निर्णय भेल जे एहि ठाम हिनका संयम करौनिहार क्यो नहि अछि, तेँ सोझे पटना लऽ चलल जाय । से हमर कन्तू भाइ पहुँचाओल गेलाह पटना । तीन मास धरि ओहि ठाम रहलाह, मुदा एतबे दिनमे हिनका भरि महल्लाक लोक भरिपोख चीन्हि गेलनि । एकर भेलैक एक कारण ।

पटनामे हिनक बालकक डेराक सटले दच्छिन एक ओकील साहेबक डेरा । ओ ओकील साहेब हाथक सक्कत, मनक उदार, आमद मद्धिम, मुदा घरक मजगुतगर लोक । बाप-पितामहक अरजल बेस पैघ हाता, ताहिमे एक कात आँटा पीसक कल, एक भाग जारनिक

दोकान, एक भाग गाइक घर, एक भाग रिक्साक गैरेज। गोड़ दसेक गाय पोसने, गोड़ दसेक रिक्सा रखने। गायसभ बड़ दुधगरि। एही सभसँ मुख्य आय आ टुकदुम ओकालतियो चलैत।

खर्च-बर्च समटल, भाँटा चलल तँ कतिकहरसँ चैतावरि धरि, आलूक साना चलल तँ भदवरिया ठढ़िया साग धरि पहुँचा देल करनि। लत्ता-कपड़ा तीन पुश्त चलऽबलासभ, डेरा पर पुरना धोतीक लुंगीसँ काज चलबैत। अपने मीजा ऊन तँ बीबी तक़र दून। खाली खर्च होइनि एक मात्र। ओकील साहेबकेँ एक टा बाल-विधवा सारि, से परम दुलारू, घरवाली हुनक चिररोगी तेँ हुनकर सेवा-शुश्रूषामे सहायता करबाक हेतु अपना संगहि रखैत। ओकर हुकुम तामिल करक हेतु ओकील साहेब बेहाल रहैत छलाह।

ओहि मौगीकेँ एकटा ग्रामोफोन देने आ समय समयपर जाहि कोनो नव रेकर्डक प्रचलन भेल, कतहु लाउडस्पीकर पर सुनलक, की तुरत फरमाइश, फेर तकर पूर्त्तिओमे ओकील साहेबक कृपणता ताखपर चल जाइनि।

संयोगसँ जाहि कोठलीमे हमर कन्तू भाइ रहैत छलाह, तकर उतरबरिया खिड़की आ ओकील साहेबक सारि जाहि कोठलीमे रहैत छलथिन तकर दछिनबरिया खिड़की एकदम सोझाँ-सोझी। कन्तू भाइ चिर-रोगी भऽ गेल रहथि, ताहिपर पटना आबि हुनकर रुचिपर प्रतिबंध लागि गेल रहनि, से आरो खटखटाह भऽ गेल छलाह। इच्छाक विरुद्ध ककरो बाजब-भूकब, कूदब-फानब सभ किछु कटाह लगैत छलनि आ ओ मौगी सदिखन ग्रामोफोनकेँ रिड़ियबैत रहैत छलि।

एक दिन कन्तू भाइ भिनसरै अपन नित्यकृत्य समाप्त कऽ चन्दा झाक रामायण लऽकऽ मोन बहटारऽ बैसलाह, तावत ओहि कोठलीमे ग्रामोफोन बाजऽ लगलैक– ''सावनमे व्याहन आया''। पहिले पद सूनिकऽ हिनका छगुनता लागि गेलनि जे साओनमे तँ बनारसी शुद्ध के कहय, मुसलमानो सभक बियाह नहि होइत छैक, तखन के एहन मूर्ख चपाट ई गीत बनौलक ? अस्तु, पहिल बेर गीतक धुनि बाजा-गाजा ततेक बेजाय नहि लगलनि। फेर दोसरो बेर वैह रेकर्ड देलकैक तँ मौगीक सनकपर छगुनता भेलनि, जखन तेसरो बेर यैह, तखन ओकील साहेबपर झुझुअयलाह आ जखन एतबे जोति देलकैक तखन तँ हमरा कन्तू भाइकेँ तामसेँ होइनि– अपन मुँह-कान अपने हाथेँ नोचि ली। अपना कोठलीमे कतबो बड़बड़यलाह, कतबो हाथ-पैर पटकलनि, कतबो माथ-कपार पिटलनि ओ 'सावनमे व्याहन आया' बन्द नहि भेलनि। इच्छा होइनि जे ग्रामोफोनकेँ उठा कऽ रेलवी लेनपर कऽ धऽ दिऐक जे चुन्नी-चुन्नी उड़ि जाइक आ ओहि मौगीकेँ दुनू टाङ पकड़ि उनटे भरेँ कोनो इनारमे धऽ दिऐक जे जँ चीत्कारो करय तँ प्रतिध्वनि पानिमे टकराकऽ सूति रहैक। अपने मोने दाँत पिसैत बाजि उठलाह– 'हमर जँ सक चलैत तँ आइये तोरा यमराजक बेटाक संग सम्बन्ध करा दितियह।

साँझमे बेटा जखन काजपरसँ घुरलथिन तँ कलपि-कलपि अपन मनोव्यथा कन्तू भाइ सुना देलथिन आ संगे ईहो कहलथिन जे आब हमरा गाम पठा दैह ई मग्गहमे जे मरब, ताहिसँ कतेक बेसी नीक होयत अपन जन्मभूमि पर जा कऽ मरब गऽ, अपने गाछीमे ई

शरीर डाहल जायत, जाहिठाम बाप-पुरुखालोकनि जरल छथि । ई फोनोगिलासवाली मौगी हमरा जीबऽ नहि देत ।

बेटा चुपचाप उठलथिन आ सोझे ओकील साहेबक नेहोरा-पाती करऽ लगलथिन– ''हमर बाबूजी दु:खित छथि । अपनेक ओहिठाम ग्रामोफोन सतत बजैत रहैत अछि, से हुनका अप्रिय लगैत छनि । मनोरंजनोक एकटा समय होइत छैक तेँ समयपर बजौलासँ नहि कोनो क्षति, मुदा अति नहि होइक, ततबा कृपा कयल जाय ।

ओकील साहेबक 'कैसी तेरी रंगत' बला गप्प । ओ कहऽ लगलथिन– 'ई हमर व्यक्तिगत अधिकार थिक, अपना घरमे, अपन ग्रामोफोन, अपना खर्चपर हम बजबैत छी ताहिमे हस्तक्षेप कयनिहार अहाँके ? अहाँक बाप बड़ खटखटाह छथि तँ एहि ठामसँ चल जाथु ।

हिनक कतबो कहला-सुनलापर ओकील साहेब एहने क्रमपात बनौने रहलाह जेना तोरा किछु होइत छहु, हमरा कुर्थी उलबऽ दे । हमर कन्तू भाइ सब किछु सुनिते छलाह । तामस तँ ततेक भेलनि जे गामक हिडहवारकेँ जोड़ा छागर कबुला कयलनि । कल जोड़िकऽ कहलथिन– 'एहि उढ़रीक संगहि जँ एकरा कालापानी भऽ जाइक तँ नटुआ नचाकऽ हम जोड़ा छागर अहाँकेँ चढ़ाबी ।

बेटा जहाँ घूरिकऽ अयलथिन तँ कन्तू भाइ चट दऽ कहलथिन– 'काल्हि बेरुका उखड़ाहा धरि चारिटा बाँस, दू टा जऽन आ दू टा मटिया तेलक खाली कंटर मङा दैह । हम एहि लङटेक हिस्सख छोड़ा दैत छियनि । पहिने हमरा भातिजकेँ एकर अर्थे ने लगलनि । पटना सन नगरमे बाँस आ जऽन ताकब कतेक कठिन काज तैयो ओ एतबा जोगाड़ धरा देलथिन; तखन अपना काजपर गेलाह । साँझमे घुरलाह तँ डेराक आँगामे बेस ऊँचगर मचान तैयार । रातिमे दूनू जऽनकेँ भोजन देलथिन आ जखन राति एगारह बजलैक, महल्ला शान्त भऽ गेलैक तँ कन्तू भाइ दूनू कंटर लऽ दूनू जऽनकेँ मचानपर चढ़ि कंटर पीटऽ कहलथिन ।

कंटर पीटऽ जाय लागल । महल्ला भरिक सूतल लोक, जागल लोक, क्यो आँखि मिड़ैत, क्यो क्षुब्ध, क्यो चकित, क्यो क्रुद्ध, क्यो हँसैत चारू भागसँ जिज्ञासा भरल चित्तेँ जुमि गेल । आकील साहेब बजैत अपना डेरासँ बहरयलाह– 'महल्ले भर की नींद हराम करना कहाँकी शिष्टता है' महल्ला भरिक लोकक ध्यान जे ओकील साहेब दिस आकृष्ट छलैक से हमरा कन्तू भाइक बहराइते हिनका दिस जिज्ञासु दृष्टियेँ घूरि गेलैक ।

कन्तू भाइ बहुत शान्त चित्तेँ पछिला दिनुक घटनाक वर्णन करैत कहलथिन– अपना मचानपर, अपन कंटर, अपना जऽनसँ, अपन खर्चपर हम भरि राति पिटबैत रहब । हमर एहि व्यक्तिगत अधिकारपर हस्तक्षेप कयनिहार अहाँ के ?'

ओहि दिनसँ ग्रामोफोनक रिड़िअयनाइ बन्दे भऽ गेल ।

[मिथिला मिहिर, 19 मार्च 1961]





कन्तू भाइ आ कण्ठी

धीया-पूता जखन साइकिलपर चढ़ब सिखैत अछि तखन ओकरा होइत छैक जे ककर साइकिल कोन ठाम पाबी कि लऽ उड़ी । ठीक तहिना अपना देशक हेतु ई राजनीति अछि । अधकचुआ नवतुरिया छौंड़ा सब बाटे-घाटे जतहि पबैत अछि ततहि क्यौ सरकारक आलोचना तँ क्यौ समर्थनमे भीड़ि जाइत अछि ।

संयोगसँ आइ कन्तू भाइक दलान पर एहिना पड़ि गेल पचड़ा कौलेजिया छौंड़ा सभक बीच । एक पक्ष कहैत छलैक जे सरकार कोशी-योजना, कमला-तटबन्ध, गण्डक-योजना, बरौनी तेल शोध कारखाना, सकुरीक बिजुली घर, गंगापर पूल, बड़ी लाइनक व्यवस्था कऽकऽ उत्तर बिहारक उद्धार कऽ देलक अछि आ दोसर पक्ष कहैक जे बिहार-सरकार मिथिला क्षेत्रक संग सतमायक व्यवहार करैत अछि । ओकर तर्क छलैक जे एखनो ओहिना रौदी अछि, दाही अछि, अगिलग्गीमे एखनहुँ गामक गाम सुड्डाह होइत रहैत अछि आ ओहिना महामारीक प्रकोप रहैत अछि; ने सड़कक व्यवस्था ने पटौनीक प्रबन्ध आ दक्षिण बिहारमे दू-दू टा रेडियो स्टेशन, बड़का-बड़का कल-कारखाना, पक्की सड़क, पक्का मकान, जतऽततऽ बिजुली सभक प्रबंध कयने अछि । एवं प्रकारेँ मुँह-चोथौअलि चलि रहल छलैक आ हमर कन्तू भाइ अपन चौकीपर बैसल निर्विकार भावेँ ढेरुआपर सुतरी बँटने चल जाइत छलाह । हुनक क्रम-पात एहन सन जे तोरालोकनिक कुकुर-कटाउझिसँ हमरा कोन मतलब । हम पूछि बैसलियनि- कन्तू भाइ ! बड़ मनोयोगपूर्वक ढेरुआ काटि रहल छी । एतेक सुतरी लऽकऽ की करब ?

कन्तू भाइ चारमे लटकल सऽनमेसँ एक लट खीचि ओहिमे लगौलनि आ ढेरुआकेँ नचबैत उत्तर देलनि- हौ ! हम निश्चय कयलहुँ अछि जे अपना खुट्टापर छौ गोट बकरी पोसी आ दस पाँच कीनिकऽ पोसिया लगा दी ।

हमरा कनेक छगुनता भेल जे बकरी पोसनिहारि रड़िनियाँ सभकेँ अपन गारि पढ़बाक कलासँ मुग्ध कऽ देनिहार कन्तू भाइ अपने बकरी पोसबाक योजना बना रहल

छथि से किएक ? प्राय: ककरो बकरी बाड़ी-झाड़ीमे पैसि कोनो विद्दति कयलकनि अछि तेँ एना लोहछल छथि आ तकरे प्रतिशोधक ई योजना थिकनि । हमरा दृष्टिमे जिज्ञासा देखि कन्तू भाइ बजलाह– तोरा आश्चर्य किएक लगलह ? आब बिनु बकरीएँ एहि युगमे मनुष्यक जीवन बितायब परम कठिन । एक तरहेँ बूझह तँ हमरालोकनि शुद्ध कऽ बकरीयुगमे पहुँचि गेल छी ।

हमरा भेल जे प्राय: महात्मा गान्धी बकरी पोसैत छलाह आ बकरीक दूध पिबैत छलाह; आइ मंगल दिन थिकैक, भिनसरे छौंड़ा सभ हुनमानजीक आरतीक काल झालि ढोलकपर झूमि-झूमि गाबि रहल छल–

''गान्धी महात्मा भारतक नेता

बकरीकेर दुध पिबइ छला

हो बकरीकेर दुध पिबइ छला

रघुपति राघव राजा राम

हो बकरी केर

दुध पिबइ छला

पतीत पावन सीताराम

हो बकरीकेर

दुध पिबइ छला ।''

प्राय: ओही गीत दिस कन्तू भाइ व्यंग्य करैत छथि । तेँ हम कहलियनि-- आब अहूँ शुद्ध खद्धड़धारी होअऽ चाहैत छी ?

कन्तू भाइ एक भहुँकेँ कपार दिस चढ़बैत, नचैत ढेरुआकेँ ठाढ़ कऽ गप्पक मूडमे आबि गेलाह, कहलनि– खद्धड़धारीसँ तोहर की तात्पर्य छह ? आइ-काल्हि एकर कतेक अर्थ होअऽ लागल छैक । महात्मा गांधीक बकरीकेँ ध्यानमे राखि यदि पुछैत होअह तँ हम तेहन अहिंसावादी नहि छी । असलमे खायल-पिउल जीह अछि, तकरा आब एहि बुढ़ारीमे सेदि लियऽ से पार नहि लगैत अछि । तखन तँ छौंड़ा सब मुँह चोथौअलि कऽ रहल अछि जे सरकार ई कयलक तँ ओ कयलक । हमरा बुझने जे कयलक से कयलक, मुदा गंगापर जे पूल देलक से हमरालोकनिकेँ बौद्ध बनयबाक हेतु । देखह, बौद्धधर्मक प्रभाव-कालमे मिथिलापर ओकर कोनो असरि भेलैक ? तकरे कसरि आब बाहर भऽ रहल अछि । बुद्धि तीव्र करबाक असली वस्तुकेँ निपत्ता कयने चल जा रहल अछि ।

हम पुछलियनि— से की ?

कन्तू भाइ बजलाह— आहि बा ! एतबो बुद्धि नहि छह ? देखह, माछ नहि भेटलाक कारणेँ एतबे दिनमे बुद्धि बिनु कूटल सिलौट जकाँ भोथ भऽ गेलह । गप्प करैत जाइत छह पूब-पच्छिम, उत्तर-दच्छिन, अकास-पताल सभ ठामक पोल्टिसक ! आब बरौनीमे लादह तँ दुनियाँ भरि चल जाह । ट्रेन-ट्रक-सभ एहि पारसँ ओहिपार । डेढ़वासँ लऽ बोआर धरि सभ ऊघि-ऊघि लऽ जाइत अछि । ने माँछ भेटतह ने बुद्धि तीव्र होयतह । बस, सभ क्यो बौद्ध भऽ जयबह । बौद्ध माने मैथिलीमे होइत छैक— 'बकार बन्द' से सभक बकार बन्द छह । तखन हम ओहि बकारकेँ बकरीमे बदलि लैत छी ।

हम कहलियनि— बकरीकेँ माँछसँ कोन सरोकार ?

कन्तू भाइ मुसकुराइत बजलाह— जैह सरोकार तोरा बुद्धिकेँ ठेंठी कोदारिसँ । हौ, आब फड़िछा कऽ सुनह, हमरा अपना खुट्टापर छौ टा बकरी रहत तँ कोनो केँ तीन, कोनोकेँ दू आ कोनोकेँ एक टा सही, मुदा सालमे दू बेर कऽ बच्चा होइत छैक । हराहरी चारि बच्चा सालमे जोड़ैत छी तँ छओ चौक चौबीस होइत अछि । पक्षमे एक टा कऽ छागर भेटैत रहत तँ अर्द्ध वैष्णवे ने रहब ?

हम पुछलियनि— माछक बड़ उत्कण्ठा होइत अछि ?

''उत्कण्ठा होइत अछि ? हौ, हम दू-एक कट्ठा खेतो भरना धऽकऽ आब चाहैत छी एक दिन जी जाँतिकऽ एक जोआयल रोहूक एकावन गोट खण्ड तरबाकऽ निरैठेमे सब काँट छोड़ाय गुद्दा खा ली आ ओही काँटक कंठी बनाकऽ भोजन सँ पहिने अष्टोत्तर शत माछक नाम ओही माला पर जपि लेल करी ।

हम पुछलियनि— एक सय आठ गोट माछक नाम पूरत ?

कन्तू भाइ छाबा पर चाटी मारैत बजलाह— सैह ने पूरैत अछि, ने तँ एही बेरुक दशमीमे हम ई कृत्य पूरा कऽ लितहुँ । देखहऽ सूची बना रहल छी । जँ पूरि गेल तँ लगले हाथ एकटा मत्स्य शतनाम स्तोत्रम्' सेहो बना लेब ।

पुछलियनि— सूची कने हमरो देखऽ देब ?

कन्तू भाइ बजलाह— तखन सुनाइए दैत छियह – इँच्चा, कोतरी, डेढ़बा, चेल्हबा, चन्ना, पोठी, सूहा, मारा, लट्टा, लपची, पतासी, छऽही, गगरी, गरचुन्नी, गरइ, चचरा, गैंची, भुल्ला, ढलोइ, दरही, रेबा, भुनचट्टी, बेलौना, सौरा, सौराठी, बचबा, चेङा, सिंगी, माङुर, कबइ, बोआरी, मोदिनी, नैनी, रोहु, भाकुर, भुन्ना, बोआर, काँटी, टेङड़ा, ठेङहा, बामी, भोँड़ा, गोर्रा, राङाकाँटा, बैकट धार-पोखरि खत्ता-खुत्ती एहि सब ठाम भेटऽ वालाक गनि-गूथि कऽ एहि पैंतालिस नामपर आबि अँटकल छी ।

हम कहलियनि– कन्तू भाइ ! वामीकेँ गनि लेलिऐ तँ अन्हइकेँ किए छोड़ि देलिऐक ?

कन्तू भाइ बजलाह– थीक तँ ओ ढोंढ़क साक्षात् मसियौत, तथापि हारने हरिनाम, कहबीओ छैक- हारने केदन कीदन खाय । लैह एकरो नाम जोड़ि दैत छिऐक । आइ सोचलहुँ अछि जे परोपट्टामे ढोलहो देया दैत छिऐक ।

हम पुछलियनि– कथीक ढोलहो ?

उत्तर देलनि– यैह जे जे क्यौ एक फेरा मालाक जोगर नाम पूरा कऽ देत तकरा ई पाड़ा इनाममे दऽ देबैक आ जे शतनाम पूरा कऽ देत तकरा ई पाड़ातरेँ बिआइलि महींस पर्यन्त इनाम देबैक । एतबा कहैत कन्तू भाइ ढेरुआमे सऽन केर खोंचा दऽ सुतरी बाँटऽ लगलाह ।

[मिथिला मिहिर, 6 नवंबर 1960]





भूखन भाइक चुटुक्का

हमर जे भूखन भाइ छथि तनिका अहाँ नहि चिन्हैत छिअनि ? जँ अहाँ कहब जे नहि, तँ हम कहब जे मिथिला सन कोमल माटिमे, जतऽ मखान आ माछ होइत छैक, जन्म लऽकऽ अहाँक जीवन निष्फले रहल । अहाँक जीवन निष्फल नहि रहय, तेँ हम चाहैत छी जे अहाँ हमर भूखन भाइकेँ अवश्ये चीन्हि लिऔनि ।

भूखन भाइक वयस चौरासीसँ सतासीक बीच छनि । एहिसँ अहाँकेँ ई भेल होयत जे ओ आब बेस धुत्थुर बूढ़ भऽ गेल होयताह; डाँड़ झुकि गेल होयतनि; दाँत टूटि गेल होयतनि; केश पाकि गेल होयतनि; चाम घोकचि गेल होयतनि; आँखि मिलमिलाकऽ कोनहुना तकैत होयताह; आँखिक कोनीपर अधिक काल काँची अलसाइत रहैत होयतनि; दन्त्य, तालव्य आ मूर्द्धन्य वर्णक उच्चारणमे व्यत्यय भऽ जाइत होयतनि; फराठी लऽकऽ चलैत होयताह; थोथ चुटकी भरि तमाकू ठोरतर सगरे पसरि जाइत होयतनि; ने तँ डाँड़मे नोसिआनी रखैत होयताह; चुटुक्कापर चुटुक्का दैत होयथिन; नाकक टुरनीपर एक ठोप पीताभ, सोनक बुलाकी सन नाकक पानि लटकल रहैत होयतनि; अङपोछाक एक खूँट बकरीक गोँत सन रंगमे रङल रहैत होयतनि– मुदा नहि, ई कल्पना अहाँक फूसि होयत, सब अनुमान व्यर्थ होयत ।

हे लिअऽ आब हम अपन भूखन भाइसँ अहाँकेँ चीन्हा-परिचय कराइए दैत छी । हमरो भूखन भाइ अपन हाथसँ साढ़े तीन हाथक छथि । तेँ अहाँ हिनका सोझाँमे भुट्ट नहि कहि सकैत छिअनि । अहाँ चाहब जे गऽज लऽकऽ नपियनि तँ अवश्ये ई एक गऽज चारि गीरह छथि । मुदा अहाँ गऽजसँ नापिए ने सकैत छिअनि, किएक तँ हमर भूखन भाइ कोनो फरगज्जी ननगिलाटे सन मजगूत छथि । भरि मघारि भोरुका उखड़ामे घूड़तर बैसि सात छरक्का कुसिआर निङ्हटौनाइ हिनका लेखेँ दातमनि करऽसँ बेसी महत्त्वक काज नहि होइत छनि । कहू जे एहन दाँत अहाँकेँ नबको वयसमे अछि ?

भूखन भाइकेँ एको क्षण अहाँ निरर्थक समय गमबैत नहि देखबनि । ओना तँ

घरबैया, माने परिवारक आन लोक, हिनका कहियो यश नहि देलकनि । मुदा पन्द्रहे-सोड़ह वर्षक वयससँ हिनक ई क्रम चलि रहल छनि जे प्रात:काल उठिकऽ लोटा लऽ ई बाह्य भूमि जाइत छथि । हिनक मत छनि जे जखन नामे थिकैक बाह्यभूमि तँ बिनु बाहर गेला सन्ताँ शब्दक अर्थ कोना ठीक भेल ! तेँ अपना घरसँ दू माइलपर जे बलान बहैत छनि, ई ओहीठाम चल जाइत छथि । एहिसँ दू फल । बाह्य भूमिक बाह्य भूमि आ नदी दिशक नदी दिश । अहाँ कोनो वैद्यकेँ दाँतक सम्बन्धमे पुछियौनि तँ अवश्य कहताह जे दूध बहैत बबूरक दतमनि दाँतक हेतु महौषधि थिक । तेँ बलानक कात गेलासँ तेसर ई लाभ जे सबदिन बबूरक दतमनि काटि, अपना हाथेँ बना, तखन ई दतमनि करैत छथि । दू बेर चिबौलहुँ आ दू बेर रगड़िकऽ फेकि देलिऐक से कोन दतमनि भेल । एहिसँ नीक दतमनि तँ हाथी करैत अछि जे ओतेक मोटगर डारि सभक पङुरी चिबौलक आ फेकि देलक । बत्तीस दाँतकेँ साफ करबामे हराहरी दुइए मिनट एक दाँतपर खर्च कयल जाय तँ बत्तीस दूना चौंसठि मिनट भेल । ताहिठाम ई साठिए मिनट, माने, एक घंटा मात्र दतमनि करैत छथि । चारि मिनट बचाइए लैत छथि आब अँही कहू जे कोन बेसी काल हिनका लगैत छनि ? साफ लिखल छैक–

मोट दातमनि जे करय, जे नित हर्रे खाय

बासि पानि जे नित पिबय तै घर वैद्य न जाय

आजुक छौंड़ा सब गोलीपर गोली, पुड़ियापर पुड़िया, शीशीपर शीशी खयने जाइत अछि तैओ कोठी कहियो ठीक नहि रहैत छैक आ हमर भूखन भाइ औखद की कहियो खयलनि ? नदी दिशक बहाने एक कोस गेनाइ आ एक कोस अयनाइ आ ताहिपरसँ दातमनिक काण्ड छोड़ौनहि अबैत छथि । तखन जँ नौ बजे धरि ई गामपर घूरि अबैत छथि तँ कोन बेसी समय ई लगबैत छथि ? अनेरे जँ मोजर नहि दिऐक तँ ताहि लेल क्यौ दोषी कोना भऽ सकैत अछि ? तेँ हमर भूखन भाइपर जँ क्यो दोषारोपण करैत छनि जे ई घर-आश्रमक काज उद्यम नहि करैत छथि तँ हुनका जनैत, आ हुनका काजक सम्बन्ध मे जानि गेलापर हमरो-अहाँक जनैत, भूखन भाइ जऽवो बरोबरि दोषी नहि छथि । आ रे, जे क्रम सतरहक धक्कसँ आबि रहल छनि ताहिमे छोदच्छेम कयनिहार निश्चय भीतर सँ प्रचण्ड छथि आ एहन प्रचण्डक कथापर ध्यान देब ई अपना प्रतिष्ठाक विरुद्ध बुझैत छथि ।

भूखन भाइ पण्डित नहि छथि । अहाँकेँ एकर अर्थ लागल होयत जे ई मूर्ख छथि आ एहीसँ हम बूझब जे अहाँ भयानक अगुताह छी । औ, ई जँ पण्डित नहि छथि तँ माने ई कहाँ भेल जे ई मूर्खे छथि ? एही सब द्वारेँ आइ-काल्हुक लोककेँ हमर भूखन भाइ मनुक्ख नहि बुझैत छथिन । बकरी जेना रंग-बिरंगक गाछ-पात हबर-अबर चिबौने जाइत अछि तहिना हबर-हबर कोनो बात बुझने चल जाइ तँ मनुक्ख किएक भेलहुँ ? रे, असली मनुक्खक काज थिकैक जे ओकरा सोझाँ, जे कोनो वस्तु, जे कोनो बात, जे कोनो विषय

अबैक तकरा स्थिरतासँ, गंभीरतासँ बुद्धिक निचला तह धरि जाय दैक, कने भीजऽ दैक, तखन जे उचित बुझि पड़ैक से करय । उपरे-उपर लप्प-लप्प गप्पकें लोकने गेलहुँ तँ महन्थ-स्थानक ऊँटमे आ अहाँमे कोन अन्तर ? तें भूखन भाइ जखन लघुकौमुदी पढ़ब आरम्भ कयलनि तँ बारह वर्ष धरि पढ़ैत रहलाह आ ताहि अवधिमे जड़िसँ बारह गोट सूत्र ओकर वृत्ति आ ओकर उदाहरण पर्यन्त कण्ठस्थ कऽ गेलाह । ओहिसँ पहिने अमरकोष घोखैत रहथि । हुनक पित्ती जे रहथिन तनिक इच्छा जे जल्दी-जल्दी पढ़िकऽ भूखन पण्डित भऽ जाथु, मुदा हुनका बुद्धिक खेतमे कोनो झड़ तँ नहि उपजल रहनि जे सुड़रि-सुड़रि फेकने जैतथि । जे पढ़ताह से नीक जकाँ, जे करताह से नीक जकाँ । भूखन भाइ की कोनो एकटा पण्डितसँ पढ़लनि जे हुनक ज्ञान एकभगाह रहितनि ? गामक पाठशाला सँ शुरू कयलनि आ लोहाक मसोम्मातक ओहिठामसँ होइत पचाढ़ी महन्थ, चोरौत महन्थ, मटिहानी महन्थ अर्थात् जतऽ कतहु भरि पेट भोजनक ओरिआन होइत गेलनि ताही पाठशालामे रहि थोड़ेक दिन पढ़ि देलथिन ।

अठारहम वर्षक वयसमे तँ पढ़बे शुरू कयलनि । आजुक युगक लोक नहि थिकाह जे अभिमन्यु जकाँ गर्भेसँ चक्रव्यूह भेदन करऽ अबैत रहितनि । ताहि दिनक लोक तँ जा' धरि पम्ह अबैक ता' धरि नेना बूझल जाइत छल । ओ वयस थिकैक खयबा-खेलयबाक । आबक लोकक इच्छा जे नेना जनमय से मैट्रिकक 'सट्टिपिट्टी' नेनहि । भूखन भाइ एहि युगक अगुताह लोक नहि छथि । तीस वर्ष धरि घोखन्त विद्यामे लागल रहलाह । गोसाँइक नाम, शीतलाष्टक, शक्रादिस्तुति, सत्यनारायणक कथा, एकोद्दिष्ट-पार्वण-सेहो सब एही अवधिमे सीखि गेलाह । ऊपरसँ जँ लघुकौमुदीक दस-बारह टा सूत्रो अभ्यास भऽ गेलनि तँ कोन थोड़ पढ़लनि ? ई दोसर बात जे बादमे लघुकौमुदी क्यो हुनकासँ पढ़ऽ नहि अयलनि तें सूत्र सब हुनका बिसरि गेलनि, मुदा दुर्वाक्षतक मन्त्र तँ एखन धरि ओहिना मोन छनि । तखन हुनका मूर्ख कहब अपन मूर्खताक विज्ञापन करब थिक ।

भूखन भाइक लेखें सात वर्षक नेना आ सत्तरि वर्षक बूढ़मे केवल एक शून्यक अन्तर, तें अन्तर शून्ये बूझक चाही ओ सभक संग एक रंग झूमि-झूमि, हृदय फोलि गप्प करैत छथि ।

नेना सभक हेतु हमर भूखन भाइ 'बृहत्कथा-सरित् सागर' थिकाह । नित्यप्रति अपन चुटुक्का छोड़ैत जाइत छथि आ द्रौपदीक बटलोही जकाँ ओ भरले रहैत छनि । आइ बड़की गाछीक झमटगरहा अमताहा लड्डुब्बा तर जे मचान छैक, जाहिठाम साँझू पहर कऽ गामक ललबबुआसँ लऽकऽ नवविवाहित वर पर्यन्त टहलबाक बुद्धिएँ एकत्र होइत छथि अखाढ़ा जुटल रहैक । छुट्टीक समय रहैक । इसकुलिया ओ कौलेजिया छौड़ा सब गाम पहुँचल छल । हिनक चुटुक्का तँ नामी छलनिहें, छौंड़ा सब आग्रह कऽ देलकनि- 'भूखन भाइ एकटा चुटुक्का छोड़िऔक ।'

ई हो बूझि लिअऽ जे हमर भूखन भाइकेँ भरि गामक लोक 'भूखन भाइ' सैह कहैत छनि– भने सम्बन्धेँ ओ ककरो काका, बाबा वा किछु होथुन । तँ भूखन भाइ तखन अपन चुटुक्काक पुड़िया फोललनि– 'एकटा बात कहह, तोरा लोकनि जकरासँ पढ़ैत छह से 'मास्टर' शब्द कोन लिंग थिक ?

एकटा छौड़ा पुछलकनि– 'कोन भाषामे ?'

भूखन भाइ कहलथिन– 'कोनो भाषामे ।'

दोसर छौड़ा उत्तर देलकनि – मास्टर शब्द पुल्लिग थिकैक ।'

भूखन भाइ बजलाह– 'प्रमाणित कऽ सकैत छह ?'

पहिला छौंड़ा बाजि उठल– 'एकरा प्रमाणित करबाक कोन काज ?

भूखन भाइ अड़लाह– 'बिनु प्रमाणेँ हम बात, नहि मानबह । हमरा जनैत मास्टर शब्द त्रिलिंग थिक ।'

सब छौंड़ा ठहक्का लगौलक । एक गोटे बाजल– 'त्रिलिंग तऽ पहिले पहिल सुनलहुँ ।'

भूखन भाइ कहलथिन– 'लैह प्रमाण । जखन मास्टर सब हेडमास्टरक सोझाँमे रहैत छथि तँ स्त्रीलिंग, जखन विद्यार्थी सभक सोझाँमे पढ़ाबऽ पहुँचलाह तखन पुल्लिग आ जखन चारि बजे स्कूलसँ डेरापर पहुँचलाह, नोन-तेल लकड़ीक फरमाइस भेलनि आ अपन जेबी, डाँड़, मनीबैग खाली देखलनि तखन नपुंसक लिंग भऽ जाइत छथि । जँ तर्कसँ मानबह तँ बेस, ने तँ पुछहुन गऽ फल्लाँ बाबू मास्टरकेँ ।

एतबा कहि ओहिदिन भूखन भाइ आगू बढ़ि गेलाह ।

[मिथिला मिहिर, 11 सितंबर 1960]



भूखन भाइक असौकर्य

अहाँ बुझैत छी जे हमरा भूखन भाइकेँ चिन्हि गेलियनि, मुदा हम कहब जे एखन हिनका चिन्हबाक हेतु अहाँकेँ बहुत दिन धरि-साधना करऽ पड़त । अहाँकेँ ई हो बूझल अछि जे भिनसरसँ नौ बजे धरिक समय भूखन भाइ बाह्यभूमि आ दन्तधावनमे लगबैत छथि । आजुक युगक तँ थिकाह नहि जे 'बेड टी' चाहियनि । तखन भगवान ब्राह्मणक वंशमे जन्म देने छथिन; जँ भगवान कोनो निखिद्ध कोखिमे जन्म दऽ दितथिन तँऽ ककरो नानाक सक छलनि जे तकरा बदलितथि ? कोनो सुप्रीम कोर्टमे एहि निर्णयक विरुद्ध अपील भऽ सकितनि ? तेँ हमर भूखनभाइ दतमनिक बाद अपन फुलडाली उठबैत छथि आ फूल तोड़ऽ विदा होइत छथि । जावत फूल तोड़िकऽ अबैत छथि ताबत भौजी भाङ पीसिकऽ रखने रहैत छथिन ।

फूल तोड़बामे ततेक विलम्ब नहि होइत छनि । साढ़े दस बजैत-बजैत घूरि अबैत छथि आ एही एक डेढ़ घंटामे सूर्यक अर्घ्य लेल करबीरक फूल, भगवतीक लेल ओढ़ूलक फूल, शालिग्रामक हेतु दू टा अपराजिता, महादेवक हेतु आक वा धुथुर, गणेशक हेतु खासकऽ दूबि आ विष्णुक हेतु तुलसी, फेर आन सब देवता लेल बेलपात आदि सब किछु तोड़ने अबैत छथि ।

आङन आबि भाङ पीलनि, अङपोछा लऽकऽ स्नान करऽ चललाह । नीतिशास्त्रमे कहल गेल छैक-

धनिकः श्रोत्रियो राजा नदी वैद्यस्तु पंचमः

पंच यत्र न विद्यन्ते, न तत्र दिवसं वसेत् ।

अर्थात् धनवान, वेदक ज्ञाता, राजा, नदी आ पाँचम वैद्य जतऽ नहि होथि ततऽ एको दिन नहि रहबाक चाही ।

तेँ तऽ पुरुखालोकनि नदीक समीप घर बन्हलथिन ! आब भूखन भाइ तकर अनादर कोना

करथुन ? ओ सोझे धारक कात जाइत छथि, ओम्हरे फेर नदी दिस गेलाह आ स्नान कयलनि । बारह बजैत-बजैत गामपर पहुँचि गेलाह । अहाँकें होइत होयत जे बड़ दीर्घ-सूत्री छथि । भिनसरे ओतेक काल बाह्यभूमिमे लगबिते छथि तँ फेर ओतेक दूर जा कऽ नदी दिस जायब आ स्नान करब समयक अपव्यय करब थिक, मुदा ज्ञानझाक योग दऽ कऽ बुद्धिक बुकनीक एक फक्का फाँकि लेब तँ ई भ्रम लगले दूर भऽ जायत । भिनसरे बाह्यभूमि जाइत छथि से नाद शुद्ध करऽ । आब कहू जे हमर भूखन भाइ दीर्घसूत्री की अहाँक बुद्धि भूकम्पक मारल उत्थर पोखरि ?

अहाँ कहब जे जखन धारेमे स्नान करैत छथि तँ पहिलुके खेप स्नान कयने आबथु आ दोसर बेर नाद शुद्ध करबाक हेतु गाम-घरक लगे-पाससँ भऽ आबथु, जाहिसँ समय बचतनि तँ दोसर-दोसर काज करताह, मुदा हमर भूखन भाइक उत्तर सूनि लियऽ—

अहाँ भोरे धरि उठिकऽ रटलहुँ 'आर ए टी रैट' रैट माने मूस तँ बूझल जे गणेशजीक बाहन थिकनि मूस तें अहाँ अध्ययन आरंभ करबासँ पहिने मंगल कयलहुँ आ फेर कहैत छिऐक, 'एच्-ई एन हेन, हेन माने मुर्गी, अर्थात् श्वेत शालिग्रामक स्मरण कऽ विटामिनक स्मरण करैत छी । तखन शास्त्रक मर्म कोना बुझबैक ? हमरा भूखन भाइकें विटामिनक कमी ने भेलनि ने एहि बुढ़ारीओ वयसमे होयतनि । शास्त्रमे स्नानोत्तर फूल तोड़ब निषिद्ध छैक तें पहिले खेप स्नान कयने औताह से नहि होयतनि । तखन रहल लगे-पाससँ नाद शुद्ध कऽ अयबाक विचार, से एक बेर संयोगसँ भूखन भाइकें हमर कन्तू भाइ आग्रह पूर्वक कलकत्ता लऽ गेलथिन, सतावन इसवीक अकाल रहैक कहलथिन— 'ओहि ठाम पाठ-पुरश्चरणमे कतहु लगबा देब तँ कोनहुना ई अकाल खेपि लेब ।

जयबाक हेतु तँ भूखनभाइ चल गेलाह, मुदा एको दिन रहि नहि सकलाह । कारण जे जखन बाह्य भूमिक प्रश्न सोझाँमे अयलनि तँ कन्तू भाइ देखा देलथिन पैखाना । हमर भूखन भाइ फानि उठलाह— 'हौ कन्तू ! घरमे नदी फिरू गऽ ?'

कन्तू भाइ कहलथिन जे ई तँ शहर बाजार थिकैक, एहिठाम दू कोस बाहर जायब से बनत ? एहि ठाम एहिना होइत छैक ।

भूखन भाइक लहरि तरबासँ चललनि से मगजपर पहुँचि गेलनि । कहलथिन— 'सोआइत कलकत्तामे रहने लोक ढाबुस बेङ जकाँ पीयर भेल गाम जाइत अछि । हौ कन्तू ! हम रोगी छी जे घरेमे नदी फिरू ? हम मुँह मारब तोरा कलकत्ताकें, कहू तँ एक कातमे भानसक घर आ दोसर कातमे नदी फिरू ? ई नारकीय जीवन बितयबासँ नीक जे भूखें टटाइत रही । शहरक लिखल पढ़ल लोककें स्वच्छतापर निबन्ध लिखबाक हेतु कहल जाइन तँ सात पातमे लिखि जयताह— एना करक चाही तँ ओना करक चाही आ नदी फिरताह आङनमे ।

भूखनभाइ तुरत अपन धोती लोटा, पोथी-पतड़ा बन्हलनि आ गाम चल अयलाह। आब कहू अहाँ जे गामघरक लगमे बाह्य-भूमि कोना जाथु ? तेँ हमर भूखन भाइ दीर्घ-सूत्री कथमपि नहि छथि। हिनक फुर्त्तीक तुलना कऽ सकैत छी घड़ीक घंटाक सुइसँ। ओ कहैत छथिन जे आजुक युगक लोक सेकेन्डक सुइ जकाँ छट-छट करैत रहैत अछि। तेँ सेकेन्डक सुइसँ अहाँ ई नहि बुझि सकैत छी जे कतेक बाजल। मिनटक सुइ तँ मिनट मात्रक ज्ञान करबैत अछि, ओकरा जकाँ चंचल लोक जीवनक गंभीरताकेँ की बुझतैक। तेँ हमर भूखन भाइक मतेँ मनुष्यकेँ घंटाक सुइ होयबाक चाही, जाहिसँ स्थिरता-पूर्वक सोचि-विचारि कऽ आगाँ बढ़ल आ कतऽ बढ़िकऽ गेल से लोक नीक जकाँ बुझलक। कहू तँ जे हमर भूखन भाइ दीर्घसूत्री छथि की अहाँक बुद्धि कमलाक मारल पोखरि थीक, जाहिमे कबिलपनाक दाबा ठुट्ठ जाठि जकाँ बिच्चे ठाम ठाढ़ अछि आ ताहि जाठि पर बैसल सार्टिफिकेटक चिल्होरि ऊपरेसँ ऊपर किछु उचड़िकऽ उड़ि पड़यबाक लेल लोल पिजा रहल अछि ?

आइ संयोगसँ दुर्गास्थानमे भरि गामक लोक बैसल छल, नटुआक नाच खतम होअऽपर रहैक तँ भूखन भाइ पहुँचलाह। लोक सब मनोरंजनक हेतु कहलकनि- 'भूखन भाइ कोनो चुटुक्का छोड़ियौक।'

भूखन भाइ कहलथिन- 'तीन चारि साल पहिलुका गप्प थिकैक। एक दिन एक टा ललमुँहियाँ रोहुक छवरा सन मुँह बला हमरा ओहिठाम आयल। कानी कटौने रहय, चुरकी बढ़ौने रहय, मोंछ मुड़ौने रहय, चश्मा लगौने रहय, कुर्त्ता पहिरने रहय आ धोतीक कोँचाकेँ वामा पहुँचापर रखने रहय। हमरा भेल जे दुर्गास्थानमे नाचऽ लेल क्यो बजौने छैक से पहुँचल अछि। हम पुछलिऐक- 'कय रातिक साइ देलनि अछि आ कतेक पर ?

ओ बकर-बकर हमर मुँह ताकऽ लागल। कहलक जे हम वोट लेबऽ अयलहुँ अछि। अपने सभक क्षेत्रसँ हम विधानसभाक लेल उम्मीदवार छी तेँ अपने सभक आशीर्वाद चाही।

हम ओकर चालि-ढालि देखलिऐ आ ओकर मनोरथ सुनलिऐ तँ छगुनता लागल जे हमरा सभक प्रतिनिधित्व एहने स्त्रैण लोक करत गऽ। हम कहलिऐक- 'अहाँ उमेदवार छी तँ भगवानसँ हमर प्रार्थना जे उमेदवारमे अहाँकेँ भगवान् सप्तमी तत्पुरुषक विग्रह वाक्य देथु। ओ पैर छूबि प्रणाम कयलक आ चल गेल।

[मिथिला मिहिर, 23 अक्टूबर 1960]



मातृनवमीक नोंत

जखन हम पुछलियनि– 'भूखन भाइ ! ई अग्निजीबी साहित्यकारलोकनिक की अर्थ' तँ तुरन्त बाजि उठलाह– 'एतेक दिन-दुनियाँ देखि अयलाह आ एहन सामान्य शब्दक अर्थ नहि बुझबामे अयलह अछि ? ई अग्निजीबीलोकनि आगि बिना अर्थात् सिगरेट बिना एको पल नहि जीबि सकैत छथि, तेँ अपनाकेँ अग्निजीबी कहैत छथि ।'

हमर भूखन भाइ केहन इण्टेलिजेण्ट छथि से हुनक उपयुक्त उक्तिसँ बूझि सकैत छियनि, मुदा दिनक दोष । चारि पयरक हाथी सेहो चूकि जाइत अछि ।

पितृपक्ष आरम्भ भऽ चुकल छलैक । पितृपक्षक अयबाक अर्थ होइत छैक हमरा भूखन भाइक भोज जागब । एक तँ गामक भगिनमान थिकाह ताहिपरसँ एकटा आत्मविश्वास ईहो छनि जे एहि भ्रष्ट बरहवर्ना युगोमे अपन क्रियाकर्म कयनिहार लोककेँ पोगापन्थी, आँर्थोडौक्स, पाखण्डी आदि कहि-कहि लोक कतबो आलोचना करौक, मुदा भीतर-भीतर होइत रहैत छैक जे हमरा सभसँ पवित्र अवश्य अछि । तेँ जखने कोनो देवता-पितरक कर्म उपस्थित होउक तँ ओहनो आलोचकक ध्यान पहिने क्रियेकर्म कयनिहार लोकक दिश जाइत छैक । कतबो विलेंतसँ भऽ आबओ, मुदा बापक श्राद्ध करबाक काल 'एषपिण्डस्ते मया दीयते'क बदला 'माय डायड फादर प्लीज कम आइ वाण्ट टू गीभ यू दिस पिण्डा' तँ नहियेँ कहैत छैक । एही धारणाक कारणेँ हमर भूखन भाइ संध्या-तर्पण, चानन-ठोप आदिक निर्वाह करैत आयल छथि । ओना, एकादशी-चतुर्दशी आदि अवसरपर एकर सद्यः फल साल भरि भेटैत रहैत छनि, मुदा विशेषकऽ पितृपक्षमे आबि भरखरि भऽ जाइत छनि । परंच एहि बेरूक पितृपक्षमे भूखन भाइकेँ हमर भौजी चौंका देलथिन । बात भेलनि जे गत वर्ष माय संसार त्यागि देने छलथिन । पिता एखनो जीवित छथिन, मुदा सभ दिनसँ काशीवास करैत रहलथिन अछि । भूखन भाइक घर-गृहस्थीसँ लऽ देवता-पितर सभकेँ हिनक माइए देखैत छलथिन । तेँ भूखन भाइ भोज खाइते आबि रहल छलाह, भोज खोअयबाक प्रयोजन नहि पड़ैत छलनि ।

एहि बेर मातृनवमीसँ एक दिन पहिने भौजी जितियाक व्रत कयने छलीह । भूखन भाइकेँ आङन बजबाकऽ कहलथिन– 'काल्हि मातृ-नवमी थिकैक । एकटा अपन माइक निमित्त,एकटा अपन मातामहीक आ एकटा हमर माइक निमित्त अर्थात् तीन टा ब्राह्मण भोजन कराबऽ पड़त । हमरा जितिया व्रत अछि, पारणा दस बजेक बाद छैक । हम लऽर ताङर भऽ गेल रहब तेँ असिद्धेक ओरियान कऽ लियऽ । हमर भूखन भाइ जिहुलाह अवश्य छथि, मुदा खौकार नहि, तखन खाइत छथि प्रेमसँ से भात दालि हो, चूड़ा दही हो अथवा पूरी-तरकारी, सभमे समाने रुचि छनि ।

आइ भौजीक गप्प सूनि अस्सी मोन पानि माथपर पड़ि गेलनि । कनेक काल गुम्म रहि अकस्मात् वामा तरहत्थीपर दहिना हाथेँ चाट मारैत कहलथिन– एकेटा बाहरी ब्राह्मणकेँ नोँत देलासँ काज चलि जायत ।' भौजीकेँ प्रश्न सूचक मुद्रामे अपना दिस तकैत देखि कहलथिन– 'मुँह की तकै' छी । शास्त्रमे लिखल छैक एकटा दौहित्रकेँ भोजन करौला उत्तर एगारह टा ब्राह्मणकेँ निमन्त्रण देलाक फल होइत छैक । तेँ अपन नानीक निमित्त हम, अपन नानीक निमित्त बौआ ब्राह्मण भऽ जयताह, माइक निमित्त सुटकुनकेँ नोँत दऽ देबनि ।

भौजी टोकलथिन– 'ई तँ बुधिबधिया भेल ।'

भूखन भाइ कूदि उठलाह– 'बुधिबधिया अहूँ बुझैत छिऐक से जानि हमरा अपार हर्ष भेल । देखू, दुनियाँ भरिमे जे एतेक टा राज-पाट चलैत छैक से बुधिबधियेसँ । आइ काल्हि जे एतेक छौंड़ा सभ बी.ए. एम्.ए. पास करैत अछि से बुधिबधियेसँ, ई जे तस्कर सम्राट सभ लाखकेँ के पूछय, करोड़क करोड़ सरकारक आँखिमे छाउड़ झोँकि कऽ बुधिबधियेसँ एकट्ठा कयने छल आ सरकारो जे तस्करक एतेक टा लश्करकेँ सकपंज कऽ सकल अछि से एही बुधिबधियाक प्रसादेँ । दूरक बात जाय दियऽ, अहाँक बाप जँ ई बुधिबधिया नहि जनैत रहितथि तँ हमरा सन गुनमन्त वर एतेक सस्त भेटितनि ?

एहि बातपर हमर भौजी चर्खा जकाँ कतेक काल धरि रनरनाइत रहलीह तँ प्रत्युत्तरमे भूखन भाइ कहलथिन– 'जँ हँसिओमे अहाँक नैहरक नाम लियऽ की कचकचाइल बिलाड़ि जकाँ अहाँ धुरखुड़ नोचऽ लगैत छी ।'

भौजीक कहब छलनि– 'हँसी करऽ लेल हमही भेटैत छी ?'

भूखन भाइ कहलथिन– 'लोक हँसी ठट्ठा भाउजि, सारि, सरहोजि एहि सभक संग करैत अछि । हमरा भौजी छथिहे ने, सारि जन्मे ने लेलनि आ सरहोजि भेबे ने कयलीह अछि । तेँ भाउजि बूझी, सारि बूझी, सरहोजि बूझी, हमर तँ सभ किछु अहीं छी । एहि बातपर भितरे-भीतर भौजीकेँ गुदगुदी लागि गेलनि, मुदा उपरे-उपर झझकारि कऽ कहलथिन– 'भाय, भैंसुर लगा कऽ सौंपब अहींसँ होअय । अहाँ पुरुष छी की बाल

गोविन ?' एहिपर भूखन भाइ मुसकुरा उठलाह । आब दूनू दिसुक गरम लोहा नरम भऽ गेल । भौजी कहलथिन– 'अहाँकेँ तँ सभ साल कतहु ने कतहु नोँत भऽ जाइत अछि ।'

–'आरे ! ताहि ले' की करबैक । अपन आङनमे सबेर सकाल भोजन कऽ लेब आ नोँत कनेक बेर झुकाकऽ खायब । जखन नोँत दऽ देलनि तखन तँ टीक हाथमे आबि गेल से बुझबाक चाही ।

भौजीकेँ जेना तेना मनाकऽ भूखन भाइ अपन पेटी हथोड़लनि । एकटा दसटकही भेटलनि तँ हिसाब जोड़लनि तीन रुपैये पत्तल पर्याप्त भेल । बाजार लगमे अछि, चूड़ा-दही नहि, दही-चूड़ाक व्यवस्था कऽ लेब । प्रात:काल सुटकुनकेँ नोँत दऽ दसटकही लऽ बाजार विदा भेलाह तँ बलेल मामा नोँत दऽ गेलथिन । पहिने आध सेर चूड़ा, सेर भरि दही, पाव भरि चीनी प्रति ब्राह्मणक हिसाबेँ डेढ़ सेर चूड़ा, तीन सेर दही आ तीन पाओ चीनीक स्टिमिट बनौने छलाह, मुदा जखन बाजारमे तीन रुपैये सेर चूड़ा, साढ़े तीन रुपैये दही आ साढ़े चारि रुपैये चीनी कहलकनि तँ फेर कऽ हिसाब बैसौलनि– 'एक मुण्डपर सभ वस्तु मिलाकऽ पक्की पौने दू सेर कऽ पड़लैक, चूड़ा पानिमे फुललापर तँ दू सेर भऽ जयतैक । दू ड्यौढ़े तीन सेर कच्ची भऽ गेलैक । ओह ! मनुक्ख की हाथी थिक जे एक अढ़ैया खायत ? सेर भरि चूड़ा, डेढ़ सेर दही, पाओ भरि चीनी पर्याप्त बुझयलनि, से सब कीनि नओ बजैत-बजैत ब्राह्मण भोजन करा कऽ पाक भऽ गेलाह । अपना दोसरो ठाम नोंत छलनि तेँ ई तर्क दैत जे नानी तँ झुनकुट बूढ़ भऽकऽ मुइल । ओहि वयसमे पाव-डेढ़ पावसँ बेसी नहिएँ खाइत छलि होइति । हम ततबे खा लेब ताहीसँ ओकरा तृप्ति भऽ जयतैक तेँ अल्पाहारे कयलनि आ बटुक बच्चे छलथिन तेँ ओहो ततबे, बचलाह सुटकुन । दूनू कात दूनू बापुतकेँ एतेक थोड़ खाइत देखि लाजेँ ओहो ही भरि नहि खा सकलाह । ततबा सामग्री बाँचि गेलनि जे व्रतक उपरान्त भौजीकेँ सेहो अपने पेट टा लेल चूल्हि नहि फूकऽ पड़लनि ।

ब्राह्मणकेँ पान सुपारी दऽ अपने लोटा भरि पानि पीबि, पतरकी तौनी ओढ़ि सूति रहलाह । आङनवालीकेँ कहि देलथिन जे बलेल मामा बजाबऽ आबथि तँ कहा पठा देबनि जे बाध गेल छथि ।

बलेल मामा साढ़े दस बजे, फेर एगारह बजे आ तेसर बेर साढ़े एगारह बजे बजाबऽ अयलथिन । तीनू बेर एके समाद भेटलनि बाध गेल छथि । मातृ नवमीक ब्राह्मण भोजन पूर्वाह्नमे होयबाक चाही, तेसर बेर घुरतीमे इनारपर स्नान करैत निरसन मिसर भेटि गेलथिन । हुनके नोँत दऽ एम्हरे सँ भोजन करबैत गाम पर जाय देलथिन । अपनो भोजन कऽ दलानक चौकी पर पड़ि रहलाह ।

भूखन भाइ अहर-पहर ताकि, एखने स्नान कऽ आबि रहल छी से प्रतीत

करयबाक लेल भीजल धोती, अंगपोछा कान्ह पर लेने 2 बजे जुमलाह । देखिते देरी बलेल मामा तमाकू चुना एक चुटकी हिनको दैत कहलथिन– तीतल कपड़ाकेँ टाटपर पसारि कने उपरे चल आबह । भूखन भाइ सैह कऽ दलानपर अयलाह । बलेल मामा कहलथिन– ई पुरिबा देहकेँ चकोढ़ि लै'छै', कने दू हाथ डाँड़-पीठ पर चला दैह ।

भूखन भाइ पीठ ससारऽ लगलथिन । बलेल मामा बाध बोनक हाल-चाल, कोन खेतमे कोन जजाति केहन छह, से सब पुछैत साढ़े तीन बजा देलथिन । बीचमे हाथ ढील होइनि तँ कहथिन– होअह, एखन दबाबह, धोती नहि सुखायल होयतह ।

भूखन भाइकेँ डेन पाँखुड़ अखरि गेलनि तँ दबले स्वरेँ कहलथिन– मामा, आइ तँ हमरा... बलेल मामा बिच्चेमे गप्पकेँ लोकैत कहलथिन– हँऽ हँऽ, नोत देने छलियह मुदा ई सबेरे होइत छै' अपराह्नमे नहि । तोँ एहन बूड़ि छह जे कोदारि लेलह आ बाध चलि देलह । सुनह, जहिया नोंत रहय तहिया सबेरे सकाल नहा सूर्यकेँ अर्घ दऽ, चानन ठोप कऽ दरबज्जा पर बैसल रही । हम तीन बेर ताकऽ गेलियऽ तोँ नहि भेटलह, तखन निरसन मिसर नहाइते भेटि गेलाह । हुनके नोंत दऽ भोजन करा अपनो भोजन कऽ लेल । आङन जा मामीसँ पुछहुन बाँचल-खुचल जँ किछु होइनि तँ देथुन, नहि तँ अपने आङनमे खा लिहऽ आ हे, दोसर बेर जँ कतहु नोंत होअह तँ जे कहलियह अछि तहिना करिहऽ ।

[मिथिला मिहिर, 17 सितंबर 1974]



राशिफल

खिस्सा कहय खिसनी सुन भाइ मकड़ा,

जी-जान छोड़ि कऽ चारि टाङ ककरा ?

जित्तू पुछलथिन मित्तूकेँ । मित्तू कुर्सी आनि सोझाँमे रखैत जिज्ञासा भरल दृष्टिसँ तकलथिन तँ जित्तू बजलाह– 'बुझलही यरवा, एक सय डेढ़ नवका पैसा ठीक ।' कुर्सीकेँ कनेक आगाँ घुसकाकऽ ओहिपर बैसैत दोसर फरमाइस कयलथिन– 'यार, कनेक रवि दिनुक एकबार लाबह ।' तावत दृष्टि पड़लनि टेबुल पर पड़ल एकबारक गेँटपर तकरा ऊपरसँ पाँच टा हटबैत छठम 'भारतवर्ष'केँ ठामहिं पट्ट कऽ देखऽ लगलाह । दू मिनट ठोर पटपटौलनि– आइ आठ तारीख थिकैक ने ? हँऽहँऽ आइ शुक्र थिकैक, ठीके आठ तारीख । आजुक राशिफलमे हमरा लिखैत अछि सुभोजन, इष्टसाधन आ भ्रमण । सुभोजन वाह वाह ! एहि सप्ताहक आइ सबसँ उत्तम दिन । तोहर कोन राशि थिकह यार ?

मित्तू चाहक जोगाड़मे मस्त छलाह । स्टोभ, केटली, कप, तश्तरी, छन्ना, चम्मच, चाह, चीनी, कागजी नेबो, चक्कू, स्प्रीट, दियासलाइ एतबा सामान जुटाकऽ किछु छूटल तँ ने, से सोचिते अन्यमनस्क भावेँ उत्तर देलथिन– हमर राशि थिक सिंह । हँऽहँऽ मोन पड़ल । नाकपर हाथ दैत मित्तू बजलाह– 'पोकर... आ एक क्षण तर्जनी आङुरसँ दहिना कनपट्टीपरक केशकेँ कुड़ियबैत उठलाह आ दोसर कोठलीसँ पोकर आनि स्टोभ केँ पजारऽ लगलाह ।

तोरा लिखैत छह– 'भ्रमण, उदारता आ मित्र-प्रमोद ।' जित्तू बजलाह । मित्तू स्टोभमे पम्प दऽ मूड़ी उठौलनि तँ जित्तू कहलथिन– देखह, हमर इष्टसाधन यैह जे आजुक राशिफल कोनहुना अशुद्ध नहि हो । चाह पियाबह आ हरियरी छानह, बाह्यक्रियासँ निवृत्त भऽकऽ चलह कोम्हरोसँ घुमि आबी : कारण, भ्रमण हमर-तोहर दूनू गोटाक इक्वल (बराबरि) अछि । रहल हमर सुभोजन, से तकर जोगाड़ जँ तो धरा दैह तँ तोहर मित्र प्रमोद मङनीमे भऽ गेलह । जेँ हेतू दूनू यार संग रहब तेँ हमरा सुभोजनमे तोँ आ तोरा

मित्र-प्रमोदमे हम संग देबह । तखन रहि गेलह उदारता, से कनेक गुलकन्द आ चीनीक योग दऽ कऽ हरियरी छानि ऊपरसँ दू खिल्ली पुरना पान पिपरमिंटवला खोआ देह तँ ताहीमे उदारता मोजर दऽ देबह ।' जित्तू बजैत गेलाह आ तावत धरि जा धरि चाहक पानि खौलिकऽ फुफुआय नहि लागल । ओ बजितो जाथि आ एकबारक कोन फाड़ि, तकर टेमो बाँटि, कानकेँ कुकुअवितो जाथि ।

मित्तू छथि स्केललेस बेसिक ट्रेण्ड । मतलब ई जे कोनो बेसिक ट्रेनिंग कालेजसँ डिग्री नहि पौने छथि तेँ स्केलमे तदनुसार बेतन नहि पबैत छथि मुदा बरतन मँजनाइसँ लऽकऽ चुलहा निपनाइ घरिक काज ओ अपने हाथेँ करैत छथि । बेसिक ट्रेण्डक योग्यतामे आर विशिष्टते की जे ओ अपनाकेँ ओहिसँ कनेको झूस मानथु ? जेना कोनो दूरसँ माल लादि अननिहार बहलमान कोनो बड़ वा पीपर वा पाकड़िक झमटगरहा गाछतर छोलनीसँ चुलहा कोड़ि, भानस-भात कऽकऽ खा-पीबि, तसला तुसली माँजि-मूँजि आगाँ यात्रा करैत अछि, तहिना दूनू यार चाह पीबि केटली, कप, तश्तरी, चम्मच, छन्ना धो-माँजि यथास्थान लगौलनि आ मित्तू सिलौट खसा हरियरीक व्यवस्थामे लागि गेलाह । जित्तू ठामहि गम्हरिया पिड़ही खसाकऽ बैसैत अपन चर्खी औंटऽ लगलाह- आइ ककर माथा हाथ देबाक चाही कवि, लेखक, सम्पादक, शिक्षक, विद्यार्थी ई सब दरिद्र होइत अछि; प्रोफेसर, ओकील, डाक्टर, प्रकाशक, ठीकेदार अथवा कोनो गुदगर संस्थाक मंत्री- एतबा गोटामेसँ क्यो हाथ लागि सकैत अछि । बनियाँ क्लास तँ हाथ लागऽवला जीव थिके ने । कहऽ यार, आजुक राशिफल कोना शुद्ध हो ? ककरा मूड़ल जाय ?' मित्तू जावत काल धरि हरिअरीक जोगाड़मे लागल रहलाह तावत जित्तू एक दिससँ नजरि दौड़बैत चल गेलाह । मुदा कतहु पूर्ण प्रकाश भेटबे ने करनि । मित्तू भाङकेँ अभिमन्त्रित करैत बजलाह तोँ एना खुरछाही किएक कटैत छह । आइ एहन लोकक माथा हाथ देबाक चाही जे कवि, लेखक प्रोफेसर आ कोनो संस्थाक मन्त्री रहितो कोनो बनियाँक कान कटैत हो । जँ कोनो उदार व्यक्तिक माथपर बिसा गेलहुँ तँ कोन बहादुरी ? आइ तेहन लोककेँ ताकह जे जल्दी हाथ लागऽवाला नहि हो ।

बाह्य क्रियासँ निवृत्त होइत दूनू यार अपन आशा-सोटा सम्हारलनि आ चलल जित्तू-मित्तूक चरनदासक रिक्सा ज्योतिषी श्री फल्लाँ झा द्वारा घोषित राशिफलकेँ शुद्ध सिद्ध करबाक हेतु ।

सर्वप्रथम पदार्पण कयलनि प्रोफेसर श्री डमरूनाथ झाक डेरापर, परन्तु हुनक षट्वर्षीय बटुक आङनसँ कुदैत बहरायल आ' कहलकनि- 'बाबूदी पतना गेल थथि ।' मित्तू तकलथिन जित्तू दिस आ जित्तू निचला ठोरकेँ मोड़ि तर्पण करऽवला अर्घीक आकार बनबैत एहनसन भाव व्यक्त कयलनि- एक टा की यैह टा छथि ? चलह आगू । पुनि ई चतुष्पद बढ़ल आगू ।

ई थिकाह उत्तुंग-शृंग प्रेसक व्यवस्थापक श्री नीलोत्पलोद्भव वर्मा । बड़ हँसमुख बड़ चतुर । वाक्‌चातुरीमे ई कतेक लीडरोक कान कटैत छथि । जित्तू ओ मित्तू केँ अपने प्रेस दिस गुड़कल अबैत देखि ओ कुँजी झब्बा लऽकऽ चटपट प्रेसक फाटक बन्द करबबैत बड़बड़ाइत बहरयलाह– ई शहर की रहत, देहातोक मातामही थिक । आजुक मकान किरायासँ लऽ कऽ मशीनमैन, कम्पोजीटर सभक दरमाहा घरसँ लागल ।' ओ ततबा जोरसँ बाजि रहल छलाह जाहिसँ जित्तू-मित्तूक कान धरि ई शब्द स्पष्टतः पहुँचि जाइनि । मित्तू तकलथिन जित्तू दिस । जित्तू नाकक दूनू पूड़ाकेँ सिकुड़ियबैत मुँह केँ तेना कोँचियौलनि जेना तमाकूक बटुआक फूजल मुँह केँ डोरी खीचि क्यो बन्द कयने हो । भावभंगिमा एहन सन जे किछु करथु, एकदम छुच्छे छोड़ि नहि सकैत छियनि । नहि किछु तँ चरनदासक रिक्साक हेतु सन-तेलमे तावत दू खिल्ली पाने सही आ डेग झाड़लनि जोरसँ । प्रेससँ दसे डेग आगाँ पानक दोकान लग पहुँचल होयताह कि जित्तू पाछासँ नमस्कार कयलथिन 'वर्मा– जी... वर्मा जी ! जय स्वदेश, कहल जाय हाल चाल ?'

वर्मा जी एहन सन क्रमपात बनौने जे हम तँ अहाँ सबकेँ देखबे ने कयने छलहुँ । लग पहुँचैत देरी ओ दुनू तरहत्थी ओ पाँचो आङुरकेँ सोझ कऽकऽ जोड़ैत माथ एना झुकौलनि जेना कोनो हफाह माल लग आयल नेनाकेँ देखि हफैत अछि– 'नमस्कार नमस्कार, आउ, आउ, कुशल क्षेम, कलम चलैत छैक की नहि ?' एतबा कहैत वर्माजी अपन विनम्रतापूर्ण शिष्टाचार देखबैत मनक खौँझाहटिकेँ झँपबाक हेतु दाँत चियारि हँसबाक अभिनय कयलनि ।

जित्तू बजलाह– 'हम तँ बीस-बाइस दिनसँ पटने दिस छलहुँ, एमहर तीन गोट उपन्यासक पाण्डुलिपि पछुआ, गेल छल तकरे सभकेँ भसबऽ गेल छलहुँ । अहाँ अपना ओहिठामक कुशल क्षेम कहू । बड़ सबेरे प्रेस बन्द कऽ देलिऐक ? काज धंधा भेटैत अछि कि ने ?' एतबा कहैत जित्तू पानवाला दिस तकलनि आ लाज-पच्छ पान खोआकऽ छुट्टी पयबाक विचारेँ वर्माजी छौ खिल्ली पान लगयबाक आदेश दैत कहलथिन– 'छोटका बचबाक आँखि उठि गेल छैक से कने डाक्टर श्रीमोहन बाबूक ओतऽ लऽ जयबाक अछि । आँखिक हकमे तँ एहन विलक्षण डाक्टर दोसर भेटब कठिन । भरि दिन-भरि राति किकियाइत रहैत अछि । धीयापुताक दुखसँ अपने दुख नीक... तावत पानवला छौ खिल्ली पान लगा हाथ कऽ देलकनि । पान बाँटि दू खिल्ली अपनो कल्लातर दैत दुअन्नी जेबीसँ बाहर कऽकऽ दोकान पर फेकैत जर्दाक डिब्बासँ जर्दा झाड़ऽ लगलाह । ओ दुअन्नी पितड़िया पीढ़ीपर झन दऽ बाजल आ ओही शब्दक संग जित्तूक आँखि कुदैत दुअन्नीक संग नीचाँसँ ऊपर आ पुनि ऊपर नीचाँ अयलनि । वर्माजी चून लैत अधन्नी फिरता लेबाक हेतु जिज्ञासु दृष्टि पानवला दिस उठौलनि तँ जित्तू बाजि उठलाह– 'पुरना पानक खिल्ली तँ ततनी टा होइत छैक जे दाँतक गहेमे सन्हिया जाइत छैक, लाबह रामकिसुन, दू खिल्ली

पाने आरो दऽ दैह । वर्माजी अधन्नीसँ निराश होइत आज्ञा लेबाक मुद्रामे हाथ जोड़ैत दाँत खिसटलनि आ चलि पड़लाह ।

मित्तू तकलथिन जित्तू दिस । जित्तू दूनू ठोरकेँ मोड़ि मुहक भीतर दिस कोँचियबैत दूनू भँहुके कपारपर उठाकऽ लऽ गेलाह । भाव ई जे दू नहि... चारि... यल्लब्धं तल्लब्धं । मित्तू कहलथिन– आब ज्ञान मन्दिरक प्रकाशक सर्वदानन्द जीक ओतऽ चलबाक चाही । एहि कोइला-पानीसँ ई घटही गाड़ी ओतेक दूर धरि नीक जकाँ पहुँचि सकैछ ।

सर्वदानन्दजी स्वयं सर्वनेजा छथि आ हुनक दोकान सेहो सर्वनेजा छनि । ओ अपने लेखक, प्रकाशक, विक्रेता, संस्था सभक मंत्री, राजनीतिक दलक सदस्य, नगर, जिला, प्रान्त, देश, विदेश सब ठामक राजनीतिसँ सम्पर्क रखैत, ताहि परसँ साहित्यिक छथि । सर्वोपरि गुण हुनक ई छनि जे चमड़ी भने गमा देथि, मुदा दमड़ी हुनकासँ क्यो झीटि लेथिन से परम असंभव ।

हुनक दोकानमे पोथी, पतड़ा, कलम, मोसि, पेन्सिल, कागत, कौपी, पैड, औजारबक्स, कलेण्डर, लेखक, कवि आ देवी-देवताक फोटो– जे चाही से कीनि सकैत छी । अपने बेचारे शरीरेँ बड़ दुर्बल छथि । कोनो महन्थानक बड़का टोकनाकेँ औन्हि दियौक आ फीता लऽकऽ नापि लियऽ तँ ओकर पेन आ हिनक पेटमे पाँच सात ईंचक अन्तर भेटत, मुदा ई भ्रम अहाँकेँ नहि होयबाक चाही जे पेटसँ पेन पैघ भऽ सकैत छनि । पीठ हुनक दू सै वर्ष पुरान गम्हारिक पीढ़ी सन चौड़गर, आङुर देखि अहाँकेँ निश्चय बुझि पड़त जे उपेन्द्र महारथी जँ देखथि तँ बहुत किछु प्रेरणा प्राप्त कऽ सकैत छथि । एहन क्षीणकाय व्यक्तिक शरीर पर बड़की भाँटिन सन मूड़ी देखि अहाँके छगुनता नहि होयबाक चाही : कारण, विधाताकेँ सानल माँटि सठि गेलनि आ हिनक जन्मक निर्धारित समय पहुँचि गेलनि तँ ओ की करितथि ? नाक तँ हिनकर आर विलक्षण छनि जेना आत्माक बनाओल कार्टून हो ।

जित्तू-मित्तूक बिनु पेट्रोलक चलऽवला चरणरूपी मोटरकार ससरल सर्वदानन्द जीक स्वागत-सत्कार स्वीकार करबाक हेतु । दोकानपर सर्वदानन्दजी अनुपस्थित छलाह । ई समाचार सुनैत देरी जित्तूक मुखाकृति भऽ गेलनि जेना शूलवाहि रोगसँ आक्रान्त कोनो रोगीक पेटमे दर्द उठि गेल होइक अथवा कोनो पक्की चीज गौनिहार 'हाइ क्लास'क गबैया सितारक सुर मिलाकऽ नाद शुद्ध करबाक हेतु पहिल तान अलापने होथि । किंकर्त्तव्यक भावसँ जित्तू तकलथिन मित्तू दिस आ मित्तू चुट्ट दऽ चुटकी बजबैत कूदि उठलाह– 'यार एकटा रस्ता हमरा सुझैत छौक । ओना अछिए सर्वदानन्द जी बड़ भारी मक्खीचूस, मुदा प्रेस-युनियनक सेक्रेट्रीक चुनाव मे ओ जीतल अछि, पट्टी मारि तकर जलसा असुलबाक चाही । चल डेरे दिस, भला ज्योतिषीजी सन लोकक लिखल राशिफल कतहु अशुद्ध होइक ? हमरा विश्वास नहि होइत अछि । चल, डेरेपर धावा करक चाही । एम्हर लिखऽ लागल छथि प्रयोगवादी लघुकथा । जँ धैर्य होउक आ दू तीन

टा कथा सूनि लहीक, तखन जलपान बिनु असुलने कथमपि नहि घूरि सकैत छियनि। मित्तू तकलथिन जित्तू दिस आ जित्तूक मुखाकृति भऽ गेलनि जेना भरि सितुआ तेतरिक खटमिट्ठी अचानकमे क्यो मुँहमे राखि देने होइनि।

चलल जित्तू-मित्तूक चरिपहिया ट्रक टन टनाइत, सन-सनाइत, हन-हनाइत, फन-फनाइत... नहि नहि... गनगनाइत स्वस्ति सर्वोपमा योग्य स्वागत सत्कार शिरोमणि, सकल सुख शोषक, सरङपताली नयन सम्पन्न समुन्नतोदर श्रीमान सर्वदानन्द जी सेक्रेट्री साहित्य-सदन दिस। बाट मे सुनलनि जे सर्वदानन्दजीक बालककेँ डिप्टी इन्सपेक्टरक स्थान भेटि गेलनि अछि। ई दूनू खबरि सुनि जित्तूक मुँहमे पानि भरि अयलनि से ढब दऽ एक पैघ बुन्द नीचा खसि पड़लनि। चारूकात तकैत ओ अपन ठोर पोछैत बजलाह— ज्योतिषीक बुद्धि ब्रह्मा अपना हाथेँ बसिलासँ छेबिकऽ बनौने छथिन, भला हुनक लिखल राशिफल कोना अशुद्ध भऽ सकैत छनि ?

जित्तू तकलथिन मित्तू दिस आ मित्तूक मुखाकृति भऽ गेलनि जेना अन्हरौखे तोड़ल ओढ़ूलक फूल डालीमे पड़ल रौद उगलापर भकराड़ भऽ जाइत अछि। कहलथिन— 'यार, एतेक संयोग एकट्ठा भेलोपर जँ जलपाने मात्र भेल तखन राशि फल नहि मिलल। हम तँ आइ भानसो कखन करब ताही चिन्तामे डूबल छी। राशिफलमे सुभोजन लिखल छह, सुभोजन माने जलपान तँ नहि होइत छैक।

संयोगसँ सर्वदानन्दजी डेरापर नहि छलाह जित्तू आङन समाद पठबा देलथिन जे बौआकेँ नौकरी भेटि गेलनि आ एमहर दौहित्रक जन्म भेलनि से बहुतो मित्र एहि उपलक्षमे दोकानपर पहुँचल छथिन तेँ जल्दीमे दस टा निमकी, थोड़ेक खजूर, थोड़ेक हलुआ, दस टा कचौड़ी, कोनो रसगर आ किछु भूजल आ किछु तरल तरकारी जतेक शीघ्र भऽ सकनि तैयार कऽ कऽ राखऽ कहलथिन अछि। घरक आम जँ सठि गेल होइनि तँ दस टा आम बजारसँ मङबाकऽ राखक लेल सेहो कहलथिन अछि।

आङनमे जलपान बनऽ लागल। शुद्ध घृतक सुगन्ध जखन जित्तूक नाक धरि पहुँचऽ लगलनि तँ भीतरसँ उत्साह बढ़ल जाइनि। अपनासँ झूस जोड़ीकेँ देखि जेना कोनो कचकूह पहलमान अखाढ़ापर जल्दी-जल्दी डंड बैसकी करऽ लगैत अछि, तहिना जित्तूक मोनमे अनेक पदार्थक रसास्वादनक कल्पना डन्ड-बैसकी करनि। एक घंटाक बाद सर्वदानन्दजी डेरापर पहुँचलाह। मित्तू सोचलनि जे जँ ई आङन दिस चल गेलाह आ पहिने भंडा फूटिगेल तँ यात्रा ओहिना बिगड़ि जायत जेना कोनो अलच्छ लोकक मुँह देखि उठला सन्ताँ भोजन बिगड़ैत अछि। तेँ सर्वदानन्दजीकेँ पहुँचैत देरी ओ चट नमस्कार-पात करैत शुभाशंसाक दू-चारि शब्द दोखड़ि देलथिन। आ जित्तू चट प्रस्ताव रखलनि जे सुनलहुँ अछि, एमहर लघुकथा सब बड़ विलक्षण लिखलहुँ अछि। आइ बिनु सुनने नहि जा सकैत छी। बहुत काल प्रतीक्षा कयलहुँ, आब अधीर भेल जा रहल छी।

सर्वदानन्दजी मनेमने अपनाकेँ धन्य बूझऽ लगलाह जे हमरो रचना सुनबाक हेतु लोक एना लालायित रहैत अछि । ओ आङन जयबाक सुधि बिसरि गेलाह आ अनलनि अपन बोरा-बस्ता एक दू तीन लघु कथा बाँचि गेलाह । बीच-बीचमे कोनो-कोनो पाँतीपर ई दुनू यार वाह, सुन्दर, विलक्षण, किएकने हो, आदि टिप्पणी दैत जाथिन । ओ कृतकृत्य भेल जाथि ताबत आङनसँ छोट नेना कहैत अयलनि– 'बाबूजी जलपान तैयार अछि ।' सर्वदानन्दजी ई समाचार सुनि चौँकलाह, मुदा जित्तू चट गप्पकेँ लोकलनि– 'अहाँ छलहुँ नहि आ सुनलहुँ जे अहाँ प्रेस युनियनक सेक्रेट्रीक चुनावमे बहुत बेसी मतसँ प्रतिद्वन्द्वीकेँ पछाड़लहुँ अछि, बाटमे दोसर समाद तेसर समाद सुनैत डेरापर पहुँचलहुँ जे बौआ डिप्टी इन्सपेक्टर भऽ गेलाह, दौहित्रक जन्म भेल अछि तेँ हम मनेमन सोचलहुँ जे अहाँ जखन पहुँचब तँ एतेक खुशखबरीमे बिनु जलसा देने आबऽ नहि देब, तखन विलम्ब होयत से कथी लेल, तेँ बौआक मायकेँ जलपान बनाकऽ रखबाक समाद पठा देने छलियनि । मित्तू ताहिपर टीप देलथिन जे हमरा दूनू यारक राशिफलमे मित्र प्रमोद आ सुभोजन लिखलो छल ।

सर्वदानन्द जी अवाक्, हिनक दूनू गोटेक मुँह तकैत रहलाह आ ई दुनू यार कुर्त्ता फोलि टनटनाकऽ ठाढ़ भऽ गेलाह । दस व्यक्तिक जलपानसँ कोनहुना दुनू गोटे राशिफल मिलौलनि । ओमहर ई दूनू गोटे मारथि आममे चोभा आ सर्वदानन्दजीकेँ लघुकथा सुनयबाक 'मूड' स्मरण कऽ कऽ होइनि जे अपना मुँहमे अपने थापड़ मारी ।

जित्तू तकलथिन मित्तू दिस । मित्तू कहलथिन– 'कहह, तोहर बात ठीक की हमर ? जित्तू कहलथिन– 'हमरा तँ सुनल छल जे फल्लाँ झाक राशिफल नहि मिलैत छनि आ सर्वदानन्दजी परम कंजूस लोक छथि, मुदा आइ निश्चय भऽ गेल जे ई प्रचार कयनिहार एक नम्बरक फुसियाह अछि ।

[मिथिला मिहिर, 25 सितंबर 1960]



झपासा

पैंतालिसम बरख पुरैत-पुरैत इलियास फेर विधुरक जीवनमे पहुँचि गेल । असलमे एहि बेरक घटनासँ विधुर नहि कहल जा सकैछ, मुदा भोगि रहल छल विधुरेक जीवन ।

एक टा हाइस्कूलमे इलियास दफतरीक काज करैत छल । महगी भत्ता सहित सत्ताइस टाका वेतन भेटैत छलैक । पहिल स्त्री रहैक रोगाहि । औषधिबाड़ी करैक अवश्य, मुदा ओकाइतसँ बाहर जयबाक अभ्यास नहि लगौने छल । तेँ चुटुक्का-फुटुक्का जे जतऽ कहैक से अवश्य करैत छलैक । एक दिन ससुर अयलैक आ खिसियाकऽ बेटीक विदागरी करौने चल गेलैक, से घुरिकऽ कहियो नहि अयलैक । इलियास सेहो ओकर पुछारि करबाक बदलामे दोसरे लड़कीक खोज करब केँ जुगलतगर बुझलक ।

कमौआ छले, दोसर समन्ध करबाक हेतु बेसी तरद्दुत नहि करऽ पड़लैक । ई मौगी जेहने काजुलि भेटलैक तेहने फरहरि, मुदा खुदामियाँकेँ एकर सुख नहि देखल गेलनि । टोलमे हैजा पसरलै, दू बरख नहि पूरल रहैक, ताहीमे ई स्त्री चलि बसलैक । एहि बेर बहुतो दिन धरि ओकर वियोगमे मजनू बनल रहल । फेर टोल-पड़ोस, हीत-महिम लोक सब कतेक बुझौलकै-सुझौलकै तखन तेसरो बेर समन्ध कबाक हेतु राजी भऽ गेल ।

संयोगसँ एहि बेर स्वस्थ ओ सुन्नरि बीबी भेटि गेलैक । मघारिमे वर्षा भऽ गेला पर जेना मरहन्ना रब्बीक जजातिमे हरियरी आबि जाइ छै' इलियासक जिनगी तहिना हरिया गेलैक । एहि प्रसन्नतामे स्टाफकेँ चाह बिस्कुट आ दू खिल्ली कऽ पान जलसो देने रहैक। मुदा ई मौगी रहैक चमचिकनी । ओकर फरमाइस पूरा करैत-करैत इलियासक डँड़ाडोरि ढीलि होअऽ लगलैक । तैयो दामी नूआ, कान, गर्दनि, पहुँचा लै सोना चानीक गहना गुरिया कीनिए देने रहैक । बरख पुरैत-पुरैत एक दिन चुप्पे चाप गहना-गुरिया, नूआ-फट्टा लऽ निपत्ता भऽ गेलैक । रहि तँ गेल छाती मुक्का मारि कऽ मुदा फेर भऽ, गेल नाढ़ा वसन्त ।

एमहर चारि पाँच दिनसँ स्कूलसँ छुट्टी लेने छल । तकर बाद जे आयल तँ नवके

अंगा-टोपी पहिरने, मुँह हरिआयल । पुछलिऐ– दफ्तरी साहेब कतऽ डुब्बी मारि देने छलिऐ ? देखैत छी मुँह-कान चिकनायल ।

उत्तर देलक– अइसे तो तीनपन बिताइए लिया, मगर चौथापनमे अकेले जिनगी बितानेमे मोसकिल होअऽ हइ ।

पुछलिऐ– की फेर कोनो बझौलहुँ ? इलियास मुस्कुराइत कहलक– हजूर, एमरी दा एकदम झपासा दे के काम निकाल लेली । लड़की वाला पुछिस कि आप कौन इसकूलमे काम करते हैं और केतना तनखाह मिलता है ? हजूर, हम ऐसा झपासा मारे कि ससुरे बिलकुल चित्त हो गये ।

''की झपासा देलहक ?

इलियास कहलक– हम बोले, हम जइमे काम करते हैं ऊ इसकूल नहीं, एकेडमी हय आउर तनखाह नहीं, स्केल मिलता है, ऊ भी रुपैयामे नही, एन.पी.मे मिलता है । सब को सेलरी अलग-अलग हय । हमको साढ़े चार हजार एन.पी. सेलरी मिलता हय । हजूर एतनेमे ओकरा आउर का आँखे चौंधिया गेलइ आ तुरत सगाइयो करा दिया । असीरवाद दीजिए कि एहू मौगी का हमरे जरे तवीयत लग जाइ ।

[मिथिला मिहिर, 28 अप्रैल 1974]



बगड़िया ककाक फगुआ

एहि बेर डेढ़ वर्षपर कलकत्तासँ नेयारिकऽ फगुआक छुट्टीमे गाम पहुँचलहुँ । गामक सिमानपर पैर दैत छी तँ बगड़िया कका अपना नारक टाललग ठाढ़ भेल एक पँजौरी नार टालमेसँ घिचने छलाह आ दोसर पँजौरी जे एक पाँज पुरयबामे घटी छलनि से पुरयबासँ पहिने प्राय: दूरमे एक्कापर चढ़ल अबैत हमरा पर आँखि, एक्कामे जोतल घोड़ाक गराँमे बान्हल घुघरूक घनघनीसँ आबिकऽ अँटकि गेल छलनि से टकटकी लगौने हमरे देखि रहल छलाह । उतरिकऽ चट दऽ गोड़ लगलियनि तँ आशीर्वाद दैत बजलाह– बुझलह भातिज, बासठिमे ग्रह बितलापर अपनालोकके‌ँ देखैत छिऐक तँ मोनमे खुशीसँ गुदगुदी लागि जाइत अछि ।

हम पुछलियनि– बगड़िया कका, कहू अष्टग्रह लोक कोना खेपलक ? अपना गाममे कोनो यज्ञ–जाप, पाठ–पूजा, अनुष्ठान–कीर्त्तन से सभ भेल की नहि ? हमरालोकनि तँ कलकत्ताक गलियारीमे रही, से बुझू प्राण उपरे रहय, ताहूमे जखन एकबारमे पढ़िऐक जे भऽ सकैत अछि भूकम्प हो, अगिलग्गी हो, बाढ़ि आबय, बिहाड़ि आबय, कोनो बड़का नेता मरथि, युद्ध होअय, रक्तक नदी बहय तँ आन बातक ओतेक डर नहि होअय, खाली पछिला भूकम्प जे मोन पड़य तँ कही जे जँ कनेको डोललैक तँ कलकत्ताक एही गलियारीमे लाश सड़ि जायत, गामक लोक बुझबो ने करत जे जीबैत छी की मरि गेलहुँ ।

बगड़िया कका सन्दिग्ध दृष्टिएँ तकैत छलाह जे हमर दृष्टि कतहु नारक टाल दिस तँ ने गेल अछि । कारण जे हमर बगड़िया कका भरि टोलक लोक जाहि ठाम नारक टाल लगबैत अछि ताही ठाम अपनो टाल लगबैत छथि । ताकि–हेरिकऽ सवा सोड़हि, डेढ़ सोड़हि नार हुनका होइत छनि, ताहिमेसँ भरि साल अपना बड़दके‌ँ खोअबैत–पियबैत गोटेक सोड़हि कतिकामे बँचि जाइत छनि से बेचि लैत छथि आ मालगुजारीसँ छुट्टी पबैत छथि । आब तँ अहाँ अवश्य बूझि गेल होयबैक जे ओ हमरा दिस सन्दिग्ध दृष्टिएँ किएक तकैत छलाह । ओहि दिन ओ हमरे टालमेसँ नार घिचने रहथि । ओ साल भरि एहिना

सभक टालमेसँ घीचि-घीचि खोअबैत छथि आ जँ क्यो देखि लेलकनि तँ ओकरा टोकबासँ पहिने डाँटि लैत छथिन– तकैत छी की ? अहाँमेसँ नहि घिचलहुँह अछि, हमरा भगवान अपने टाल देने छथि । मुदा हम तँ अपने टेढ़ बरखपर गेल छलहुँ तेँ हमरा कोन पता जे हमर टाल कोन थिक । अन्यमनस्कताकेँ हटबैत बगड़िया कका बजलाह– हौ भातिज, अपना गाममे तँ टोले-टोल फराके-फराके यज्ञ-जाप, कीर्त्तन-हवन भेल । एहूमे चढ़ाखढ़ी, रीसा-रीसी, फल्लाँ टोलबला शतचण्डी कयलनि तँ अपना टोलमे सहस्र चण्डी करब । रमपतिया अपना टोलमे अष्टयाम कीर्त्तन कयलक तँ चन्नू मड़र अपना टोलमे नवाहे ठानि देलक, मुदा एहि बासठिमे कोनो ठाम आयुर्वेदिक, कोनो ठाम होमियोपेथी आ कोनो ठाम एलोपेथी कीर्त्तन-हवन भेल अछि ।

हम पुछलियनि– दवाइ तँ सुनने छलिऐक आयुर्वेदिक एलोपेथी मुदा पूजा-पाठ कोना...

बगड़िया कका हमरा मुँहक गप्प लोकैत कहलनि– बुझलह नहि, पद्धतिक अनुसार शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लाखमहादेवक पूजाकेँ हम आयुर्वेदिक बुझैत छिऐक आ नवाह, रामार्चापूजा एहि सभमे ढोलो ढाक बाजल, नाचो गान भेल आ पुष्ट कऽ परसादो भेटलैक तेँ ई होमियोपेथी भेल आ कीर्त्तन– एकछाहा कीर्त्तनमे चौबीसो घंटा चिचिआइत रहू, ताहूमे एक बजे रातिसँ तीन बजे राति धरि जनिकालोकनिकेँ पार पड़लनि तनिकर मुँह ओहने भऽ जाइत छलनि जेना कोनो मिक्चर पीलाक बाद होइत छैक, से भेल एलोपैथी आ एक टा बात आरो...

हम मुस्कुराइत पुछलियनि– से की ?

बगड़िया कका बजलाह– डाकदरक ओहि ठाम देखाबह जाह तँ ओ एकटा सुइ, एकटा पोडर सभ तरहक दवाइ दऽ देतह । से एहि बेर कीर्त्तन करैत छल लोक तँ कहैत छलैक– जय रघुनन्दन जय घनश्याम, गौरी शंकर जय हनुमान ।

एकटा देवताक भरोसेँ रहलापर कदाचित् बासठिमेसँ 'बा' छँटि ने जाय तखन तँ सठि जायब । तेँ एकरा हम ऐलोपैथी कीर्त्तन कहैत छिऐक । हमरा मुस्कुराइत देखि फेर कका बाजऽ लगलाह– हौ, धन्न ई बासठि जे देहपर मासु देखैत छह । अपने अनुष्ठानमे हविष्य खाइत छलहुँ आ लत्ता-कपड़ा टाका-पैसा लबैत छलहुँ तँ परिवार चलैत छल, ने तँ अगहन तँ एहि बेरुक गर्दनिएँ काटि लेलकैक, एको सेरक कट्ठाक हिसाबसँ होइतैक तँ कहबा लेल अगहन होइत । आ ताहिपरसँ देशक बड़का माथ-पाग बला नेता ठाँहि-पठाँहि लोककेँ मूर्ख कहि देलथिन । हमरा तँ लोक कहैत छल जे अष्टग्रहमे नहि किछु भेलैक तँ सभ पण्डितकेँ पकड़िकऽ भकसी झोंकि देतैक सरकार । भला कहऽ जे लोक दुखित पड़ैत अछि आ डाकदरक ओहि ठाँ जाइत अछि, दबाइ दारू करैत अछि

तइयो जँ रोगी मरिए जाय तँ तखने लोक बुझतैक जे डाकदर खूब दवाइ देलथिन ? मुदा राज तँ सरकारेक थिकैक तेँ हम तँ अपना घरक पाँचो जोड़ धोतीकेँ सोडरमे उसीनिकऽ पीरा रंग झाड़िकऽ रखने छी जे कदाच तलाशी लैक तखन तँ मोफतमे फाँसी पड़ब।

हम कहलियनि– एहन कतहु होइक कका, करोड़क करोड़ लोक जे एतेक यज्ञ-जाप कयलक अछि तकरा भकसी झोंकि देतैक से भकसी झोंकब ठट्ठा थिकैक ?

''आहि तोँ कहैत छह ठट्ठा थिकैक, हओ, आन जँ मूर्ख कहने रहैत तँ छाउड़ लगाकऽ सट्ट दऽ जीह खीचि लितिऐक, मुदा एहि कलियुगमे तँ नेते लोकनि देवता थिकाह। हमरा लोकनिकेँ तँ एकर प्रायश्चित्त करहि पड़ल।''

हम पुछलियनि– से की बगड़िया कका ?

'आहि बा... हओ, आठ ग्रह जखन कटल तखन नवम ग्रह आयल ई भोट। भरि दिनमे पचीस गोटे आबय जे हमरा भोट दियऽ तँ हमरा भोट दियऽ। ककरा की कहियौक से फुरबे ने करय; एहि सभमे मकुन्द चरफर छथि। हम पहिने तँ यैह कहलिऐक जे औ बाबू, एहि बेरूक भोट तँ हम मुकुन्दकेँ दऽ देलियनि, आब अगिला बेर जे पहिने कहब तनिके देब। तँ ओ हँसिकऽ कहलक जे एहि बेर मुकुन्द बाबू नहि ठाढ़ छथि। ओ तँ मुखियाक चुनावमे ठाढ़ छलाह।''

'हमरा यैह बाट सूझल, –बगड़िया कका गप्पकेँ आगाँ बढ़ौलनि– 'हम कहलिऐक बस, बस, मकुन्द बाबू मुखिया छथिहे, ओ जे कहताह से हमरालोकनि करब।'

हम पुछलियनि– ओ कोन पार्टीक लोक रहय ?

'हौ, एकटा बड़द पार्टी आयल तँ कहलक जे बड़दपर छाप मारिकऽ भोट दियऽ। हम कहलिऐक जे हमरा एकेटा बड़द अछि आ ओहूपर छाप मारिकऽ हम अहाँकेँ भोट दऽ देब तँ हम अपने बिलटि जायब। एक तँ अपने बेचाराकेँ एहि बेर चारा नहि भेटि रहल छैक, अगहन भेल नहि, नार-पोआर कहाँसँ होइत, गाममे परती-पराँत रहल नहि, बाँसक बीट क्यो आब छूबहि ने दैत अछि, गूँड़ा दिऔक से कलबला गूँड़ा बिनु छोआक खाइते ने अछि।

'एक टा गाछबला आयल। ओ कहलक गाछपर छाप मारिकऽ हमरा भोट दियऽ।

'ओकरा की कहलिऐक बगड़िया कका !' हम पुछलियनि।

'कहलिऐक– बाप-पुरखाक रोपल किछु गाछ छल जरूर, मुदा से सभ कोशी मैयाक कृपासँ सुखा गेल। आब अपने रने-बने पात खड़रने फिरैत छी, तखन एक नव गछुली कटहर अछि से बाबू माफ करू, ओहिपर छाप नहि मारल होयत।

'एकटा साइकिल बला आयल तँ ओ कहलक जे साइकिलपर छाप मारि कऽ हमरा भोट दियऽ । हम कहलिऐक– हम अपने तँ जिनगीमे साइकिलपर ने चढ़लहुँ ने रखलहुँ, तखन बौआ कालेजमे पढ़ैत छथि, बियाह नहि करौलियनि अछि, हुनका वियाहमे साइकिल देबे करतनि, तखन वरू अहाँ आयब तँ ई जे एखन झरपटही साइकिल कीनि देने छियनि ताहिपर छाप मारिकऽ अहाँकेँ भोट दऽ देब ।

हम कहलियनि– बगड़िया कका, अहाँ तँ अपूर्वे उत्तरसभ देलियनि सभकेँ । आरो लोक आयल रहय ?

ओ बजलाह– 'आरे, सुनह तँ पहिने हमर सभ बात । एकटा झोपड़ी बला पहुँचल तँ कहलक जे झोपड़ीपर छाप मारिकऽ भोट दियऽ । हम कहलिऐक– औ बाबू, हमरालोकनि भेलहुँ पुरान लोक । एखनो माथ देखि सकैत छी, कनेक केश पैघ होइत अछि तँ केश कुटकुट काटऽ लगैत अछि, तखन नेनालोकनि बड़ी-बड़ी झोपड़ी बढ़ाकऽ रखने छथि, हुनकालोकनिकेँ कहियौन ।

सभसँ आखरीमे पहुँचलाह एकटा दीप वला । हुनका कहलियनि– सभसँ सोझ बात लऽकऽ अहाँ अयलहुँ अछि, एक टा दीप के कहय, स्त्रीगणकेँ कहबैक तँ दस टा दीप बना देत, एक कोइया तेल आ कनेक टा टेमी खर्च करऽ पड़त । थम्हू, आङनसँ नेनहि अबैत छी, लाउ छाप, हम मारिकऽ दइए दैत छी । ओ हँसऽ लगलाह, कहलनि– सैह कनेक ध्यान रखबैक ।

'तखन की भेलैक बगड़िया कका ?' –हमरो गप्प रुचिगर लागल ।

बगड़िया कका कहलनि– बड़दवला मुकुन्दकेँ पकड़िकऽ परचारमे लऽ गेलनि, जखन ओ घूरिकऽ अयलाह तँ कहलनि– बगड़िया कका, हम तँ बाध महक हेङा भऽ गेलहुँ जे पौलक से उठाकऽ लऽ गेल आ अपन ढेप फोड़ि लेलक, ओत्तहि छोड़ि देलक । की खाइत छी, की पिबैत छी, कोना रहैत छी से पुछारि करऽवला क्यो नहि ।

हम कहलियनि– हौ मुकुन्द, जखन बड़देक पालाँमे पड़ि गेलाह तँ घूरि अयलह सैह एक लाख । ढेप फोड़क बेरमे तँ तोरा घिसियौलकह आ कदबा बेरमे छूटिकऽ पुछबो ने करतह । मुदा हौ भातिज, गामक स्कूल पर ततेक मलेटरी पहुँचल, ततेक हाकिम सब जुटल जे मोनक बात मोनेमे रहि गेल । डरेँ बड़देपर छाप मारिकऽ भोट दऽ देलिऐक । लोक कहय जे बड़दपर छाप नहि मारबैक तँ अनुष्ठानमे जे गेल रहिऐक ताही अपराधमे पकड़िकऽ जहलमे दऽ देत, तेँ बड़दकेँ भोट की देलहुँ, बूझऽ जे प्रायश्चित्ते कयलहुँ ।

हम पुछलियनि– फगुआक की कोना गाममे उद्धव-बाधव अछि से कहू बगड़िया कका ।

कहलनि– हौ भातिज, नवग्रहक मारल लोक की फगुआ मनाओत ? हम तँ सोचने छी जे रंगक बदलामे दछिनबरिया घरक चार पर जे पोरो सागक लत्ती अछि तकरे पाकल फड़ एक मौनी तोड़ि लेब आ सैह जे भेटत तकरा मुँह पर रगड़ि देबैक, अनेरे मुँह लालेलाल भऽ जयतैक ।

हम– आ अबीर ?

बगड़िया– तकरो जोगाड़ धरा लेने छी । भोटमे कोनो मुनिस्टर भाखन करऽ आबऽ वला छलाह, तेँ पछबरिया पुलियाकेँ दुरुस्त करबा लै पजेबा आ सुरखी खसल छलैक । ने मुनिस्टरकेँ पलखति भेटलनि ने पुलियाक मरम्मति भेलैक । सुरखी पड़ले रहलैक । हम गओँसँ एक दिन मुनहारि साँझमे एक झोरा टपा-अनलहुँ आ तकरे कपड़छान कऽ कने चोआ मिलाकऽ रखने छी । चोआक गमगमीक लोभेँ जनिका रगड़बनि से हठेँ जल्दी झाड़बो ने करताह ।

हमर एक्का बाला अगुताइत छल तेँ चलि देलहुँ गाम दिस ।

[मिथिला मिहिर, 18 मार्च 1962]



सनेस

आइ दस दिनसँ डाक्टर साहेब अपन समस्त योग्यताक उपयोग कऽ चुकलाह, मुदा क्रम-पात एहन सन लगैत छनि जे प्राय: एहि रोगीक प्रसंग हिनका यश लिखले नहि छनि, अथवा सोने बाबूक ग्रहे तेना बिगड़ल छनि जे प्राय: मारकेशे लागि गेल होइनि ।

आङनमे स्त्रीगणलोकनिक विश्वास छनि जे बुढ़िया पीसीक आङनसँ जहियासँ नोंत खाकऽ अयलाह तहियेसँ सोने बाबूक पेट कनेमने कऽ गड़गड़-गुड़गुड़ करैत आबि रहल छलनि आ ओहि दिन धनेश्वर बाबूक गाछक लिच्ची टुटलनि तँ एहन महगीओमे आने साल जकाँ अपन हित अपेक्षितकेँ बजाकऽ दस-पाँचटा कऽ लिच्ची देलथिन, मुदा सोने बाबूकेँ बैसिकऽ चालिस पचासटा खोऔलाक बाद धीया पूताक हेतु पन्द्रह बीसटा हाथकऽ देलथिन ।

ओहू कालमे बुढ़िया पीसी टुकुर-टुकुर हिनके दिस तकैत रहथिन । आ ई के नहि जनैत अछि जे खाम्हसन अपना घरवलाकेँ मारिकऽ ई डइनपन सिखने रहथि । गाम भरिक लोक हिनका आँखिक आंतकेँ त्रस्त रहैत अछि । तेँ डाक्टर साहेबक दवाइ काज करनु तँ कोना ? आ तेँ झोटहा पंचक सर्वसम्मत विचार छैक जे बुढ़िये पीसीक नेहोरा मिनती कयल जाय, मुदा ई दुस्साहस करय तँ के ?

आइ दस दिनसँ सोने बाबूक पेट बहि रहल छनि, शरीर ततबा दुर्बल भऽ गेल छनि जे जाहि घरमे रहैत छथि ताही घरक कोनमे आब एकटा पैघ सन अथरा राखि देल गेल छनि, ओहीमे मल मूत्रक त्याग करैत छथि । एहन काला पहाड़ सन धूआ रखनिहार सोने बाबूक शरीर लटिकऽ ओछाओनमे सटि गेलनि अछि । जिज्ञासा पुछारि कयनिहार लोकोकेँ हिनक ई दशा देखि आँखि छलछला उठैत छैक ।

डाक्टर साहेब एहि परोपट्टामे धन्वन्तरिक अवतार कहबैत छथि । जकरा नहि छूटऽवला रहैत छैक तकरा पहिने निरसि दैत छथिन आ हिनकर निरसलकेँ दरभंगा मधुबनीकेँ के पूछय पटनो राँचीक डाक्टर आइ धरि नहि बचा सकलथिन अछि । जहिया कोसीक जोर रहनि एहि सभ ठाम आ मलेरिया महारानी अपन सोड़हो कला लऽकऽ कोसिका माताक संग नङटे नाच कऽ रहलि छलीह । पट्टाक पट्टा सजुबदाना आ डिब्बाक डिब्बा वार्ली सरकारदिससँ बाँटल जाइत छलैक । क्यो मरैत छल तँ ब्राह्मण भोजन पर्यन्त सबुजदानेसँ करबऽ पड़ैत

छलैक, तहियेसँ ई डाक्टर साहेब एहि परोपट्टाक सेवा कऽ रहल छथि। छोटकासँ बड़का धरि के एहन होयत जकरा आँखिमे एहि डाक्टर साहेबक हेतु पानि नहि होयतैक। मुदा एहन डाक्टर साहेब सोने बाबूक बहैत पेटकेँ बन्हबामे असफल भऽ रहलाह अछि।

आइ डाक्टर साहेबक विचार भेलनि जे सोनेबाबूक पैखानाक जाँच करा देल जाइनि तखने कोनो दवाइक प्रयोग करब उचित होयत।

पैखाना जँचयबाक हेतु, निर्मलीमे नीक जकाँ नहि भऽ सकैछ, तेँ क्यो दरभंगा जाथि। निष्कर्ष ई बहरायल जे अवध छथि फुर्तिगर, बुझनिक आ चुस्त चलाक लोक। भोरहरबाक गाड़ीसँ गेला सन्ताँ आठ बजे लहेरियासराय पहुँचि जयताह आ दू घंटामे रिपोर्ट दऽ देतनि। फेर जँ साढ़े दस बजेक गाड़ीसँ चलि देताह तँ एक डेढ़ बजे निर्मली घूरि औताह। जँ कदाच मानि लियऽ जे साढ़े दस बजेक गाड़ी नहियोँ भेटैत छनि तैयो दू बजेक गाड़ी तँ भेटबे करतनि आ साँझ धरि घुरबे करताह। तेँ अवध आइ भोरहरबाक गाड़ीसँ लहेरियासराय जाथि।

एकटा पैघ सन नवका मटकूड़ी आनल गेल। तीन बजे रातिमे सोने बाबूकेँ उठाकऽ ओहिमे मलत्याग कराओल गेलनि। मल की रहतनि, घोरल-घारल पानि बूझू। अवधकेँ बुझना गेलनि जे आइ हमर वध भऽ रहल अछि। भोरे-भोर ई विष्ठा लऽकऽ जाय पड़त, मुदा सोने बाबूवला बात। सोने बाबूसँ ओना गाममे के एहन होयत जकर उपकार नहि भेल होइक ? ककरो ओहिठाम मुर्दा पड़ल होउक, आगाँ सोने बाबू होयताह, केहनो अड़ैजँघ गाछ होउक, सोने बाबू जारनि कटताह, केहनो भारी बड़ेरी अथवा ठाठ होउक, सोने बाबू सभसँ पहिने जोर लगौताह, केहनो भारी सिल होउक, सोने बाबूक कान्ह सभसँ पहिने लगतनि। केहनो पैघ टोकना हो, सोने बाबू भोजक भात पसौताह, केहनो जबर्दस्त खोर रहौक, सोने बाबू दही परसताह आ कतबो थोड़ सामग्री रहौक, सोने बाबूकेँ बारिक बना दियऽ, सभमे अँटाबेस कऽ देताह। ई तँ भरि गामक वास्ते, मुदा अवधक हेतु सोने बाबू की की ने कयने छथिन। ओहि बेर जे अरियासँ झगड़ा भेलनि तँ सोझे गड़ाँस अवधक गर्दनिपर पड़ितनि, आ से बीचमे सोने बाबू चल अयलथिन। कपारपर जे ई बड़का दड़ारि देखैत छियनि से ओही गड़ाँसक घाओ थिकनि। जाहि अवधक हेतु सोने बाबू अपन मूड़ी महिषामे दऽ सकैत छथि, ताही सोने बाबूक प्राण रक्षाक हेतु आइ अवधकेँ जँ भोरे-भोर ई मटकूड़ी उठबऽ पड़ैत छनि तँ नाकर-नूकर करब कोना उचित होइतनि ?

अस्तु, अवध विदा तँ भेलाह, मुदा ओहि मटकूड़ीकेँ लऽ जयबाक जोगाड़ धरबे ने करनि। अनेक गऽर धराओल गेल, मुदा सभ जोगाड़ उकरू बूझि पड़नि। अन्तमे मटकूड़ीक मुँहपर केराक वीर पात दऽ एकटा पाढ़िसँ बान्हल गेल आ तकर बाद धोआओल एक पुरान कपड़ामेसँ टुकड़ा फाड़िकऽ ओकरा ओरियाकऽ बान्हल गेल। फेर सुतरीक सीक जकाँ छोट सन बनाओल गेल, ताहिपर सोझकऽ ओहि मटकूड़ीक पेनकेँ राखल गेल। किन्तु ई आशंका

व्यक्त कयल गेल जे रेलगाड़ीमे कदाचित टेढ़ टूढ़ भऽ गेलापर घोरल-घारल मल हेड़ाय ने जाय । तेँ पोआरक एकटा बीड़ा सीटिकऽ बनाओल गेल ताहिपर मटकूड़ीकेँ राखि सीकमे बझाकऽ ऊपरमे कसिकऽ वामा हाथेँ लटकाकऽ अवध स्टेशन गेलाह ।

एहि सभ ओरियान-पातमे समय ततबा लागि गेलनि जे गाड़ी फूजऽ-फूजऽ पर भऽ गेलैक । तेँ हड़बड़ायले कोनहुँना टिकट कटौलनि आ रेल गाड़ीमे चढ़लाह । रच्छ छलनि जे निर्मलीएसँ गाड़ी बनैत छैक तेँ जगह फैलसँ भेटि गेलनि । चित्त जे चंचल भऽ गेल छलनि तेँ फैलसँ जगह भेटलो उत्तर हाथक मटकूड़ीकेँ रखबाक जोगाड़ नीक जकाँ धरबे ने करनि ।

पहिने उपरका तख्ता पर कऽ रखलनि । दू-मिनटक बाद भेलनि जे कदाचित ऊपरसँ मटकूड़ी गुड़ुकि नहि जाय । तेँ फेर उठिकऽ ओकरा घुसका कऽ आरो भीतर कऽ रखलनि आ निचका 'वर्थ' सौंसे खाली छलैक ताहिपर लम्बायमान भऽ गेलाह । पाँच सात मिनटक बाद मोनमे भेलनि जे भिनसरुका समय छैक जँ कदाच निन्न भऽ जाय आ टीसनपर 'पैट' बदलैत काल मटकूड़ी टगि गेल तँ जुलुमे होयत । बस तुरन्त उठिकऽ ओकरा उतारिकऽ बर्थक नीचामे रखलनि आ पुनः पड़ि रहलाह । फेर पाँच सात मिनटक बाद आशंका भेलनि जे कदाचित धड़फड़ायल कोनो यात्री अल्हुआक बोरा तर कऽ ठूसि दैक तँ मटकूड़ी उनटि ने जाय । तेँ फेर उठलाह आ जेमहर केबाड़ी नहि छलैक तेमहर कऽ बर्थक खूब तर कऽ कोनमे लऽ जाकऽ मटकूड़ीकेँ रखलनि आ तखन आश्वस्त भेलाह । तमाकू चुनाकऽ ठोर तर राखलकेँ फेकलनि आ अंगपोछाक बीड़ा जकाँ बनाकऽ माथ तर कऽ लेलनि आ सूति रहलाह ।

सोझाँ-सोझीँ बर्थपर बैसल एक व्यक्ति अवधक समस्त क्रियाकलापकेँ सावधान भऽ देखि रहल छल । ओकरा दृढ़ विश्वास भऽ गेलैक जे एहिमे अवश्य कोनो विशिष्ट पदार्थ रखने अछि । ओ अनुमान करऽ लागल जे कोन एहन वस्तु भऽ सकैत छैक ? अन्तमे ओ निष्कर्षपर पहुँचल जे भऽ सकैछ एहिमे घिउ होइक अथवा एहूसँ अधिक मूल्यक कोनो वस्तु ।

ओ एही ताकमे छल जे अवधकेँ निन्न होइनि । संयोगसँ अवध भेर भऽ सूति रहलाह । गाड़ी कोना कोना स्टेशन पार कयलक से हिनका बुझबाक जोगर नहि भेलनि । यद्यपि बीच-बीचमे कतेक यात्री हिनका उठाकऽ बैसबाक चेष्टा कयलक, मुदा अवधक क्रम-पात एहन सन जे कुम्भकर्णसँ सात पुस्त नहि भेल होइनि । टाङ-ताङ मोड़ैत-मोड़ैत मोटरीक आकार भेल सुतले छलाह ।

सकरी स्टेशनपर गाड़ी ठाढ़ छलैक । एकटा टी.टी.सी. मूड़ी हिलाकऽ उठौलकनि तँ धड़फड़ाकऽ उठलाह । ई स्मरणे नहि छलनि जे रेलमे सूतल छी । आँखि फुजलनि तँ सोझाँमे टी.टी.सी.केँ ठाढ़ देखि भक् टूटि गेलनि । जल्दीसँ अंगपोछाक खूँटमे बान्हल टिकट फोलिकऽ देखऽ देलथिन । तखन मोन पड़लनि मटकूड़ी, नमरि कऽ चट दऽ तरमे तकलनि । आहि रे बा ! मटकुड़िया पार छल । निर्मलीमे जे संग-संग चढ़ल छलनि से

निपत्ता। हिनका अहुछिया कटैत लोक सभ देखलकनि तँ पूछऽ लगलनि जे की हेड़ायल अछि ? मुदा अवधकेँ तँ बूझू बध लागि गेलनि। लोककेँ कोना कहथुन। जहिना-जहिना लोकक जिज्ञासा बढ़ल जाइक, अवधक मुँह विधुआयल जाइनि।

सकरीएमे गाड़ीक 'क्रॉसिंग' होइत छैक। अन्तमे अवध पुनः निर्मलीवाली गाड़ी पकड़बाक निश्चय कयलनि। मोनमे होइनि जे एतेक दिनसँ काबिल बूझल जाइत छलहुँ से आइ बुड़िबक बूझल जायब। लोककेँ कहबैक जे मटकूड़ी चोरा लेलक तँ लोक विश्वास करत कि नहि, दोसर, आइ फेर सोने काकाक दवाइमे बकठेना भऽ गेलनि। किन्तु घुरि जयबाक अतिरिक्त आन उपाय कोन छलनि ?

* * * *

अवध जखन निन्न भऽ गेल छलाह तखन हिनक सहयात्री लक लगौने छल। ओकरा झंझारपुर उतरबाक छलैक। उतरबाक काल ओ देखलक जे एहि मटकूड़ीवालाक नाक जोर-जोरसँ बाजि रहल छैक। ओ चुप्पे चारूकात तकैत गँओसँ मटकूड़ी उठौलक आ उतरि गेल। झंझारपुरमे गाड़ी कनेक काल अँटकैत छलैक तेँ जाधरि गाड़ी फुजलैक नहि ताधरि ओहि व्यक्तिकेँ आशंका होइत रहलैक जे मटकूड़ीवालाक निन्न टूटि ने जाइ। तेँ झटकल जा रहल छल। गाड़ी फूजि गेलापर पेटमे प्राण अयलैक।

मनमे उत्सुकता बढ़ैत गेलैक जे आखिर एहिमे छैक की ? झटकि कऽ चललाक कारणेँ असोथकित भऽ गेल छल तेँ थोड़े दूर जाकऽ एक गाछ तर जिराय लागल। पऽह फाटऽ फाटऽपर छलैक, ता चारि पाँच टा गौआँ ट्रेन पकड़बा लै हड़बड़ायल आबि रहल छलैक। एकरा देखिकऽ गाड़ी दऽ पुछलकैक। ई कहलकै– हम ओही गाड़ीसँ उतरलहुँ अछि, हमरा सोझेँमे गाड़ी चलि देने रहै'।

ओहो सब हताश भऽ ओतहि बैसल आ चूनतमाकू बाहर कऽ जिराय लागल। एक गोटेक नजरि मटकूड़ी पर पड़लैक तँ पूछि देलकै'– एहिमे की छौ यार ?

कुटमैता गेल छलिऐ' से ओत्तहि धीया-पूता लै कुच्छो सनेस दऽ देलकै' गऽ।

सब कहऽ लगलैक– की छौ सनेसमे ?

अपनो उत्सुकता छलैके, कहलकै– हमहू नइँ देखलिऐगऽ मन होइ छऽ तऽ देखि लैह। से कहैत उज्जर दप-दप ओहि कपड़ाकेँ फोललक। ताहि तरमे केराक बीरपातमे लपेटि पाढ़िसँ बान्हल बन्हनकेँ फोलि उघाड़लक। ततेक जोरसँ दुर्गन्ध भभकि उठलैक जे सभक जी ओकाय लगलैक, अँतरी बाहर होअऽ लगलैक। सनेसतँ सनेसे छो यरवा ! से कहैत सब ठहक्का मारैत उठिकऽ पड़ायल। ई मुह बिधुऔने सोचैत रहल– तः बड़ी छकान छकौलक भकुआ।

[मिथिला मिहिर, 2 जुलाइ 1967]



उनटा गायत्री

हमरा विश्वास अछि जे भारतवर्षक जनता एखन उपस्थित आर्थिक संकटकेँ धैर्यपूर्वक पारकऽ लेत । स्वतन्त्रता दिवसक अवसरपर राष्ट्रक नाम सन्देश दैत प्रधान मन्त्रिणी रेडियोपर भाषण करैत कहलथिन जे जमाखोर, घुसखोर, टैक्स-चोर आदि देशक शत्रु थिकाह । हिनका सभसँ बँचबाक हेतु जनताक काज बिथूति भऽ जाइक, किन्तु चोर-बाजारसँ बस्तु नहि कीनय ।

बेचन बाबूकेँ अभ्यास भऽ गेलनि अछि जे भोरमे वन्दना आ साँझमे प्रान्तीय समाचार सुनबाक लाथेँ परोसीक दलानपर पहुँचि गेल करैत छथि आ एही लाथेँ दूनू साँझ चाहक खर्च बचा लैत छथि ।

अपन समाजमे मरछियाह लोक अर्थात् अपन अग्रज सभकेँ सँघरैत किछु दिन धरि मायबापकेँ सन्तानक हेतु अहुछिया कटा तखन जाकऽ जन्म लेनिहार अपना नामेँसँ अपन पूर्वाभास दऽ देल करैत अछि । बेचन बाबू एहने मरछियाह लोक छथि । अपन माय-बापक सभसँ पछतीया सन्तान । कदाचित् ई हो ने मरि जाय तेँ जन्म लैत देरी माय सात कौड़ीमे चमैनिक हाथेँ बेचि लेलथिन तेँ नाम रखलथिन बेचन, मुदा बेचन बाबू धड़िया पहिरबाक जोग जहिया भेलाह तहियेसँ अपन नामक इंटरप्रेटेशन अर्थात् व्याख्या अभिधामे करऽ लगलाह । माय-बापक एकमात्र सन्तान केहन दुलारू होइत छैक तकर दृष्टान्त बेचन बाबू थिकाह । ताहूपर पिताकेँ बाँस, कलम, खढ़ोरि, गाछी सभ मिला निदग्ग पन्द्रह बीघा आस्था छनि । गोटेक आधेक तेहने कर्मैत होइत अछि जकर एहन सहलोला बेटा लिखि-पढ़ि पबैत छैक, सामान्य लोक तँ यदि जीबैत रहताह तँ चारि सेर बोनिकऽ अपन निर्वाह कऽ लेताह एहीसँ संतोष कऽ लैत अछि । ओना, औंठा छाप देनिहार पिता बेचन बाबूकेँ शिक्षित करबाक प्रयासमे किछु उठा नहि रखलथिन, किन्तु हाइ स्कूल धरि जाइत जाइत बेचनकेँ पाठ्य पुस्तको बेचि लेबामे कोनो तारतम्य नहि होइत छलनि । यद्यपि सीट-साट, फीट-फाटक हेतु माय अपन कोसलिया रुपैया दैत रहैत छलथिन, तथापि खगि जाइत छलनि ।

बेरपर खगि जयबाक कारण थिकनि गामक चौक, जतऽ चारूकातसँ बस, टैक्सी, ट्रक, रिक्शा अबिते जाइत रहैत छैक । पीच रोड होयबासँ पूर्व साँझ होइत-होइत एकटा कार कौआ पर्यन्त ने रहैत छलैक, मुदा धन्य ई स्वतन्त्रता, जकर प्रसादेँ ई पीच रोड भेल आ धन्य ई पीच रोड जे एहि चौबटियाकेँ चौकक नाम धरौलक । आब तँ एहि ठामक वातावरणमे एकदम शहराइन गन्ध घोरायल रहैत छैक आ ताहूपर जहियासँ एम्हर दऽ बिजली-लाइन आबि गेलैक अछि तहियासँ ई चौक एहि चौगामाक किछु बुधियार, किछु व्यापारी, किछु गप्पी, किछु निकम्माक अतिरिक्त किछु ललबबुआलोकनिक हेतु रोटरी क्लबक काज करैत अछि । बानर-भालुवलासँ लऽ सन्-चिड़ैया नाचबला धरि अपन मजमा एहि ठाम लगबैत रहैत अछि । परिवार नियोजनसँ लऽ सिनेमा धरिक पोस्टर एहि ठाम लागल रहैत छैक । पहने तँ दू एक गोट झिल्लीमुरही, चाह-पान मात्रक दोकान होइत छलैक, मुदा बिजली लाइनक प्रसादेँ धनकुट्टी-मशीनसँ लऽ आँटा-चक्की धरि एहि ठाम लागि गेलाक कारणेँ क्रमहि चाउर-दालि, नोन, तेल, लत्ता-कपड़ा, साइकिल-भङठी, जुत्ता-मरम्मति धरिक दोकान सभ ठाढ़ भऽ गेलैक । एकटा सैलून, दू टा कैविन, एकटा लौण्ड्रीक अतिरिक्त होमियोपैथी दवाखाना, अंग्रेजी डिस्पेन्सरी, एम्.बी.बी.एस. डाक्टरक क्लिनिक धरिक साइनबोर्ड सभ लटकि चुकल छैक । मिला-जुलाकऽ दरभंगा-मधुबनीक छोट-छीन मोहल्लाक समकक्ष होइत देखि भड़हा लाउडस्पीकरवला सेहो अनघोल मचौने रहैछ एहन जगजियार चौकपर साँझ प्रात दुइओ घंटा कऽ जँ बेचन बाबू सन लोक नहि बैसथि तँ एहि चौकक शान-गुमानमे अवश्य बट्टा लगतैक । एहि चौकपर अपन धाख कायम रखबाक हेतु किछु अतिरिक्त व्यय तँ करहि पड़ैत छैक । तकरा पुरयबाक हेतु कखनो घरसँ अन्न, बाड़ी-झाड़ीसँ नेबो, लताम, बीटसँ बाँस, कलम-गाछीसँ आम-कटहर अर्थात् जतऽ जे पबैत छलाह, बेचि लैत छलाह । एहि सभ हेतु जँ बाप हँटथिन तँ माय आ माय ललकारथिन तँ बाप पक्ष धऽकऽ लड़ऽ लगैत छलथिन ।

देखबा-सुनाबमे भगवान कोनो बेजाय नहि बनौने छथिन, धन-सम्पत्ति छनिहेँ ज्ञान भने नहि रहनु, मुदा घुसकल-घुसकल एगारहम क्लासमे नाम से पहुँचि गेल छलनि, तेँ अन्ततः बेटाकेँ बिगड़बासँ बचयबाक हेतु बाप एक मसोमातक बेटीसँ विवाहो कराइए देलथिन । ओहो बेचारी अपन सम्पत्ति बेटीक नामसँ लिखि देलक जे पाँच बीघाक अओन-पओन होयतनि ।

माय-बापक परोक्ष होइत देरी बेचन बाबू अपन नामकेँ आरो सार्थक करय लगलाह । दस पन्द्रह वर्ष पुरैत-पुरैत घर घड़ारी छोड़ि बेराबेरी बापक अरजल कुल सम्पत्ति एही इलवाइसमे स्वाहा कऽ लेलनि । आब जीवनक आधार सासुरवला सम्पत्ति सैह छनि ।

मोन बहसल आप कऽ आ जीह नमरल आप कऽ । तेहना स्थितिमे आजुक महगीकेँ मुँह बौने सोझाँमे ठाढ़ देखैत छथि तँ होइत छनि जे बिनु गिड़ने नहि छोड़त ।

परोसी छथिन सेन्ट्रल फोर्समे नौकरी करैत । बिहारमे भेल जन-आन्दोलनक क्रममे बेटा गेलथिन जहल तेँ बेचारे तार पबैत देरी दू मासक छुट्टी लऽ गाम आयल छथिन । चाहक जन्मी अभ्यासी, चीनी बिकाइत पाँच टके सेर, सेहो कख्नो पाइक अछैतो दुर्लभ । स्वतन्त्रताक बाद भेल व्यवस्थाक प्रसंग बेचन बाबूकेँ घोर आक्रोश छनि तेँ एकर परम कटु आलोचक छथि । एक दिन रेडियोक समाचार सुनबाक लाथेँ परोसीक दलानपर पहुँचलाह । शिष्टतावश ओ चाहक आग्रह कयलथिन, बेचन बाबू तहियासँ उठौना बना लेलनि, भिनसरमे वन्दना आ साँझमे प्रान्तीय समाचार सुनितेटा छथि । अपना जे सासुरमे रेडियो देने छलनि से बैट्रीक महगी देखि बेचि लेने छथि ।

आइ रेडियोसँ प्रधानमन्त्रिणीक सन्देश सुनि ओहिना खौंत फूकि देने छलनि । ताहिपरसँ परोसी चाहक बदलामे प्रधानमन्त्रिणीक वक्तव्यक स्मरण करबैत कहलथिन– ''हमरालोकनिकेँ एहिपर अमल करबाक चाही, चोर बाजारसँ किछु नहि किनबाक चाही, मुदा बिनु चाहेँ तँ एको साँझ ने बनत । गूड़क चाह हमरो हेतु जहर भऽ जाइत अछि आ गामक मुखियासँ लऽ एक-एक दोकान छानि मारलहुँ, पाँचो रुपैये सेर कतहु चीनी नहि भेटल । देखू, साँझो धरि कोनो जोगाड़ धरैत अछि वा नहि ।''

बेचन बाबू मुँह बिधुऔने किछु काल बैसल रहलाह । मानसिक प्रतिक्रिया मोनकेँ हौंड़ने जाइनि– 'आइ स्वतन्त्रता दिवस थिक आ एक कप चाह पर्यन्त दुर्लभ' । एहि अकालीमे मध्यवित्तक लोकक हेतु जखन पेट पहाड़ छैक तखन चाह-ताह-सन अनावश्यक अभ्यासक हेतु जँ आङनमे जाकऽ चर्चा कयलनि तँ दसटा ओलसन बोलक संग गूड़ घोरल चाह आरो कबकब लगलनि । भरि दिन कोनहुना एहि आशापर खेपलनि जे फौजी आदमी छथि परोसी, साँझ धरि कोनो-ने-कोनो प्रबन्ध चीनीक करबे करताह । जे साक्षात् चीनी सभसँ लड़बाक हेतु सतत कमर कसने रहैत छथि तनिका भला चीनी नहि भेटतनि ?

साँझमे प्रान्तीय समाचार सुनबाक हेतु जँ परोसीक दलानपर पहुँचलाह, अन्हारेमे बैसल परोसी खससिकऽ अपन उपस्थितिक सूचना देलथिन । अन्हार देखि बेचन बाबू बजलाह– 'बदरी बाबू आइ अन्हारेमे... ।'

परोसी बीचमे लोकलथिन– ''आर्थिक दुःस्थितिकेँ ध्यानमे रखैत एहि बेर लालो किलापर दीवाली नहि सजाओल गेलैक से नहि सुनलिऐ ?''

बेचन बाबू किछु बजबाक हेतु मुँह सुरफुरबिते रहलाह ताबत बदरी पुनि कहऽ लगलथिन– ''देखू, आइ भरि दिन बड़द बन्हले रहि गेल । चरवहवाकेँ बाबूबरही पठौलिएक जे कोनो भाव भेटैक थोड़बो चीनी आ थोड़बो मटिया तेल आनगऽ, ई छौड़ा भरि बजार बौआ आयल, ने कतहु चुटकियो भरि चीनी भेटलैक ने बुन्दो भरि मटिया

तेल । आङनमे चिनमारपर डिबिया भुकभुका रहल अछि । सुनै छिऐ बाढ़िक कारणेँ समस्तीपुरक ट्रेन बन्द छैक । आब सोचैत छी, बेनीबाद दऽ मुजफ्फरपुर जा दिल्लीक गाड़ी पकड़ी । एहन स्थितिमे कोना कऽ लोक देहातमे रहत ?''

बेचन बाबू झमान होइत बजलाह– ''सम्पूर्ण गायत्रीए उनटा भऽ गेलैक । राजघाटमे गान्धीजीक समाधि नहि गान्धीवादक समाधि बनल अछि । बिटियाकऽ देखियौ । गान्धी बाबा सत्य केँ अस्त्र बनौलनि तँ हुनक नाम बेचनिहार लोकनि असत्येक प्रसादेँ गगन–बिहार कऽ रहल छथि । ओ अहिंसाकेँ महामन्त्र मानलनि तँ आइ कोनो दिन एहन नहि बीतैत अछि जहिया गोली खाकऽ दुइयो चारि व्यक्ति सुरधाम नहि जाइत होथि । ओ रामराज्यक कल्पना साकार करऽ चाहैत छलाह तेँ आइ हराम राज्य संस्थापित अछि । ओ देशसँ दरिद्रताकेँ दूर करऽ चाहैत छलाह तेँ आइ दरिद्रे सभ रसातल जा रहल छथि ओ ग्रामीण लघु उद्योगकेँ बढ़बऽ चाहैत छलाह तेँ आइ नगरक विस्तार दिन दोगुन राति चौगुन भऽ रहल अछि । ओ सौंसे देशकेँ एकताक सूत्रमे बान्हऽ चाहैत छलाह तेँ आइ गाम–गाम घर–घर दू दलमे विभाजित अछि । ओ मद्य निषेध चाहैत छलाह तेँ आइ सरकारी स्तरपर बोतल विक्रय भऽ रहल अछि । ओ सभकेँ स्वावलम्बी बनबऽ चाहैत छलाह तेँ आइ व्यक्ति मात्र वस्तु मात्रक हेतु परावलम्बी भऽ गेल अछि । हमरालोकनिक बाप पितामह दू टके सेर घी कीनैत छलाह तेँ आइ दू टकेँ सेर मटिया तेल पर्यन्त उपलब्ध नहि भऽ रहल अछि । कहाँ धरि गनाउ ? आइ जँ हमरा लोकनि जीबाक हेतु संघर्ष करैत छी तँ राष्ट्रक प्रति विश्वासघात कऽ रहल छिऐक ।

[मिथिला मिहिर, 20 सितंबर 1974]



परीक्षार्थी

दलानपर एक गोटे ठाढ़ छथि, बाहरसँ बटुक दौड़ले आबिकऽ सूचना देलनि। आइ-काल्हि करैत अर्द्धवार्षिक परीक्षाक उत्तर पुस्तिका देखिकऽ आपस कऽ देबाक तिथि नाकपर ठेकि चुकल छल, काल्हि अनिवार्यतः जमा करऽ पड़त ते आसन मारि बैसल छलहुँ। ई समाद एहि बीचमे दहीमे मूसर सन लागल। बटुककेँ पुछलियनि– डेराक हेतु बौआइत कोनो विद्यार्थी त ने थिकाह ?'

बटुक हुनक हुलिया देलनि– विद्यार्थी सन एज' नहि छनि। बेस हृष्ट-पुष्ट, सभ्य, शिक्षित सन लगैत छथि, धोती, कुर्त्ता पहिरने छथि, कान्हपर तौलिया, नाकपर मोटका फ्रेमवला चश्मा आ पयरमे गेँड़ सन गोड़ावला चप्पल छनि।

एहिसँ पहिनहु अपना डेरापर कहियो देखने छियनि अथवा एकदम अनचिन्हारे छथि ?'' ई पुछलापर बटुक कहलनि– हम एहिसँ पहिने हिनका कहियो ने देखने छियनि। हम कहबो कयलियनि जे कोन काज अछि ? कहलनि जे हमर काज श्रीमानक दर्शने भेलापर हैत।''

हम ठाढ़े ठाढ़ दुटप्पी कऽ बिदा कऽ देबाक मूड'मे ओहिना नंगधड़ंग उघाड़े देहेँ, नाकपर चश्मा, हाथमे ललका कलम लेनहि बाहर अयलहुँ जे मुद्रे देखिकऽ बूझि जाथि जे कार्यव्यस्त छथि। ओ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम प्रणाम प्रणाम' तीन बेर दोहरा कान्हपरस तौलिया उतारि ओहि ठाम राखल अखरा चौकीकेँ झाड़ि कहलनि– कनेक बैसल जाय, बस घड़ी देखिकऽ मात्र दस मिनट समय हमरा देल जाय, एतबा कहैत चौकीपर बैसि रहलाह। आब अगत्या हमरो बैसऽ पड़ल। उत्सुकतापूर्वक हुनका दिस प्रश्नसूचक दृष्टिएँ ताकऽ लगलियनि तँ ओहो अपन 'टेपरेकर्डर' खोलि देलनि–

हमर नाम भेल... खैर, छोड़ल जाय, हमरा नामसँ अपनेकेँ कोन 'कनेक्सन' हमहूँ अपनेक एक समानधर्मा थिकहुँ, अपने पहिने साहित्यकार छी तखन अध्यापक आ हम पहिने एक अध्यापक तखन कनेक मनेक साहित्यकार, बस एतबे अन्तर अछि। आइ.ए.

पास कऽ हम ट्रेनिंग कयलहुँ । अपनेसभक कृपा आ जगदम्बा जानकीक दयासँ एक टा हाइ स्कूलमे नोकरी भेटि गेल । पछाति जाकऽ सरस्वती माताक अनुग्रह सेहो भऽ गेलनि तँ किछु 'क' 'ट' कऽ हमहूँ लिखऽ लगलिऐ' ओना एखन हम हिन्दीएमे लिखैत छी, एमहर आबिकऽ किछु अपनेक मैथिली दिस सेहो रुचि उत्पन्न भऽ गेल तँ एक टा खण्डकाव्य लिखा गेल । हमरा जखन सौभाग्य ओ अवसर 'हैत' तखन श्रीमानक सेवामे उपस्थिते करब । बिनु अपनेक कलमक रगड़ पड़ने ओ प्रकाशनमे जाइयो ने सकैत अछि । हमरा भानुजीसँ बड़ अपेक्षा, ओ तँ अपनेक गुणगान कतेक करैत रहैत छथि जे की कहल जाय ।' अपनेक ओहि ठामक चाहक तँ तेना प्रशंसा करैत रहैत छथि जे सुननिहारक जीहसँ पानि छूटऽ लगैत छैक । हमरा तँ आइ दर्शनक पहिले दिन सौभाग्य भेल अछि ।'

हमर समय नष्ट भेल जाइत छल ताहिसँ विखिन्न आ अपन समानधर्माक वाक्पटुता आ धुर्त्तइसँ विस्मित भेल जाइत छलहुँ । बटुकके सोर करैत कहलियनि– कनेक केटली गरम करबाउ । ओ आँखि मटकबैत बजलाह– आः, ई तँ प्रसंगवश हम कहि देल, एखन चाह कोनो ततेक आवश्यक नहि छैक । अस्तु, जखन अपने कहिए देलियनि तँ तावत एक टा 'सेम्पुल' अपनेक सेवामे... । हम कहलियनि– सेम्पुल जे हो से सिम्पुले', हम एखन बड़ कार्यव्यस्त छी ।'

जी, जी, से तँ हमरा बुझले अछि । तेँ तँ तेयारी कऽ हम रविके ठेकाना कऽ अयलहुँ । एतबा कहैत ओ अपन दूनू आँखि निपट्ट बन्द कऽ सानाक हेतु कमचीमे गाँथि दालिमे देल आलू सन सन पाँती सभके रेघा-रेघा कऽ दोहरा तेहरा कऽ गाबि गाबि सुनाबऽ लगलाह से खण्डकाव्यक एक सर्ग जावत सम्पन्न नहि भेलनि ताबत गबिते रहलाह । चाह आनि कऽ बटुक राखि गेलाह से सेराय लागल । जँ टोकितियनि नहितँ ओ दोसरो सर्ग बिनु सुनौने नहि छोड़ितथि ।

जल्दीसँ चाह घटोसि जेबीसँ दू टा दस पैसाही बाहर करैत बटुकके कहलथिन– बच्चा ! दौड़िकऽ दू टा पान लऽ आनू । बटुक हुनक पाइ बिनु छूनहि पान आनक हेतु चलि देलनि । हमर समानधर्सा टिप्पणी करैत बजलाह चूड़ा दही, दालिभात, नोनतेल जकाँ चाह पान आब सहचर शब्द भऽ गेलैक अछि । अपने बाजि, अपने हँसियो लेलनि । हमरा समयक हत्या आ एहन निरहट लोकक 'चांगलापन', देखि मानसिक स्थिति की भऽ रहल छल से अपनो नहि कहि सकैत छी ।

हमर समानधर्सा बजलाह– जाबत पान अबैत छैक ताबत हम जाहि मुख्य उद्देश्यसँ अपनेक दर्शन करऽ अयलहुँ अछि से सुनि लेल जाय ।' हम क्षुब्ध भेल बकर-बकर हुनकर मुँह तकैत रहलियनि । ओ बजलाह– श्रीमान ! जखन हमरा मैथिलीमे आकाशवाणीक कार्यक्रम भेटल तखन एकर महत्त्व बुझना गेल । तेँ जखन एहि क्षेत्रमे कुदलहुँ अछि तँ किछु अध्ययनो 'हैबाक' चाही से सोचि कऽ बी.ए.मे एपीयरे भऽ रहल

छिऐक आ मैथिलीए राखि लेलिऐक अछि । आब परीक्षाक एक्के मास समय छैक । आन विषयक तैयारी तँ करीब-करीब छैके, खाली मैथिलीमे अपनेक मार्गदर्शन चाही । ओना तँ मैथिली मातृभाषा थिक तेँ बहुत किछु बिनू पढ़नहुँ भऽ जेतैक तथापि बी.ए. मे कोन कोन पोथी छैक आ कोना हमर बेड़ा पार लगतैक से हम श्रीमानेक भरोसेँ छोड़ि देने छिऐक ।'

हम कहलियनि– कहै छी एके मास समय छैक आ कोन कोन पोथी छैक सेहो अहाँकेँ नहि बुझल अछि ?'

–जी, जखन अपनेकेँ बुझल छैके तखन त हमरो बुझले भेलैक ।''

–एहना स्थितिमे हम अहाँक कोन सहायता कऽ सकैत छी ?' ई हमर प्रश्न सुनिते ओ बजलाह– से त श्रीमाने जानब जे कोन तरहक सहायता कऽ सकैत छी ।'

हम पुछलियनि– कमसँ कम मैथिली साहित्यक इतिहास तँ पढ़ने होयब ।'

–एँ...मैथिलीओमे साहित्यक इतिहास होइत छैक ? हमरा तँ एकर एक्को रत्ती 'आइडिए' नहि छल ।'

पुनः हम पुछलियनि– रस, छन्द अलंकार आदिक त थोड़बो अनुशीलन, अवश्य कयने होयब ?'

ओ चकित होइत कहलनि– श्रीमान् ! अपने तँ हमरा राजमार्ग धराबऽ चाहैत छी । से जँ रहितय तँ मैथिली किएक लितहुँ, सब्जेक्टक कोनो अकाल छैक ? हम तँ अपनेक शरणमे अयलहुँ जे कोनो एकपेड़िया देखा देल जाय जाहिसँ हम लक्ष्य धरि पहुँचि जाइ । एक टा बात ध्यानमे राखल जाय जे हम विद्यार्थी नहि, परीक्षार्थी छी ।

[मिथिला मिहिर, 10 सितंबर 1979]



चौबट्टीपर

आइ भोरे स्वतन्त्रता दिवसक उल्लासमय अवसरपर झंडोत्तोलन देखबाक इच्छासँ दैनिक चर्या समाप्त करबामे चटक्की कयलहुँ । उष्णोदकसँ प्रातराचमने विनियोगः करब ताबत बाहर बूझि पड़ल जेना मेघ गरजि रहल हो । अकानलहुँ भूखन भाइक स्वर स्पष्ट बुझना गेल । हमरा ओतऽ नेनाभुटका चाह नहि पीबैत अछि । मात्र दुनू बेकतीक हेतु दू कप भोरमे बनैत अछि । राति चिन्नी-डिब्बा कतहु राखिदेने छलथिन से चारू घरमे तकैत छिछिआइत रहलीह तावत आधा कप पानि पर्यन्त जरि गेल छलनि, तेँ डेढ़ कप मात्र चाह बनिकऽ तैयार भेल छल । ताहूमे पकला जौक पाथर जकाँ भूखन भाइ पहुचि गेलाह । डेढ़ कपकेँ तीन कपमे बाँटि दूनू कप हाथमे लेने बाहर दलानपर अयलहुँ । अखरे चौकीपर बैसबाक आग्रह करैत कप राखि देलियनि ।

भूखन भाइ पुछलनि– काल्हि साँझखन कोन खिखिरक बीहरिमे तोँ समा गेल छलाह जे पाताल धरि खुनलाक बादो कतहु देखि नहि पड़लाह ?

कहलियनि– एक टा कथा लिखबाक फेरमे नुकायल छलहुँ, भरि दिन दुनियाँ भरिक काजसँ पलखतिए ने भेटैत रहैत अछि आ ताहिपरसँ संसार भरिक लोक अपन-अपन व्यग्रतेँ आन्हर भेल अबैत अछि ।

भूखन भाइ झझकारैत बजलाह– तोरालोकनि खिस्सा-पिहानी लिखि-लिखि, फकड़ा लहरक जोड़ि-जोड़ि मातृभाषाक सेवा करबाक ढोल पीटैत रहऽ आ गामे-गाम, नगरे-नगरे बाबा विद्यापतिक बर्खीक नामपर रोहुक सीराक कपाल क्रिया करैत रहऽ । कहलकै मुसहड़नी अपना घरमे बजबोसँ गेलहुँ तकर परि करैत हाथ चमका-चमका, एँड़ी अलगा-अलगा, कंठ फलका-फलका युग-युगसँ अग्निपथपर चलैत रहबाक फूसि-फटक बात गढ़ैत प्रस्ताव पास कऽ अपने हाथेँ मुंगरीसँ अपन पीठ ठोकैत रहऽ । हमरा तँ आगि फुकने अछि आगि ! पुरुष मसोम्मातक जिनगी जीबैत आब नहि नीक लगैत अछि । एहि बेर नओ की छओ कऽकऽ रहबऽ । एतबा कहैत-कहैत हुनकर आँखि जलद योग

फूलकोका समान भऽ गेलनि । क्रोध आ करुणाक एहन अद्भुत सम्मिश्रित रूप एहिसँ पहिने देखबामे नहि आयल छल ।

चाह पीबाक आग्रह करैत हम कहलियनि— हमरापर कथीक आक्रोश अछि ? हमरासँ कोन अपराध भेल अछि जे नओ की छओ करवापर वृत्त छी ?

अपराध ? एक दीर्घ श्वास लैत भूखन भाइ बजलाह— कोनो अपराध नहि । नपुंसक समाजसँ कतहु कोनो अपराध होइक । अपराधोक बोध ओकरे होइत छैक जकरा सत्कर्म ओ अपकर्ममे भिन्नताक बोध रहैत छैक आ जे आत्मविस्मृतिक गर्त्तमे आकंठ धसल अछि से अपराध की बुझतैक आ कोना बुझतैक । जकरा माइक दूधक लाज बचयबाक चिन्ता रहैत छैक से समाज ने जी–जान अरोपिकऽ फाँड़ भिड़ने रहैत अछि आ जकरा डूबि मरबाक हेतु एक चुरु पानि पर्यन्त जुटयबाक अवगति नहि रहैत छैक से अपराधकेँ कोना चिन्हतैक । पाइपर बिकायवला हाथी एहन पहाड़ सन देह रखितो साढ़े तीन हाथक मनुक्खक आँकुससँ तीतल बिलाड़ि भेल रहैत अछि । धूआ रखने होइतैक तँ हाथीक डरेँ सिंह पतनुकान लेने घुरैत । तोरालोकनि एहने हाथी छह । पीठपर लादि–लादि गाड़ीक गाड़ी चारा लबैत छह आ चिबा–चिबा ढाकीक ढाकी लिद्दी करैत जाइत छह । भूखन भाइ कहैत आ अपस्याँत होइत रहलाह ।

हम कहलियनि— चाह तँ सेरायल जाइत अछि । भूखन भाइ बमकि उठलाह— तोरा चाह सेरयबाक चिन्ता छह आ हम तोरा लोकनिक सेरायल शोणित देखि चिन्तासँ गलल जाइत छी । धामन साप देखने छहक ? भरि गफ्फी मोट आ साढ़े चारि हाथ लम्बा हनहन करैत चारक बड़ेरीपर फानि जायत, मुदा होइत अछि अभागल निर्विष, खाली माल–जालकेँ छानिकऽ दूध पीबि लेनिहार हमर समाज धामन साप थिक । एहन धामनसँ आइ काल्हि काज चलनिहार नहि । आइ चाही गहुमनक पोआ । हजार–हजार, डेढ़–डेढ़ हजारसँ उप्पर जकरा नामपर तोँ सभ कमाइत छहक तकरा जड़िमे धीपल माँड़ ढारने जाइत छह आ तोरालोकनि चाह सेरयबाक चिन्तामे नितुआन होइत रहैत छह । ई शोभा दैत छह ?

हमरा तँ आधा कप चाह छल तकरा कखन ने घोँटि गेल छलहुँ आ एमहर भूखन भाइक भीषण भाषण क्रमहि उग्रसँ उग्रतर होइत गेलनि— गहुमनक पोआ अछि बंगला देशक निवासी, लड़ि गेल, कटि गेल, मरि गेल, टूटि गेल, मुदा माइक दूधक लाज बचयबासँ बाज नहि आयल । माथपर बलजोरी थोपनिहारक पराभव भेलैक आ ओ समाज मुक्तिक साँस लेलक ।

तावत देखैत छी रामलखन मंडल, राजकुमार पाण्डेय, राधेश्याम अग्रवाल, अंजनी कुमार पोद्दार, राम निरंजन भगत, अशोक कुमार कामत, अरुण कुमार राय, इन्द्रकान्त सिंह,

सत्येन्द्र प्रसाद सिन्हा, पाँचू पासवान, शौकत खलील, राम प्रसाद महतो, राजदेव यादव आदिक एक झुण्ड मटिया तेलमे भिजाओल कपड़ाक ऊक बनौने झुण्डक झुण्ड लोक ओकरा सभक पछोड़ धयने हो-हो करैत अबैत आबि रहल अछि-

''अस्तित्व निहित अछि जाहीमे तकरे जड़िपर कुड़हरि बजरल

अलसायल आँखि कने फोलू फूसक घरपर चिनगी पजरल''

हम ई दृश्य देखि चकित रहि गेलहुँ । भूखन भाइक दिस जिज्ञासा भरल दृष्टिसँ तकलियनि तँ बजलाह- तकै की छह,

''अछि सलाइमे आगि बरत की बिना रगड़ने ?

पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ?''

आइ स्वतन्त्रता दिवस थिकैक । बाबू भैया आ पढ़ुआलोकनिक पुरुषार्थसँ सनाथ भेलहुँ, आब हँसुआ फरोसक सेना संघटित अछि । आइ चौबट्टीपर अपन तिरंगा झंडा फहरायब आ ओकरे लग सप्पत खाइत जायब जे कंठक बोली, माइक बोलीकेँ जाबत धरि अधिकार नहि देआयब, ताबत दम नहि मारब । परसल पात आगूसँ घीचि रहल अछि, से सहि लेब ? एहन अपमानित जीवनसँ मरण श्रेष्ठ थिक ।

ओ आगू बजलाह- देखैत छिऐक ऊक, आइ चौबट्टीपर सभकेँ लेसबैक आ एहि दुर्नीतिक गढ़केँ झरकाकऽ राखि देबैक । प्रतिरोध करत तँ मारबैक, मारत तँ छाती खोलि कऽ गोली खा लेबै । जँ जीबैत घुरलहुँ तँ तोरालोकनिक हेतु लहेरियागंजसँ चूड़ी किनने अयबह ।

[मिथिला मिहिर, 10 सितंबर 1978]



छी हम बड़ सावधान लोक

ओना दिनक दोखेँ जखन जे भऽ जाइक तकर मोजर नहि हो, तेँ एहने कदाचित कहिओ किछु भऽ गेल हो से दोसर बात, ओना हम बड़ सावधान लोक छी ।'' ई आन्तरिक विश्वास दुनू प्राणी केँ छलनि आ समय-समय पर दुनू बेकती एकर उद्घोषणा सेहो करैत रहैत छथि ।

भादबक पूर्णमासी । एगारह बजैत राति । वातावरणमे एक संगीतक स्वर ! दूरपर झिंगुरक झंकार ओहि संगीतक स्वरके आपूरित करैत मोतीचूर लड्डूक दाना सन-सन बुन्नी आकाशसँ नचैत, केराक पातपर झिहिर-झिहिर स्वरमे गबैत, धरतीपर आबि-आबि लहालोट भऽ रहल छल । भारतीय राजनीतिमे विपक्षी दल जकाँ निष्प्रभ भेल चन्द्रमा कोन झोंझमे झँपायल छलाह, तकर ककरो पता नहि । गुजगुज अन्हार आ सड़कपर कुम्भीपाक नरकक दृश्य, थाल-खीच, नाला-नाली सड़क एकार्णवा भेल ।

रिक्शाक खड़खड़यबाक स्वर प्राकृतिक संगीतक स्वरमे डूबल ध्यानकेँ सहसा अपना दिस खीचि लेलक । खिड़कीक बाहर आँखि गेल तँ दूरपर टार्चक इजोत सेहो बिज़लौता जकाँ एक बेर चमकि उठल । रिक्शापरसँ किछु मोटा चोटा उतारिकऽ राखल जाइत रहैक तकर अनुभव कानेकेँ भेलैक, आँखिकेँ नहि । किछु क्षणक बाद, नाम कथी ले' कहू, बूझि लियऽ जे फल्लाँ बाबूक कर्कश स्वर कानमे पहुँचल- गदही छी ! गदही !! आब राति भरि बैसि जलझम्प लैत रहू ।

प्रत्युत्तरमे एक नारी-स्वर मुखरित भेल हम गदही छी से हमरा बापकेँ नीक जकाँ बूझल छलनि, तेँ एहन जोड़ी जोहि कऽ मिलौलनि । अपने गलती कऽ लेब आ दोख अनका माथपर थोपि देबैक ! एहन लोक बड़ मारुख होइत अछि ।

राति भीजि रहल छलैक, अन्धकार गढ़ायले जा रहल छलैक । वातावरणमे पूर्ण शीतलता आबि गेल छलैक । किछु ठाँइ-ठाँइ स्वर सेहो कान धरि पहुँचल, परन्तु आँखि अलसायल छल, कखन निन्न भऽ गेल से नहि बुझलिऐक । परन्तु ओ निन्न रहल नहि ।

केबाड़केँ बाहरसँ क्यौ ठकठकौलक । स्वीच देलिऐक तँ लाइन गोल । तावत खिड़की लगसँ एक टा छाया बाजि उठल– कनेक अपन कुंजीक झब्बा देल जाय । स्वरसँ चिन्हलियनि जे फल्लाँ बाबू थिकाह । हम सिरमामे राखल सलाइ आ मोमवत्ती लऽ इजोत कयलहुँ केबाड़ फोलि देलियनि आ फल्लाँ बाबू भीतर अयलाह । हम तँ फक्कड़ लोक, कुंजीक झब्बा, हमरा कतऽसँ आओत ? एकटा कुंजी अछि, डड़ाडोरिमे बन्हने रहैत छी । हमरासँ कुंजीक रक्षा होइत छैक आ कुंजी द्वारा हमरा शनिसँ रक्षा होइत अछि । हमरा पूर्व आभास भेटि चुकल छले जे एखन ई पूर्ण मानसिक उत्तेजनामे छथि । तेँ कनेक बैसि जयबाक आग्रह कयलियनि तँ झझकारिते बाजि उठलाह– सामान सभ बरण्डेपर पड़ल अछि आ अपनेक शिष्या एकसरिए ओहि ठाम बैसलि छथि । दुनू गोटे आधा छीधा भिजले छी ।

शिष्यासँ फल्ला बाबूक तात्पर्य छलनि अपन पत्नीसँ । ओ विवाहसँ पहिने गामक कन्या मध्य विद्यालयसँ मिडिल पास कयने छलथिन । नागरिक जीवनमे अयलाक बाद प्रौढ़वस्थामे पुनः पढ़बाक इच्छा भेलनि । ताहि क्रममे कखनो कखनो किछु–किछु मार्गदर्शन कऽ देबाक निवेदन कयने छलाह । पत्नीकेँ पढ़बाक इच्छा देखि फल्लाँ बाबू पूर्ण उत्साहित भेल छलाह । ओही क्रममे हमर डेरासँ अबरजात आरम्भ भेल छलनि आ हमरा हुनकामे गुरु शिष्यक सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल छल । गुरु तँ भरि दिन अपन धन्धामे व्यस्त रहनिहार जीव, हिनका गप्प लड़यबाक पलखति कतऽ परन्तु गुरुआइनिक प्रति ततेक भक्ति–भाव बढ़ि गेल छलनि आ मध्याह्नमे समय कटबाक हेतु अधिक काल हमरा डेरा आइलि करथि तथा अपराह्नमे टोल परोसमे टहलबा–बुलबाक हेतु दूनू गोटे संगहि जाइत छलीह ।

हम फल्लाँ बाबूकेँ अपस्याँत होयबाक कारण पुछलियनि । तँ ओ सम्पूर्ण आमामाइक खिस्सा सुनबऽ लगलाह । कोम्हरोसँ बसातक झोँक उठलैक जाहिसँ आकाशकेँ किछु किछु सावकाश होबऽ लगलैक । कनेमने मेघ छँटऽ लगलैक तँ कतहु कतहु दू चारिटा तारा सेहो टिमटिमाइत अपन अस्तित्वक सूचना देबऽ लागल । एमहर फल्लाँ बाबू हमर शिष्याक अल्हड़पन, असावधनता, दीर्घसूत्रिता आदिक वर्णन करैत सुधिए विसरि गेलाह । ओमहर हमर शिष्या औँघाय लगलीह । हिनका विलम्ब होइत देखि ओहो टुघरल–टुघरल हमर डेरामे चल अइलीह । आब हमर कोठलीमे रम्भा–शुक सवाद आरम्भ भऽ गेल । हम मने–मन अपन दुर्भाग्यपर झखैत रही जे एहन विलक्षण निन्नक योग्य राति उनहल जा रहल अछि आ दूनू प्राणी हमर प्राणकेँ अवग्रहमे राखि देने छथि ।

उक्त दम्पती अपनहि उतरा चौरी कऽ रहल छलाह । ताहिमे विलक्षणता ई जे दूनू बेकती हमरे सम्बोधित कऽ एक–दोसरपर अभियोगपर अभियोग लगौने जा रहल छलाह आ हम औँघाइत महादेवक बसहा जकाँ मात्र कखनो कऽ मूड़ी डोला रहल छलहुँ । दूनू गोटाक उतराचौरी निम्नांकित रूपेँ चलि रहल छलनि–

पति– मास्टर साहेब ! हिनका पुछियौनि जे अदौड़ी, दनौरी, पापड़, अँचार, आमिल, सरिसो आदि संसार भरिक वस्तु तँ ई बोरामे कसलनि, परन्तु डेराक कुंजी लेलहुँ की नहि, तकर सुधि नहि रखलनि । ई सावधान लोकक काज थिकैक ?

पत्नी– मास्टर साहेब ! हिनका पुछियौनि जे आइ धरि डेराक कुंजी ई छूबहु देलनि अछि ? हम जहाँ कखन कोनो वस्तु छूबनि तँ कहताह– छोड़ू अहाँ अल्हड़ि छी, कतहु भुतिया देब आ आइ डेराक कुजी गामपर अपने छोड़ि अयलाह अछि तैयो हमरे पर बाघ जकाँ गुम्हड़ि रहल छथि ।

पति– मास्टर साहब ! परुकाँ साल जिद्द लागि गेलनि जे औठी बिनु हाथ सुन्न लगैत अछि । सोनक बजार भाव जनिते छिऐक । तथापि 600/– रु०मे एकटा औंठी बनबा देलियनि । दुइओ मास ने भेल छलनि, हम सभ गोटे गेलहुँ कुशेश्वरस्थान । पूजा करबाक काल कोना कऽ आङुरसँ घीचि लेलकनि । ओही ठाम जे घओना पसारलनि से बूझि पड़ैक जे माय बाप क्यौ मरि गेल होथिन ।

पत्नी– मास्टर साहेब ! हम की जानऽ गेलिऐक जे बाबाक पूजा करैत काल सेहो चोर उचक्का सब रहैत छैक । ओहि टिकजरौना सभक कायामे, बाबा रोग ढुका देथिन, मुदा हिनका पुछियौनि जे पहिले बेर जे 'इण्टरव्यू'मे जयबाक छलनि तँ तीन सय टाकामे सूट बनबौलनि, सबा दू सयमे एकटा ब्रीफकेश किनलनि । मैट्रिकसँ एम्.ए. धरि सार्टिफिकेट सब ओहीमे रखलनि । गाड़ीमे जाकऽ सूति रहलाह । केदन माथतरसँ ब्रीफकेश घीचि लेलकनि से अपने तखन बुझलथिन जखन प्रात भेलापर निन्न टुटलनि । नगद पाँच सय संग लेने रहथि, सेहो ओहीमे रखने रहथि । 'इण्टरव्यू' की देताह, चुकरी सन मुँह कयने पहलेजा घाटसँ घुरि अयलाह । तीन मास धरि बापकेँ देखि सपनौर जकाँ छपकल रहथि ।

पति– मास्टर साहेब, भरि राति तँ गाड़ीमे जगले रहलहुँ । निन्नो तँ लोककेँ कखनहु विवश कऽ दैत छैक । मुजफ्फरपुरसँ गाड़ी फुजलाक बाद कने झपकी लागि गेल । सेहो संगक सहयात्री दू गोटे मुजफ्फरपुरमे उतरि गेल रहय तेँ जगह भेटि गेल । बैसल-बैसल डाँड़ पीठ अकड़ि गेल रहय तेँ कने पड़ि रहलहुँ । एक गोटे जे रहि गेल छल से महाग शुभ्र-शाभ्र बुझायल । एहनो चेहरा-मोहरा लुक्कड़ भऽ सकैत अछि से अनुमानो नहि कयल जा सकैत छल । मुदा हिनका पुछियौनि जे पछिलामासमे गैस सिलिण्डरकेँ की कयने छलीह ?

हम बात बुझबा लै उत्सुक भेलहुँ तँ फल्ला बाबूँ अपन पत्नीक सावधानीक वर्णन करैत बजलाह– चारि वर्षसँ हम गैसक चुलहा रखने छी । आब एकर सिलिण्डरक दाम पचास टाका भऽ गेल छैक । जाधरि मास नहि लागत तावत ऑर्डर नहि लेत । दू दिन

सिलिण्डरकेँ अयना भेल छलै, बहिनिक विवाह ठीक भेलनि कि भाय हड़बड़ायले बिदागरी कराबऽ अयलथिन । चारि दिनक वास्तेँ हम सब रतुका गाड़ीसँ बिदा होइत गेलहुँ । भानस-भात होइत, वस्तु-जात सरियबैत, भोजन-भात करैत गाड़ीक समय लगिचा गेलैक । चलबाक काल कोनो दवाइ खयबा लै भाय सुसुम पानि मङलथिन । पानि सुसुमकऽ हुनका दऽकऽ हड़बड़ीमे घर-दुआर बन्द कऽ चलि देलनि । सात दिनक बाद ई अपन नैहरसँ आ हम अपन सासुरसँ घुरैत गेलहुँ से बससँ । ओ बस बाटमे भङठि गेलैक । भङठी करैत डेढ़ घंटा लगा देलकै । पित्तेँ मन आँट छल । अबैत देरी कहलियनि पहिने एक लोटा पानि आ तकर बाद एक कप चाह पिया दिअऽ ।

फल्लाँ बाबू एक दीर्घ निसास लेलनि आ गप्पक कड़ीकेँ आगाँ बढ़बैत बजलाह– मास्टर साहेब, पाँच सात टा सलाइक काठी खड़रि गेलीह चुलहा नहि पजरलनि । जा कऽ देखैत छी– सिलिण्डरक स्वीच ऑने छलनि । रच्छ रहल जे घरक एक टा खिड़की फुजले छूटि गेल छलनि । नहि तँ सब टा गैस घरमे घुरिआइत रहितैक, अपने झरकबे करितथि, संगहि महल्लोकेँ सुड्डाह करितथि । आब तँ मास लगलाक बादे भेटि सकत । एखन तँ स्टाको खतमे छैक ।

पत्नी– मास्टर साहेब, ओहि अपराधक दण्डो तँ हमरे भोगऽ पड़ल । एहि बरिसातमे भीजल-तीतल जारनिसँ भानस करैत आँखि फोड़ैत रहलहुँ । हिनका पुछियौनि– जे ओहिबेर गोदरेज आलमारी फुजले छोड़िकऽ पटना चल गेलाह । सब टाका-पैसा, गहना-गुरिया सब ओही आलमारीमे । जँ आयल-गेल लोकमेसँ क्यौ पार कऽ दितनि तँ कपार ककर फोड़ितथिन ?

पति– सेहो तँ अहींक कारणेँ भेल । भानसमे ततेक अबेर कऽ देलहुँ जे पानिक बलेँ दस कओर कण्ठक नीचाँ धकेलि पड़यले स्टेशन जाय पड़ल । मुदा मास्टर साहेब, हिनका पुछियौनि...'

हम अकच्छ भऽ गेल छलहुँ । तारीख बदलि चुकल छलैक । आँखिमे बुझाइत छल मेरिचाइ रगड़ि देने हो तेँ बीचमे टोकैत कहलियनि– अहाँ दूनू प्राणी हमरा कहैत छी जे हिनका पुछियौनि । हम दूनू गोटेकेँ पूछैत छी जे अहाँक दाम्पत्य जीवनक बीचमे आबि हम के पुछनिहार ? कहबी छैक– 'साँय-बहुक झगड़ा, बीचमे पड़य लबरा' तेँ अहाँ दूनू गोटे जँ हमरा पंच मानी तँ अपन-अपन अभियोग फराक-फराक लिखिकऽ एक सदस्यीय आयोगक समक्ष उपस्थित करी, हम अभियोग पत्रक सम्यक् अध्ययन कऽ बारह वर्षक अभ्यन्तरे अपन रिपोर्ट दऽ देब । सम्प्रति जे समस्या अछि तकर समाधान ताकू ।

फल्लाँ बाबू बजलाह– समस्या साधारण नहि अछि । डेरामे अलीगढ़क बड़का ताला लटकल अछि आ ई कुंजी गामे पर छोड़ि अयलीह ।

पत्नी बीचमे टोकलथिन— फेर दोख हमरे माथ पर थोपैत छथि । ई नहि कहि होइत छनि जे कुंजीक झब्बा गामेपर छुटि गेल तेँ अपन झब्बा दिअऽ जे कनेक 'ट्राइ' करिऐक ।

हम अपन स्थिति स्पष्ट करैत कहलियनि— हम अहाँ लोकनि जकाँ धन्ना सेठ तँ छी नहि जे कुंजीक झब्बा राखब । हमरा घरक सामान तँ न चौर हार्य न च भ्रातृभाज्यम्' तेँ ताला लऽ कऽ की ? आ कुंजी कथीक ? एक टिनही ट्रंक अछि, तकर कुंजी डँड़ा डोरिमे बन्हने रहैत छी, ओहिसँ कुंजीक रक्षा होइत अछि आ ज्योतिषीजीक कथनानुसार शनिग्रहसँ रक्षाक हेतु संगमे लोह' राखू तेँ कुंजी शनिसँ हमर रक्षा करैत अछि ।

दुनू प्राणी घुरिकऽ अपन बरण्डापर जाइत देरी चीत्कार कऽ उठलाह । बूझि पड़ल जेना साप काटि लेने होइनि अथवा साँढ़ उठाकऽ पटकि देने होइनि । टॉर्च लऽ दौड़ल गेलहुँ । देखैत छी अल्लर बल्लर सामान पड़ल छनि । दुनू प्राणीक कथनानुसार अपन अटैची आ पत्नीक ट्रंक एही बचीमे कोनो लुक्कड़ पार कऽ देने रहनि ।

[मिथिला मिहिर, 13 सितंबर 1981]



पिलसिम

चौधरीजी पहिने राज दरभंगाक तहसीलदार पदपर नियुक्त भेलाह । राजस्व असूलीमे हिनक तत्परता आ सफलता देखि महाराज पाँचे बरखक बाद हिनक पदोन्नति सर्कल मैनेजरक पदपर कऽ देलथिन । गामपर अपन निर्वाह योग्य समटल छोट-छिन सीटल गृहस्थी रहनि । तहसीलदार जाबत धरि रहलाह ताबत धरि सप्ताहमे चारि दिन महाराजक काज करथिन आ शनि-रवि-सोम ई तीन दिन गामोपरक गृहस्थी सम्हारि लेथि । ताहिमे जँ आवश्यक भऽ जाइनि तँ अपनहुँ कोदारि पकड़बामे ततेक संकोच नहि होइनि । मुदा जखन मैनेजरक पदपर पहुँचि गेलाह तखन ईहो ध्यानमे राखऽ पड़नि जे महाराजाधिराज मिथिलेशक सर्कल मैनेजरक पदक गरिमा पर कोनो धक्का नहि लगैक । दोसर आब तँ बजाप्ता 10 बजेसँ 4 बजे धरि ऑफिसमे बैसऽ पड़नि । पाँच गोट तहसीलदार 20 गोट देवानजी अधीनस्थ रहथिन । रहबा लै बड़का बंगला भेटल रहनि । जेठरैयति सब प्रत्येक गाममे रहथिन । रैयतिओकेँ अपन समस्या, अपन दुखड़ा रौदी-दाही आदि सुनयबा लै आबऽ पड़ैक । तेँ आब अधिक काल गाम जयबाक समय बाहर करबामे कठिनताक अनुभव होइनि ।

गाम पर चौधरीजीक पिताक समयमे जे चरवाह रहनि से हिनका समयमे हरवाह भऽ गेल रहनि । ओकर पुस्तैनी दरबार रहैक । नाम रहैक विकला । सब दिनसँ एही घरसँ पालन होइत आयल रहैक तेँ विश्वासी लोक रहबे करनि । आब ओकरा पर बेसी निर्भर रहऽ पड़ैत छलनि तेँ अपन पदोन्नतिक बाद कार्यभारक संग ओहदा सेहो बढ़ि गेलाक कारणेँ ओकरो पदोन्नत कऽ हरवाहसँ कमतीया बना देलथिन । आब रोपनि-डोभनि, बाओग-बगतान, कमैनी-पटौनी, जन-बड़जनाकेँ बेर-बेगर्त्तापर सबैया-ड्यौढ़ापर एक मन धरि अन्न कर्ज उधार देबाक सब अधिकार विकलाकेँ भेटि गेलैक । जाधरि चौधरीजीक जेठ बालक गामक हाइस्कूलमे पढ़ैत रहथिन ताधरि थोड़-बहुत जूति ओहो चलबथिन, मुदा मैट्रिक पास कऽ जखन पढ़बा लै पटना चल गेलथिन तखन विकला कमतीयासँ मनेजर भऽ गेल । मालिक महाराजक मैनेजर आ विकला अपना मालिकक मनेजर ।

जहिना मैनेजर साहेबक आड्वाल बढ़ैत गेलनि मनेजरोक बथान झमटगर होइत गेलैक । बड़द किनलक, गाय किनलक, बच्छाक पैकारी करऽ लागल । एक थानसँ तीन थान महिस भऽ गेलैक । जेठका बेटाकेँ भाड़ा पर चलाबऽ लै एक टायर गाड़ी बनवा देलकै । चारिटा कमासुत बेटा, महिसक दूध, चिपड़ी-गोरहा आदिसँ नीक आमदनी होअऽ लगलै । आब विकलोक लत्ता-कपड़ा सोडरमे उसीनि कऽ साफ करबाक बदला धोबी घाट जाय लगलै ।

समाजमे जरनियाह लोकक कमी तँ छैक नहि । बिकलाक रहन-सहनमे क्रमशः स्तर उन्नत होइत देखि अकर्मण्य लोकके आरो आगि फूकऽ लगलैक । चौधरीजी छओ मास-बरख दिन पर गाम आबथि तँ एहन लोक आबि-आबि विकलाक विरुद्ध कान भरऽ लगलनि ।

यद्यपि विकला अपना उद्यमसँ विकास कऽ रहल छल, कोनो चोरी-छिपारीसँ नहि, मुदा अनेक व्यक्ति द्वारा अनेक बेर कान भरलाक कारणेँ आ विकलाकेँ पहिलुक अपेक्षा बेसी साफ-सुथरा पहिरन-ओढ़न देखि चौधरीजीक मनमे सन्देह बढ़ऽ लगलनि । एमहर विकलाक खेती-बाड़ी, मालजाल, गाड़ी बड़द, बच्छाक हेराफेरी आदि मिलाकऽ कारबारक पसार भऽ गेल छलैक, ओमहर चौधरीजीक व्यवहारमे क्रमशः ओहि पहिलुक विश्वासमे ह्रास, रुच्छतामे वृद्धि देखि कखनहु कऽ दरबार छोड़ि देबाक इच्छा भऽ जाइ, किन्तु हठात् चौधरीजीकेँ कहबाक साहस नहि होइक । भितरे-भीतर दूनू गोटेक चित्त फाटि रहल छलनि, मुदा चौधरीजीकेँ सेहो मन दुगदुग करनि जे एतबो कयनिहार दोसर जँ नहि भेटल । तैयो एक बेर गाम अयलाह तँ कहलथिन– विकला, आब देखैत छियौ तोरा अपने बहुत पसार भऽ गेलौक अछि । लगैत अछि हमर काज सम्हारबामे अपन क्षति करऽ पड़ैत होयतौक । तेँ हम सोचैत छी ककरो अनके ई सम्हारबाक भार दऽ दिऐक ।

विकला तँ चाहिते छल, कहलकनि– सरकार ! ई सब अपनहि आउरक असीरवाद आ किरपासँ भेलैक अछि । हम अपने कहऽ चाहै छली, महज साधंस नहि होइ छल गऽ । हमरा कोनो उजूर नइँ अय । चौधरीजी कहलथिन– खेत जे बटाइ करैत छेँ से सब करिते रहिहेँ । विकला उत्तर देलकनि– सरकार, हमर रोइयाँ, रोइयाँमे अही दरबारक नोन समायल ऐछ । अपने जेनाहीं कहबैक तेनाही हेतै । एहि तरहेँ विकला मुक्ति पाबि गेल ।

आठ वर्षक बाद चौधरीजी सेवा निवृत्त भऽ गाम आबि गेलाह । एहि अवधिमे गृहस्थी अवनतिए दिस क्रमशः ससरि रहल छलनि तेँ फेर विकलाकेँ बजा लिऐ' से सोचि रहल छलाह । सरकार गाम अयलाह अछि से समाचार सुनि अयलनि भेट करऽ तँ कहलथिन– विकला, आब हम गामेमे रहब ।

विकला– से किए सरकार ! मनेजरी छोड़ि देबै ?

चौधरी– छोड़ि की देबै, आब महाराज साहेब हमरा पेन्शन दऽ देलनि । घरे बैसल दू सय टाका जा धरि जीबैत रहब ताधरि भेटैत रहत ।

विकला– महराजो पिलसिम दै छथिन । हमरा नानाक छोटका भाइ जे रहै से अङरेज़ बहादुरके पुलिसमे रहै । सुनै छिऐ अङरेज बहादुर ओकरा पिलसिम देने रहै, कते गो के आ केहन रहै से हम आउर देखलिऐ नइँ । अहाँ कनी देखा दीती तऽ सेहन्ता पूरि जाइत ।

चौधरी कहलथिन– पेन्शन कोनो चीज थोड़े होइ छै जे देखा देबौ ? ओ तँ बैसल ठाम दू सय मासी देताह सैह भेलै पेन्शन ।

विकला उल्लसित होइत कहलकनि– सरकार, अपनेकेँ महराज साहेब पिलसिम देलखिन आ हमरा तऽ छौंड़े सब मिल कऽ पिलसिम दऽ देने ऐछ । आब हमहूँ बैठले ठाँ खाइ छिऐ, काज धन्धा कोनो ने, खाली भोरे उठली तऽ कने बथान खड़रि देलिऐ मालजाल के बाहर कऽ देलिऐ आ लार-पुआर, घास-भुस्सा जे रहलै से ओगारि देलिऐ, बड़द लै सानी बनाकऽ मैदान सऽ भऽ अइली, तखनीए खाहे खाँड़ा रहलै खाहे टुक्का तनी खाकऽ पानी पीली, ताले बड़दो आउर सानी खा लेने रहैयऽ, हरखड़ा उठौली, चारि कट्ठा खुर-खुरा अइली, खइली-पीली कने आँइख मोड़ली, भैंस सबकेँ खोलि देलिऐ, काँख तर एगो छिट्टा खुरपी लेली, भैंस जाले चरैयऽ ताले दू मुट्ठी घास छील लेली, साँझमे घुरली आ माल-जाल के घर कऽ घूड़ धूआँ कऽ के हाथ पैर धो के बैठली । पोता आउर पढ़ैयऽ ओही ठिन बैठली । सरकार, छौंड़ा सब आब कोनो काम नइँ करऽ दैयऽ । भेलै ने पिलसिम ?

[मिथिला मिहिर, 10 सितंबर 1979]



धर्मसंकट

एहिबेर भुटकुन भाइ बहुत दिनपर दरभंगा आयल छलाह । हम अपन कोठलीमे किछु लिखबाक मूडमे कागत कलम लऽ बैसले छलहुँ तावत बाहरसँ केबाड़ खट-खटायल । सुनिकऽ मोन घोर भऽ गेल ।

ओहि समयमे किछु समैया काजक हेतु लोकक अबरजात बढ़ि गेल छलैक । समैया काज माने सिजनल अर्थात्, प्रवेशिका परीक्षाक उत्तर-पुस्तिका सभक मूल्यांकन भऽ रहल छलैक । एक टा मूल्यांकन-केन्द्र दरभंगोमे छलैक । एहन समयमे ममिऔतक मसिऔतकेर पितिऔतक सार लोकनि अपना मामक जमायकेर साक्षाते पिसिऔतक हेतु कापीमे नम्बर बढ़यबाक हेतु सम्बन्ध जोड़ने पहुँचि जाइत छथि आ क्रमपात एहन-सन जे अहाँसन एहन निकट सम्बन्धी जखन एहि नगरमे छथि तखन हमर विद्यार्थीकेँ प्रथम श्रेणीक अंक किएक नहि भेटि जयतनि ? जँ दूरमे कापी रहितनि तखन जे भाग्यमे होइतनि ।

एहन लोककेँ कोना बुझाओल जाय जे मूल्यांकन केन्द्रमे कापीक पता लगा कऽ ओहिमे अंक बढ़यबासँ सुगम चक्रव्यूह-भेदन होइत छैक । जँ स्पष्ट शब्दमे कहल जाय जे एक तँ कठिन, दोसर एहन अनैतिक काज हमरासँ नहि भऽ सकत तँ सर-कुटुम्ब, इष्ट-अपेक्षित, दोस्त-महिम, जिला-जयबार सभ ठाम निन्दा-अभियान तुरन्त आरम्भ । पहुँनाइओ चलल आ निन्दा-प्रसारणकार्य सेहो । एहन लोकसँ भगवाने रक्षा करथि ।

से, केबाड़क खटखट सुनि एक बेर देह सिहरि गेल, दू मिनट सोचबामे लागल कि नाम धऽ कऽ सोर करबाक शब्द कानमे पहुँचल आ स्वर बुझायल जे भुटकुन भाइक थिकनि । तखन तँ हितोपदेशमे वर्णित कपोतराज चित्रग्रीवक स्वर अकानि कऽ जेना हिरण्यक ''आः पुण्यवानस्मि'' कहैत बीहरिसँ बाहर भेल छल तहिना धड़फड़ा कऽ हमहूँ बाहर अयलहुँ आ भुटकुन भाइ-सन प्रिय सुहृदकेँ देखि गद्‌गद भऽ गेलहुँ ।

केबाड़ फोलिते भुटकुन भाइ बजलाह– आब अहाँ काछु जकाँ टाङ, मूड़ी सभ भीतर सुटका लेलहुँ, भलेँ बाहर कोठलीमे रहैत छलहुँ ।

हम कुशल-क्षेमक बाद पुछलियनि– एहि बेर बहुत दिनपर दरभंगापर कृपा कयलिऐक अछि !

–"आहि रे बा ! आब अहाँ लोकनिक ओहदा बढ़ि गेल अछि । पहिने जिलामे रहैत छलहुँ आ हमरो लोकनिकेँ जिलासँ काज पड़िते रहैत अछि, मुदा आब तँ दरभंगा कमिश्नरी भऽ गेल । आब ओतेक प्रयोजन नहि रहैत अछि । तखन तँ खास कऽ नेयारि भासि कऽ आउ, से पलखति नहि । विशेष प्रयोजन पड़ि गेल तँ सोचलहुँ चली, सुकठीक बनीज आ पशुपतिक दर्शन ।"

हम घबड़यलहुँ जे प्रायः ईहो कापीएक प्रसंग अयलाह अछि । ई छथि कनेक खटबताह लोक, बिगड़ैत देरी लगबे ने करैत छनि । हँ, गून एतबे छनि जे बेसी काल ओ टेम्पर रहैत नहि छनि ।

एक बेरुक हिनक हाल सुनू । भेलैक तँ बहुत दिन । एतेक दिमने वयसक कारणेँ स्वभावमे बहुत परिवर्तन भऽ गेलनि अछि । पहिने जकाँ आब सिरिंग नहि चढ़ैत छनि, दूध जकाँ उधिया कऽ चुलहामे खसबाक हेतु वृत्त नहि भऽ जाइत छथि, स्प्रीट जकाँ भक दऽ आगि नहि धऽ लैत छनि, बुद्धिमे करेंट नहि मारि दैत छनि, टिनही बाटी जकाँ तुरन्त धीपि नहि जाइत छथि, मोटर साइकिल जकाँ भड़भड़ाइयो ने उठैत छथि, परंच धातु तँ पुरने छनि । हम ताहि दिनुक गप्प कहैत छी जहिया ई परिवर्त्तन नहि भेल रहनि । हमर डेरापर एक टा गरीब विद्यार्थी भानस करैत छल । पुरखाही डेरामे तँ नापल-जोखल चिप्पी लागल । बासि-बेरहटक प्रश्ने नहि, तेँ जकरा पातमे पड़लैक से खा जाओ, छोड़ने दूरि भऽ जयतैक । भुटकुन भाइ मर्यादाक नामपर एक बाकुट भात छोड़ि देलथिन । दोसर साँझ ओ विद्यार्थी ओतबा कम कऽ हिनक थारीमे भात देलकनि ।

ओना, भुटकुन भाइ कोनो खौकार लोकक प्रतिष्ठा नहि पौने छथि जे कोनो बरियातीमे हिनका लऽ जायब लोक आवश्यक बुझैत होइनि, तथापि कुर्सीपर बैसनिहार बाबू जकाँ चारि टा फुलकीसँ निर्वाह कयनिहार तँ नहि छथि, एक पुरुषकेँ नहि, एक मर्दकेँ जतेक खयबाक चाही से ईहो खाइत छथि । तेँ भातक मात्रा देखि झुझुआ गेलाह । दिनोमे एक कोन खालिए रहि गेल छलनि । तैयो मोन मसोसिकऽ भोजन कऽ लेलनि आ मर्यादाक रक्षा धरि नहि छोड़लनि । प्रात भेने ओ विद्यार्थी फेर ओतेक भातकम कऽ देलकनि । पीढ़ीपर जाइत देरी थारीपर नजरि गेलनि । जनौक शपथ खाइत पीढ़ीपर तेना फनलाह जेना पीढ़ीक तरसँ गहुमन फुफकारि उठल होइनि । बाजि उठलाह– जाधरि ई चाण्डाल भनसिया एहि डेरामे रहत ताधरि एतऽ पैर नहि देब ।

अपने पूजापरसँ उठि कतेक नेहोरा मिनती कयलियनि, ओहि विद्यार्थीकेँ तत्काल डेरासँ भगौलहुँ ने तँ हरही गौर जकाँ ई चारू बाध देखबितथि । कुर्त्ता तँ पहिरिए चुकल छलाह, जुत्तामे पैर देब बाँकी छलनि । से घटना हमरा आइ मोन पड़ि गेल ।

चाह पीबाक आग्रह कयलाक क्रममे अपन बकनाइ आरम्भ कयलनि– युग ठामहि उनटि गेलैक । नीक कयलहुँ जे अहाँ शहरमे घर बना लेलहुँ । गाम आब नरक भऽ गेल नरक । ककरो नीक क्यो देखै ने चाहैत छैक ।

अहाँकेँ तँ हमर घर देखले अछि, सड़कक कातेमे पड़ैत छैक । युगक संग तँ लोकके चलहि पड़ैत छैक । दू टा, चारि टा नीक लोक अबिते जाइत रहैत छथि, कखनो विशिष्टो लोक आबि गेलाह तँ हुनका आगू छुच्छे चाह कोना देबनि ? तखन पीच रोड भऽ गेलाक कारणेँ बस, ट्रक, कार गामे-गाम दौड़ऽ लगलैक अछि, ताहिसँ ई सुविधा अवश्य भऽ गेलैक अछि जे हल्लुक-फल्लुक नमकीन आदि समय-पर भेटि जाइत छैक...

हम भुटकुन भाइक संकेत बूझि गेलियनि तेँ बेटीकेँ चारि टा नमकीनो देबाक इशारा कऽ देलिऐक । ओ अपन भाषण जारी रखैत कहऽ लगलाह– हम अपन पाइ खर्च कऽ दू गोटेक जे स्वागत करैत छिऐक ताहू लेल लोककेँ देहमे आगि लगैत रहैत छैक– एकर ई शान ! हाकिम-हुकमानकेँ अपन दलानपर अँटका लेत ? बबुआन जकाँ पनबट्टी रखैत अछि, जखन-तखन बड़प्पन छाँटऽ ले' कहत-चाह पीबि ने लियऽ । एहन राग-द्वेष शहरमे नहि ने रहैत छैक । सभ अपना-अपनामे मगन रहैत अछि ।

चाहक चुस्की लैत युगक आलोचना करऽ लगलाह– नवतुरिया सभक ताल देखिकऽ छगुनतामे पड़ल रहैत छी । पौरुष तँ देशसँ समाप्त भऽ रहल अछि । नवका छौँड़ा सभ मौगियाही अर्थात् ब्लाउजक कपड़ाक अंगा बनबा लैत अछि । छौँड़ी सभ केश छँटबा लैत अछि आ छौँड़ा सभ बढ़ा लैत अछि, दुनू मेमसन केश बनौने रहत । बाम पहुँचापर घड़ी आ दहिना पहुँचापर एकटा कड़ा चललैक अछि से पहिरने । बीच माथपर सिउँथ फाड़ने एक डाँटी सिन्दुर बिनु उदास, ने तँ सभ मौगियाही बाना । ताहिपरसँ ई मोटरक बच्चा माने स्कूटर ततेक फड़ि गेलैक अछि जे जहाँ देहपर कने गुद्दा भेलैक कि एक टा कीनि लेलक आ गलिए कुचिए हलकल फिरल ।

"अपनो गाममे क्यो लेलक अछि ?" –हम पुछलियनि ।

भुटकुन भाइ कहऽ लगलाह– अहाँ गामे छोड़ि देलहुँ तँ की बुझबैक । चुल्हाइ बाबू अपन बेटाकेँ आदर्श विवाह करौलनि । खाली कहाँ-दन एकटा मेडिकल कालेज खुजलैक अछि जाहिमे पन्द्रह हजार टाका देलापर घोड़ा-गदहा सभक नाम लिखा जाइत छैक । से कन्यागतसँ पहिने ओहिमे बेटाक नाम लिखबा लेलथिन आ विदाइमे एम्हरुका अलंग-फलंग माने सूट-बूट, रेडियो, घड़ी आदिक अलावे एकटा स्कूटर किनबा लेलथिन तखन बेटा देलथिन आ नाम भेलैक आदर्श विवाह ।

एहि बेर चुल्हाइझाक माय मरि गेलथिन । श्राद्धमे बेटा आयल रहथिन । क्षौरक दिनमे छौड़ा केश कटयबाक हेतु तैयारे ने होइत छलनि । कहनि, ई सभ ढोंग थिकैक । जखन अपने विष खयबापर वृत्त भऽ गेलाह तखन केश कटौलकनि ।

एकादशाह दिन गेलहुँ भोज खाय तँ फुलपेन्ट पहिरने आ पहाड़ी मूस आ कि खढ़्याक छालक टोपी पहिरने पाँतमे परसैत । हम कहलिऐक– बाउ हौ ! ब्राह्मण भोजनक पाँतमे परसैत छह, ई टोपी माथपरसँ उतारि लैह । चट दऽ कहैत अछि– केश कटौने छी से लाज होइत अछि ।

ताहिपर हमरा बजना गेल । बजना गेल सैह कहबाक चाही ने तँ अपना मुँहमे क्यो विष्ठे लेपओ, हमरा कोन मतलब ? से हमरा बजना गेल जे बाटक कातमे ठाढ़ भऽ घोड़ा जकाँ मुतबामे लाज नहि होइत छह आ पितामहीक श्राद्धमे केश कटौलह तकर लाज ? सभ हँसि देलकैक–

आश्चर्य तँ ई जे चुल्हाइयो बाबूकेँ ई कथा ततेक अप्रिय लगलनि जे द्वादशाह दिन हमरा नोंत नहि देलनि । आर सुनू, अहाँ लोकनि छात्रकेँ पढ़ाकऽ 'गोल्ड मेडलिस्ट' बनबैत छियनि आ हमरा लोकनि प्राथमिक पाठशालामे पोटा पोछब, शौच करब, धड़िया पहिरब आ जँ हाफ पेन्ट पहिरने रहक तँ आलू पर माँटि चढ़ायब सिखबैत रहि जाइत छिऐक । केवल एक टा 'उड मेडलिस्ट' अर्थात् काष्ठ पदक प्राप्त हमहू बनौने छी ।

हम उत्सुकता पूर्वक तकलियनि तँ बजलाह– नहि बुझलहुँ, हम एकटा बाछी पोसने छी से तेहन हराहि अछि जे जँ डोरी हाथसँ छूटल तँ तीनू लोक घुमा दैत अछि तेँ आब गर्दनिमे एकटा खाटक पौआ लटका देलिऐक अछि । आब जँ पड़ाइत अछि तँ टाङमे फटाफट लगैत छै तँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि । ओ बाछी एक दिन भाँटाक बाड़ीमे चल गेलनि ताहि लै कोने कोन कथा ने कहलनि । ओही बातक कुन्नहसँ गामसँ हमर बदली करबा देलनि अछि। तेँ अहाँक शरणमे अयलहुँ अछि जे कोनहुना अपना प्रभावसँ एकरा रोकबा दियऽ ।

[मिथिला मिहिर, 11 जुलाइ 1976]



जँ मौगी रहितहुँ ?

बुझलहुँ समाजक लोकक दरेग । एक बेर नहि, पँच-पँचबेर सौराठ गाछीक दर्शन कऽ चुकलहुँ । जावत धरि गामपर रहू, सभ बेराबेरी पुछनिहार बनताह-मद्धू बाबू ! सभा चलैत छी कि ने ? कमसँ कम पाँचो सय टाका संग कऽ लऽ लियऽ । एहि बेर हम सभ पूरा जोर लगायब जे अहाँक हाथ पीयर भऽ जाय आ ओहू गुनमन्तीक सिउँथिमे सिन्नुर झक दऽ झलकि उठनि जे पपीहा जकाँ स्वातीक बुन्द तकैत अहाँक बाट जोहैत होथि । आ जखन सभा गाछी पहुँचू तँ मद्धू बाबू ! पान खोअबियौक ; हे ई उतरवारि गामवला घटक थिकाह । ई जँ मोनसँ पड़ि जाइत छथिन तँ केहन केहन जहाज सन वरक मनोरथ पूरि जाइत छनि । होउ, कर कटुक बाहर करियौक । क्यो कहताह-मद्धू बाबू ! ई बड़का गामवला घटक । बड़ सुलच्छन हिनकर सगून होइत छनि । खाली हिनका खुशी कऽ दियनि । बनारसक सर्बतवला जे पुदीनाक अर्क दऽकऽ सर्बत बनबैत अछि । साँझ धरि मुँह गम गम करैत रहैत छैक आ ढेकारमे तँ प्रात धरि सुगन्धसँ मुँह भरैत रहैत छैक । होउ, चलबियौक एक बेर सर्बत फेर देखि लियऽ जे कोना चुटकी बजबैत अहाँक चुटकीमे मटिया सिन्नुर पहुँचि जाइत अछि । यैह लल्लो चप्पो, यैह ठकैती, यैह चप्प देल गप्प । आ दस बीस खर्च करा कऽ शेष शुद्ध दिन कहैत जयताह– कनियाँ ककरो फाँड़मे तँ नहि छैक, जे क्यो बाहर कऽ दऽ देत ! खेत भरनापर भरना पड़ैत गेल, टकबा फुरफाँइमे खर्च होइत गेल । एहि बेर जे लङटे सौराठ जाय कहलनि तनिकर एक्को दशा हम छोड़बनि नहि ।

पोखरिक घाटपर बैसल, एँड़ीमे बैसल वर्ष दिनुक मैलकेँ रगड़ि-रगड़ि छोड़बैत मद्धू बाबू स्वगत भाषण कयने चल जा रहल छलाह । हम वाह्यभूमिसँ आबि चुपेचाप मोहारपर बैसि स्वगत भाषण सुनि रहल छलहुँ । यद्यपि भाषण ध्वनित करैत छलनि जे कोनो तरहेँ मद्धू बाबू एहि बेर सौराठ सभा नहि जा सकैत छथि, किन्तु ओ जन्मजन्मान्तरक मैल छोड़यबाक उद्देश्य एक मात्र सौराठक तैयारीक छलनि । हम गप्पमे रस लेबाक हेतु पूछि बैसलियनि– समाजक लोकपर बड़ बेसी बिगड़ल बुझना जाइत छी से किएक ? हमरा डर होइत अछि ।

समाजक लोकपर हम बिगड़बे करबैक तँ की बिगाड़ि लेबैक जे समाजकेँ हमर डर होयतैक ? मद्धू बाबूक स्वरमे उपालम्भक ध्वनि छलनि । अन्तरसँ जेना करुणा सेहो ओही ध्वनिक संग हुलकी मारि रहल छलनि । समाजक अर्थे होइत छैक विशेष परिस्थिति उत्पन्न भेलापर एक दोसराक पिठपहुक होइक । सम्पत्तिमे, विपत्तिमे । आ साधारण स्थितिमे तँ व्यक्ति-व्यक्ति अपन वर्तमान समस्या आ भविष्य चिन्तनमे मग्ने रहैत अछि। ई मद्धू बाबूक मस्तिष्कमे समाजक परिकल्पना छलनि । आ विशेष परिस्थिति छलनि जे जखन सभा गाछीकेँ बड़दहट्टाक अनुरूप वरहट्टाधरि कहि देबाक दुस्साहस लोक कऽ रहल अछि ताहू परिस्थितिमे दू चारि सय टाका गनिओं कऽ एक कन्यारत्न प्राप्त करबाक अभिलाषी मद्धू बाबू एक पंच वर्षीय योजना पूरा कऽ चुकल छलाह । देशमे सिन्द्रीक खाद कारखाना, बरौनीक तेल शोधक कारखाना, भिलाइक इस्पात कारखाना एतेक दूर धरि जे कोशी सन उच्छृंखल नदीकेँ तटबन्धक बीच बान्हि रखबाक योजना पर्यन्त पूर्णताक स्थितिमे पहुँचि सकल, किन्तु मद्धू बाबूक जीवन रूपी गाड़ीमे दोसर पहिया नहि लागि सकलनि । तेँ ओ जीवनकेँ घोड़लदौना जकाँ लदने छथि आ समाजकेँ तकर चिन्ता नहि ?

मद्धू बाबूक स्वर क्रमशः विगलित होइत गेलनि । पुनः बजलाह– खेदू बाबू । कनेक विचार करू जे हमरा धन बीत नहिएँ जकाँ अछि । कपारमे भगवान विद्या नहि लिखने छलाह । से जँ रहैत तँ पाँच बरख के कहय, दस बरख पहिने हजार खाँड़ दऽकऽ कतेक लोक अपना ओहिठाम लऽ जयबाक हेतु उताहुल भेल अबितथि, मुदा से तँ पूर्वजन्मक जतबे कयल रहत ततबे पायब । तथापि मुँह कान तँ भगवान बेजाय नहि देने छथि । कनेक रंग कारी अछि से तँ हमरा जनैत पुरुषक उचिते रंग थिकैक । मौगी ने गोरि हो ? भगवान विष्णु श्याम आ लक्ष्मी गोरि । रामचन्द्र श्याम आ सीता गोरि । कृष्ण श्याम राधा गोरि । यैह तँ असल युगल जोड़ी होइत छैक । मद्धू बाबूकेँ अपन वर्ण पर जेना गौरवक बोध भऽ उठलनि । निराशाजन्य स्वरमे मिश्रित कारुण्यकेँ ई गौरव कनेक मद्धिम कऽ देलकनि ।

हम कहलियनि– ई बेस कहलहुँ अछि । मुदा महादेव तँ गोर छथि ।

आहि रे बा ! तेँ ने बौरहबा ! सती मरि गेलथिन तँ हुनक शवकेँ कान्हपर उघने फिरथि । गोर पुरुष कनेक मौगिआह अवश्य होइत अछि । एतबा कहैत मद्धूबाबूक प्रसन्नता भीतरसँ नायलोन कपड़ाक तऽर सँ झलकैत अंग जकाँ झलकि उठलनि हुनक निसाना रहनि समाजक मुखपात जे गामक प्रतिनिधित्व सभागाछीमे करैत छलथिन जयवल्लभ बाबू, तनिका दिस ।

हम कहलियनि– देखबा सुनबामे तँ अहाँ साधारणमे बेजाय नहि छी ।

हे औ खेदू बाबू ठोर कनेक मोट अछि सेहो खूब डूबिकऽ विचारला उत्तर गूने बूझि

पड़त । खेदू बाबू विश्लेषण करऽ लगलाह । पातर ठोरवलाकेँ देखबैक बाजऽ लेल लुसुर फुसुर करैत रहतैक । बिनु बजने जेना ओकरा रहले ने जाइ छैक । एहन आवेशक क्षणमे गंभीरतासँ विचार कऽ बजबाक ओ धैर्य ने रहैत छैक । ओ लुचलुच करैत रहत । तेँ एहने लोकक हेतु लुच्चा लबरा आदि विशेषण सभ बनलै । मोट ठोरवला कमसँ कम लबरा तँ नहि होइत अछि ? खेदू बाबू दृष्टि स्थिर कऽ मुद्रा बनौलनि जेना ओ हमर बोध-शक्तिकेँ थाहि रहल होथि । एहू व्यंग्यक लक्ष्य जयवल्लभे बाबू छलथिन जे सभ बेर चलबाक आग्रह करैत छलथिन, सौराठ पहुँचलापर परोपट्टाक धनी वर्गक ओहि ठाम पहुनाइसँ पलखति नहि भेटैत छलनि ।

हम कहलियनि– अहाँक दृष्टि बड़ सूक्ष्म अछि । आकृति विज्ञान बिनु लिखनहुँ पढ़नहुँ अहाँ बेस बुझैत छिऐक ।

हे औ ! लोक कहत की मद्धू बाबूकेँ डेढ़ेटा आँखि छनि, क्यो कहत जे सरङ पताली छथि अपना काने सुनल बात कहैत छी । रौ अभागल, हम लिखल पढ़ल नहि छी, हमरा डेढ़ेटा आँखि अछि तँ हम तोहर अँतरीमे जे गप्प रहैत छौक से पर्यन्त देखि लैत छियौ आ जँ भगवान दुनू आँखि देने रहितथि तँ हमरा छोड़ि अपना गामक मुखिया बनबाक सेहन्ता मोनमे गाड़ले रहि जइतौक । आब मद्धूबाबूक स्वर गुरुगर्जनमे परिवर्त्तित होयबाक स्थितिमे पहुँचि गेल छलनि । हम सरङपताली छी तँ कोनो मौगीसँ आँखि माङि अनलहुँ अछि ? हमर आँखि सोझ नहि होइत अछि तेँ तोरा ई– आ... क्यौ देखलक हमरामे ? हमरा जे अपन कन्या देत तकरा हेतु हम अपन सम्पूर्ण आत्म समर्पण करबैक । ई गुन की कोनो छोट भेलैक ?

हम कहलियनि– 'मद्धूबाबू अहाँ गप्पकेँ बहुत दूर धरि नेङडबैत छिऐ' । हमरा बूझल छल जे जयवल्लभ बाबूकेँ एक बेर अपवाद उठल छलनि । मद्धूबाबूक लक्ष्य ओम्हरे रहनि । गप्पकेँ नेङड़यबाक बातंपर हुनका अपन कबजंघ टाङपर ध्यान चल गेलनि । बजालह– हम झखाइत चलैत छी । हमरा बदलामे क्यौ आन चलि दैत अछि ? हम गाम-गमाइत जाइ छी कि नहि ? तोरे सभक संग पँच-पँच बेर सौराठ गेलहुँ अछि । की मद्धू कतहु पछुअयलाह ? ओना तोरा सब जकाँ कतहु हुलकल नहि फिरै' छी । ककरो दलान पर भोरे पहुँचि गेलहुँ जे लाजेँ पच्छेँ चाह तऽ पिअयबे करत । नहि दू, एको खिल्ली पान तऽ देबे करत । साँझमे ककरो दलानपर मुँह कोंचियबैत उपस्थित जे नहि दू, एको गिलास भाङ भेटि जायत । एना कुकुर जकाँ हुलकैत फिरब से जिनगी मद्धू नहि ने जीबै छथि । एतबा कहैत, अपन सर्वांग शरीर निंघाड़ैत ततेक जोरसँ गरजलाह जे पोखरिक चारू मोहार प्रतिध्वनित भऽ उठल ।

पछबरिया मोहार परसँ कानपर जनउ चढ़बैत जयवल्लभ बाबू टुघरि अयलाह । इशारासँ पुछलनि । हम कहलियनि– मद्धूबाबू एहि बेर सौराठ चलबा लेल तैयारे ने होइत

छथि । हमर ठोर पटपटाइत देखि मद्धूबाबू फेर गरजि उठलाह— लोक कहत जे अहाँ ऊँचे सुनै छिऐ' । रौ प्रचण्ड ! बण्डा कोबर घरमे फुसुर-फुसुर करब सिखबे ने कयलनि । बकरी जकाँ मेमिअयबैँ तँ मद्धू नहि सुनथुन, पुरुख जकाँ बाज, तखन नहि सुनथि तऽ कह जे कहबाक होउ । मुँह विकृत करैत मद्धूबाबू छाती भरि पानिमे पैसि 'गंगे च यमुने चैव मन्त्र जोरसँ पढ़ैत, पानिकेँ धफारि दूनू हाथेँ माथ पर पानि उपछऽ लगलाह ।

मद्धू बाबू जाहिसँ सुनथि हम ततबा जोरसँ जयवल्लभ बाबूकेँ कहलियनि— एहि बेर जेना हो तेना मद्धूबाबू लै कोवराक खीरक जोगाड़ बिनु धरौने सौराठसँ डेग नहि उठाबऽ देब ।

मद्धबाबू सूर्यस्तव पाठक क्रम भंग करैत बाजि उठलाह औ खेदू बाबू ! समाज आब समाज नहि रहल । आब छै अगबे बसुलवे धार अपने दिस । ओ तँ रच्छ अछि जे भगवान हमरा पुरुष बनौलनि, कुमारो मरि जायब तँ कोनो बात नहि । मुदा अहीँ लोकनि विचार करू जे जँ मौगी रहितहुँ आ कुमारि रहि जइतहुँ तँ समाजक नाक बिनु कटने रहैत ? एतबा बजैत बजैत मद्धू बाबूक क्रोध करुणामे बदलि गेलनि । जोर जोरसँ एवमुक्त्वा तु भगवान् भास्करो जगदीश्वरः पढैत पुनः माथ पर पानि उपछऽ लगलाह ।

[मिथिला मिहिर, 12 सितंबर 1965]



पहिने एना नहि होइत छलैक

जखन घमाघट्ट शुद्ध चलैत रहैत छैक तँ झिमनीओकेँ होइत छैक जे हम चठैल छी । जखन झिमनीकेँ ई गुमान तखन जँ दूध–दही अकाबरी सोन भऽ जाइत अछि तँ से कोन आश्चर्य बात ? बजारक ई हाल रहैत छैक जे टेँटमे टाका खोंसने दोकाने–दोकाने बौआयल फिरू । दस टाकाक वस्तु बीस टाकामे किनबाक साहसे ने होइत रहत आ अन्तमे जखन पित्त आँट भऽ जायत तखन 'हारल नटुआ झिटुका बीछय' एहि कहबीकेँ चरितार्थ करैत अपन आर्थिक दुर्बलतापर झुझुआइत, समाजक विवेकहीनतापर खौंझाइत बनियाँ बेकालक दृष्टिहीनता आ अर्थलोलुपतापर झमाइत पसेना चुआ कऽ कमायल एक नम्बरक टाकासँ दू नम्बरक वस्तु–जातपर गमाकऽ झखैत गामपर घूरब । शुद्ध एकलगना रहलापर तँ बजारमे आरो आगि लागि जाइत छैक । आ एमहर बरियातीमे आयल लोक तीन दिनसँ पेटकेँ दुधही डाबा जकाँ सोन्हाय रस गारि–गारिकऽ अगबे रसगुल्ले चपबाक मनसूबा बन्हने गामेघरसँ डँड़ाडोरिकेँ ढील करैत विदा होइत छथि ।

नाम कथीलेल ककरो लेबनि, सर्वनामेसँ बूझि जयबामे बुधियारी छैक । तेँ मानि लिअऽ जे हुनक नाम थिकनि चिल्लाँ बाबू । से चिल्लाँ बाबूक ओतय ओहि दिन कन्यादान छलनि । शुद्ध शेषशुद्ध छलैक माने अन्तिम दिन, तेँ आँखि मूनिकऽ जकरा जतय पटलैक, मन मोताबिक पहिनेसँ सोचल जुगलतगर काज नहिओ भेलैक तँ विवाहोजन्मरणंच यदा यत्र भविष्यति' एहि उक्तिकेँ ब्रह्मवाक्य मानि, कन्यागत लोकनि चिन्ताक अगाधसागरसँ डुबैत, भसिआइत घोट–घाँट पानिओ पिबैत कछेड़ लागि रहल छलाह ।

अन्तिम शुद्ध रहलाक कारणेँ इष्ट अपेक्षितमे अनेक ठाम करतेवता उपस्थित छल । धनसँ वा मनसँ आइ–काल्हि ककर के सहायता करैत छैक ? किन्तु तनोसँ अपन उपस्थिति नहि देखा देलासँ अनेक ठाम भविष्यमे संबंध बिगड़ि जयबाक आशंका, तेँ लग पासमे जे बन्धुगण रहथि तनिका सभक ओहिठाम हकार पुरैत राति अधिक भऽ गेल । ओना अपेक्षाकृत आन–आनसँ बेसी प्रगाढ़ मैत्री हमरा चिल्लेँ बाबूसँ, मुदा घर कनेक दूर

रहलाक कारणे तथा निश्चिन्त भऽ गप्प-सप्प करबाक उद्देश्यें दोसरे दिन चिल्लाँ बाबूक ओतय जयबाक निश्चय कयलहुँ । प्रात खन दैनिक कृत्य सम्पन्न करैत रौद तेहन रौद्र रूप धारण कऽ लेलकै जे घरसँ बहरयबाक साहस नहि भेल, तें दिन खसलापर ओतय पहुँचलहुँ । दूरेसँ ललका-ललकीक स्वर सुनबामे आयल ।

चिल्लाँ बाबूकें कन्यादान एहि वर्ष अत्याज्य छलनि । आङनबालीकें हाकरि लागल जे हाय राम ! किछु होइक एहि बेर पहिलुक जमाय सन जमाय नहि करब । जमीन-जथा बेचने होअय वा देहे बेचि लेबऽ पड़य, मुदा करब डाक्टर ने तँ इन्जिनियर ने तँ प्रोफेसर, हारने हरिनाम तें कमसँ कम कतहु नोकरी-चाकरी कयनिहार वर तँ भेले ताकय । अपना ओकातिसँ फाजिल कयलापर लोक धयल जाइत अछि एकर परिज्ञान अपना समाजक तथाकथित सभ्रान्त परिवारक स्त्रीवर्गमे भेटबे ने करत, से भने ओ कतबो लिखलिओ पढ़लि किएक ने हो । ओकरा सभक एके सूर 'तोरा किछु होइत छौक हमरा कुर्थी उलबऽ दे' । हमर मामा स्त्रीगण शब्दक व्याख्या करथिन– स्त्री+गण आ कहथिन जे कोनो-कोनो भाग्यवानेकें स्त्री भेटैत छथिन, ने तँ बेसी कर्मघट्टूकें गणे कपारपर बथाइत छथिन । हमर फल्लाँ बाबू सेहो ओही कर्मघट्टूक बहुमत दलमे छथि । स्त्री सुखमे दुखमे संग देत आ गण सतत माथक गुद्दी चटैत रहत । ओकर काज थिकै फरमाइस करब आ पूर करब पुरुषक दायित्व । से चिल्लाँ बाबू जेना तेना तेहन वर उठा कऽ अनने रहथि जे घरक सुभ्यस्त, बी.ए.मे पढ़ैत आ पास कऽ लेला उत्तर कतहु ने कतहुसँ नियुक्तिपत्र हाथमे आबि जयबाक संभावना छनि । जेना जाड़मासमे राति कऽ ओसमे देल काँचे दूधकें भोरे हाथोसँ दस बेर घोंकारि देलापर नेनु अर्थात् मक्खनक गोला दूधक व्यापार कयनिहारिक हाथमे आबि जाइत छैक ।

ताहि दिन तँ एना नहि होइत छलैक, मुदा आब तँ एहिना होइत छैक जे जकरा घरपर जै टा खढ़ ततबा टाका गनि कऽ नगदा-नगदी हाथमे धरा दियौक तकर बाद जे वस्तु सब बाप जनम नहि देखने हो से सब वर-विदाइमे देबऽ कहत । एतबोपर जान छूटल से जँ बुझलहुँ तखन काज नहि पटत । तकर बाद चाही बरियाती सभक आगत-भागत, स्वागत-सत्कार । बरियातीओमे पहिने एना नहि होइत छलैक । बड़ पैघ लोक अर्थात् धनाढ्य जमीन्दार भेल तँ वरसँ खवास धरि मिलाकऽ तेरहसँ पन्द्रह गोटे गेल । लगक रहल तँ भोरे आ दूरक रहल तँ दोसर दिन दही-चूड़ा खा कऽ बिदा भऽ गेल, मुदा आब तँ बरियाती नामपर जाइत छैक हँसेरी । ताहूमे जे जेहन सनटिटही से तेहन खौकार । ओहन-ओहन खौकार लग केहन-केहन बौकारक बुद्धिमे बग्धा लागि जाइत छनि । से चिल्लाँ बाबूक ओहिठाम ओहन हँसेरी आयल रहनि । कहने रहनि पचीस तीस आ पहुँचलनि साठि गोटे ।

ताहि दिन एना नहि होइत छलैक जे कन्यागत लग बरागत फरमाइस करैक जे

बरियाती सभकेँ अमुक-अमुक वस्तु भोजनमे देबऽ पड़त । आब तँ सेहो पहिने गछा लैत छैक । सेहो सात्विक आहार नहि, विशुद्ध राक्षसी भोजन । चिल्लाँ बाबूसँ नहि गछौने छलनि से फूसि कोना कहल जाय, किन्तु परिस्थिति किछु एहन भऽ गेलनि जे तकर पूर्त्ति करब बुझू आकाश कुसुमवत् भऽ गेलनि । हम पहुँचलहुँ तँ चिल्लाँ बाबू नीचामे चुक्की माली भेल बैसल कल जोड़ने वरक बापकेँ कहि रहल छलथिन– आब तँ हम अपराधी भऽ गेलहुँ, तेँ दण्डमे हमरा मोगली भरिकऽ जतेक इच्छा हो ततेक कोड़ासँ पीटल जाय । वरक बाप ताहिपर कहलथिन– हमर पानि उतरि गेल, नाक कटि गेल, समाजमे मुँह देखयबा जोगर नहि रहि गेलहुँ । डाँड़मे दम नहि छल तँ नहि गछितहुँ । हम तँ सभकेँ यैह कहिकऽ अनलिऐक जे पाँचो टा मधुर छैनेक रहतैक, माछ-मांस आ पोलावसँ सबकेँ नकमानि करा देब आ अहाँ परसलहुँ खाजा, मुंगबा, लड्डू, बालुसाही, पनितोआ आ रसगुल्ली जे कंठमे जाकऽ तेना गराँ लगैक जेना कटहरक मोछीक झक्का हो । भुसहने खयबाक रहतैक तँ लोक बरियाती जयबे किएक करत ।

सरियातीमे सँ एक गोटे कहि उठलथिन– अपने कहने छलिऐक पचीस-तीस गोटे आयब आ अयलहुँ साठि गोटे, एकर माने जे घरवैयाकेँ भंडूल करबाक नेयार-भास गामेसँ करैत अयलहुँ । ताहि पर वरक पितामह तड़ङि उठलथिन– बरियाती तँ तीस पुरबो नहि कयल । हम अपने सात भैयारी– क्यो बी.डी.ओ., क्यो डाक्टर, क्यो प्रोफेसर, क्यो ओकील, जे बड़ बुड़िलेलो से ठीकेदार जे लाखसँ कमकेर टेण्डर दिस आँखि नहि उठबैत छथि । परिवार पिछू एको गोटेकेँ नहि कहितिऐक तँ अपनामे सौमनस्य रहैत ? रहल नेना भुटकाक लौल, से एक घरसँ एकटा कहलकै तँ दोसर घरसँ दू टा, एना मिला कऽ पन्द्रह गो छबारिए भऽ गेलैक । एकरा सभक चरवाहिलै पाँच टा खबास संग करऽ पड़ल । हम वरक पितामहे, ओ बापे भेलथिन, ई बूढ़ा मातामह, ओ धोधिवाला माम, ई पतरसुट्टू पितृमाम, ओ युवक ममियौत, ई युवक पिसियौत, ओ चरखाना अंगावाला मसियौत तथा ई दूनू गोटे जमाइए भेलाह । आब कहल जाओ जे ककरा छोड़ि दितिऐक ? एकटा कमतीया, दोसर सिपाही आ तेसर घोड़ासभक सहीस, मात्र दू टा हरवाह आ दू टा चरवाह थीक । ई सब जँ हमरा पौत्रक विआहमे बरियाती नहि अबैत तँ की हमरा बापक विआहमे जाइत ?

एक गोटे कहि उठलनि– नीक कयल जे सबकेँ गदहाक जनम छोड़ाय देलिऐक । अपनेक बापक विआहमे बरियाती तँ यमपुरीए जाय पड़ितैक । बरियाती लोकनि मात्र आध घंटा पहिने पन्द्रह किलो चाउरक पोलाव, चालीस किलो माछ, अस्सी-पचासी टा मुंगवा सवा सय खाजा, अढ़ाय सय बालुसाही तीन सवातीन सय लड्डू, साढ़े तीन सय करीब पनितोआ आ मात्र सवा सात सय रसगुल्ला, दस खोर दही आ दस पाँच टा कऽ आमसँ कंठक बीहरिकेँ भरि एक चुरू कऽ पानि सेहो दऽ देने

छलथिन । जेठ मासक ई कड़कड़ौआ रौदमे तबल एस्बेस्टस सीटसँ छारल बड़का हॉलमे लागल एक कात गद्दा-मसलंग आ दोसर कात दरीपर पड़ल, कबै माछ जेना कड़ाहक कड़कड़ायल तेलमे कऽर फेरैत अछि तहिना करौट फेरि रहल छलाह । कहै छै लोक जे पानिक जन्तु माछ पेटोमे गेलापर पानि मङै छैक । ठोसे पदार्थसँ तेना गऽहे गऽह हूरि लेने छलाह जे पानि सन तरल पदार्थोक हेतु जगह नहि रहि गेल छलनि तेँ कंठ सुखा रहल छलनि । बरियातीक ई हाल आ कन्यागत द्वारा जनौ-सुपारी लऽ उपस्थित भेलापर वरक बाप दिनमे जे भेल से भेल, रातिमे कतहुसँ मांसक जोगाड़ धरयबाक हेतु कन्यागतक पुट्ठा पर सवार छलथिन । हम चुपचाप चिल्लाँ बाबूक पाछूमे ठाढ़ छलहुँ ।

ई बात सत्य जे भोज्य सामग्रीमे माछ मांस दूनू रहत से हिनका पक्षक लोक स्वीकार कयने छलथिन, किन्तु ओहि दिन मुसलमानक पावनि ईद पड़ि गेल रहैक आ मांसक व्यापार तँ विशेषत: ओही वर्गक लोक करैत अछि आ ओहि दिन ओ सब पावनि मनबैत की व्यापार करैत ? चिल्लाँ बाबूक आदमी चौदिस खिरल छलनि; मुदा उपलब्धे नहि भेलैक । तेँ साठि गोटेमे 24 रु० दरसँ 40 किलो सुच्चा रोहु 960 रु०मे मङबौने छलाह । ओहिमे सँ घरवैयाक कोन गप्प जे एम्हर आयल पाहुनो लोकनिकेँ दर्शन धरि नहि भेलनि, बारिक लोकनिकेँ परसबाक काल जे सुगन्ध लगलनि तकरे 'आघ्राणं चार्ध भोजनम्' मानि सन्तोष कयने छलाह ।

हमरा नहि रहल गेल तँ बजलहुँ— परिस्थिति लोकके विवश कऽ दैत छैक, आब तँ अपने कुटुम्ब भेलहुँ, हमर मर्यादा अपनेक मर्यादा, हमर अप्रतिष्ठा अपनेक अप्रतिष्ठा । अपने लोकनि खान्दानी लोक छी तखन खयबा पीबा लै एना घिनायब शोभा नहि दैत अछि आ ताहि दिन एना होइतो ने छलैक । हम आरो किछु कहिते छलियनि तावत वरक मातामह बाजि उठलाह, ओ कनेक नकिआइत छलाह से ओ कहलनि— ई कोन तर्क भेल जे ताहि दिन एना होइते नहि छलै । ताहि दिन लोक आकाशमे उड़ैत छल ? ई गँड़िजम्मा पहिरैत छल ? ठाढ़े-ठाढ़ मूतैत छल ? एतेक खूना-खतरी होइत छलै ? भने मनुक्खक नाक, कान आँखि, मुँह अपना जगहसँ नहि घुसकल होइक, मुदा खान-पान, रहन-सहन, रीति-रेवाज, रुचि-प्रवृत्ति एहि सभमे परिवर्त्तन होइत रहलैक अछि, होइत रहतैक । तेँ हम साफ-साफ कहै छी जँ घरबैया बुतेँ नहि भेलनि तँ लाबथु पाँच सय, हमर आदमी पतालसँ छागर उपर करत । अन्हरोखेमे भानस चढ़ि जाय, काल्हि सेबेर सकाल मांस-भात खाय दसबज्जी गाड़ी हमरा लोकनि पकड़ि लेब । बिनु मांस, भात खयने बरियाती दलानपरसँ नहि उठत, नहि उठत, नहि उठत !!! हम बात जानी साफ ।

(मिथिला मिहिर, सितम्बर 1987)



पिपरमिन्टक शीशी

''खिस्सा कहय खिसनी सुन भाइ मकड़ा, जी जान छोड़िकऽ चारि टाङ ककरा'' एहि बुझौअलिक उत्तरमे पुरान लोक सब खाट ओ चौकीक नाम लैत छल, आधुनिक युगमे लोकक नजरि चौकी आ खाटसँ पहिने कुर्सी ओ टेबुलपर जाइत छैक, तेँ नवका लोक एकरे नाम लेत। से हम कुर्सी टेबुल लगौने एकटा खिस्सा गढ़बाक मुद्रामे बैसल छलहुँ तावत हमर प्रिय सुहृद श्रीभूखन भाइ पहुँचि गेलाह। साक्षात् खिस्साक प्रर्तिमूर्त्तिकेँ सोझाँमे ठाढ़ देखि हमरा कल्पनामे आयल प्लॉट अर्थात् कथाक बिन्दु न्यूज प्रिंट पर पड़ल मोसि जकाँ ठामहि ढबकि गेल। अहूँ केँ जँ खिस्सा गढ़बाक बाइ हों तँ अहाँकेँ जेना गंगाक उद्‌गम स्थल गंगोत्री आ यमुनाक उद्‌गम स्थल यमुनोत्री कहबैत अछि तहिना हमरा भूखन भाइकेँ खिस्सोत्री अथवा कथोत्री कहल जा सकैत छनि, तेँ हम हिनकासँ भेट करा दैत छी। छोट, पैघ जेहन कथा लिखबाक हो, हिनका लग ताही अनुपातमे बैसू, तुरन्त कथा तैयार भऽ जायत। हिनक रोम-रोममे कथाक प्लाट लटकल रहैत छनि।

एहन जे हमर भूखनभाइ से अबैत देरी कहलनि– भकारः कुम्भकर्णश्च, भकारश्च विभीषणः अर्थात् कुम्भकर्णोमे एकटा भकार आ विभीषणोमे एकटा भकार तहिना भाइमे सेहो एकटा भकार आ भाङमे सेहो एकटा भकार, तेँ बिन भाङे कहू जे भैयारी कोना ? हम पत्ती आ मरीच लेने अयलहुँ अछि, अतिरिक्त एकरा जेहन राजसी बनयबाक हो से अहाँ बनबा सकैत छी। सौंफ, दक्षिणी, पोस्तादाना, कागजी बदाम, खीराक बीया, गोखुलाक काँट, चिन्नी, दूध, अबजूस, गुलाबक पत्ती अथवा गुलाब जल एहिमे सँ सबटा हो तँ उत्तम, नहि तँ जतबे जे जुटि सकय सैह पर्याप्त। हमर की ? हम तँ 'रगड़ि रगड़ि तरहत्थी पर दै फाँकि मस्त भै झूकी, रसगुल्ला लड्डू खयबामे ककरो लग नहि चूकी''। हमर सिलौट जहियासँ फूटल अछि तहिया सँ यैह क्रम चलि रहल अछि। अहाँक ओहि ठाम अयलहुँ जे अहाँ एकरा शिलान्यास करा सकैत छी। जाबत ई पुड़िया लोढ़ीसँ युद्ध रत रहत ताबत हमहूँ दुनू गोटे गप्प-रत रहब। आहि ! पारिवारिक कुशलादि तँ पुछबे नहि कयल। कहू, सब निकेँ अछि ? एतबा कहैत अङपोछाक खूँटमे बान्हल पोटरी फोलि

ओहिमे सँ एक पुड़िया बाहर कय टेबुल पर राखि देलनि । हम अपन विद्यार्थीकें सोर कऽ पुड़ियाकें आङन पठा देलिऐक कलमकें बन्द कऽ गप्प करबाक मुद्रामे बैसलहुँ आ पुछलियनि-ऐहि बेर तँ अहाँकें बहुत सता देलक ।

भूखनभाइ बिनु किछु सोचने, बिनु उदास होइत स्वाभाविक मुद्रामे कहि उठलाह सबटा भगवतीकें भारा । हम तँ एहि बेर दु:खित पड़लहुँ ताहिसँ अतिशय प्रसन्न छी । हम चकुअयलहुँ जे दु:खित पड़ने लोक प्रसन्न कोना भऽ सकैत अछि ? ताहूमे अतिशय प्रसन्न ? हमर भूखनभाइ तेहन काकचेष्टी छथि जे हमर मुखमुद्रे देखि कहि उठलाह– अहाँ मुँह की बनबैत छी ? एहिमे चकुअयबाक कोनो प्रयोजन नहि । प्रसन्न होयबाक कारण कहब तँ अहूँ प्रसन्न भऽ उठब । एतबा कहैत ओ डाँड़सँ तमाकुल चुना कऽ राखऽ वला डिब्बी बाहर कऽ देखबैत कहलनि– देखै छी ई डिब्बी केहन सुन्दर अछि ? भाइ ! सबटा भगवतीकें भारा । हुनका जे इच्छा होइत छनि होइत छैक सैह । एहिमे जँ मनुक्ख टाङ अड़बैत अछि तँ अपन बुड़ित्वक प्रदर्शन मात्र करैत अछि । जँ दु:खित नहि पड़ितहुँ तँ औखद खयबाक प्रयोजने ने होइत । जँ औखद खयबाक प्रयोजन नहि होइत तँ एहन सुन्दर डिब्बी कोना हाथ लगितय ? ई भगवतीक इच्छा छाड़ि आन की भऽ सकैत अछि ?

एतबा कहैत भूखन भाइ डिब्बीमे सँ तमाकुल बाहर कऽ, तरहत्थीपर दऽ चारि रगड़ देलथिन आ ओहिमेसँ एक खोराक मकरध्वज एतेक हमरो दिस बढ़ा देलनि । हम कहलियनि– भूखन भाइ ! छुच्छे डिब्बी किनितहुँ एक सवा टाकामे भऽ जाइत, एहिमे तँ औखदोक दाम लागि गेल होयत । भूखन बजलाह– आहिवा ! ओ जे कहै छै 'समझका फेर' से अहाँ कें अछिहे । ओंना तँ औखद सहित एकर दाम 21 रु० लागि गेल । औखद रहय दस टा करजनी सन लाल खेड़हीक आकारक खेड़हीसँ चारि बड़ पैघ गोटी, ओकरा गोटी नहि कहै छै 'किदन कहै छै'... एक आधा मिनट नाम मोन पाड़बाक हेतु नाक छूलनि, माथकें ठोकलनि तखन पुनि बजलाह– हँऽ कपसूल, हँऽ हँऽ कपसूले । एहन नाम भऽ गेलैक अछि जे बिसरिये जाइत अछि । छलैक ने पहिलुका नाम 'बड़िया' केहन सोझ, आब तँ मनुक्खोक नाम अङरेजियानि भऽ भऽ गेलैक अछि । हमरे लोकनि नेना छलहुँ तँ बाप-पित्ती बौआ, बच्चा, नूनू, बाउ सैह सब कहैत छलाह । हमरो लोकनिकें धीया-पूता भेल तँ यैह सब कहिकऽ सोर करिऐक । आब तँ भऽ गेलैक– मुन्ना, बबलू, पप्पू, पिंकू, रिंकी, बेबी, बबली खौताहि के ! औ प्रचण्ड ! जें अपने बोतल तें ने बेटा मुन्ना ! एतबा कहि भूखन भाइ बलधकेल ठहाका मारि कहऽ लगलाह– हमरा सारकें बेटी पप्पा कहै छनि । हम कहलिऐन– ई की कहैत अछि ? बिहुँसैत कहलनि– ओझाजी फैशनमे आब यैह कहैत छैक । हम कहलियनि– हँऽ माय पौती बेटा खप्पा तें ने कहै' ए अहाँके पप्पा ! एतबा कहैत फेर ठहाकाक दोसर तोड़ दोहरा देलनि । फेर गंभीर होइत कहलनि– भाइ ईहो सब ओही बुढ़ियाक महिमा थिकै । जे ब्रह्मा, विष्णु महेशकें नचबैत

रहैत अछि से जँ हमरा अहाँकेँ नचबैत अछि तँ कोन भारी बात ? तेँ ने हम कहल करैत छी– सबटा भगवतीकेँ भारा ।

हम कहलियनि– एहूमे भकारेक योग । भगवतीओमे भकार आ भारामे सेहो भकार । भूखनभाइ जेना सतर्क भेल होथि, तेहने मुद्रामे बजलाह– भाइ ! कनेक आङनो दिस देखिऔ, लोढ़ी सिलौटक खटखटाहटि बन्द भऽ गेल । हम विद्यार्थीकेँ हाक देलियनि । भूखनभाइ आश्वस्त सन होइत कहलनि-- एहि बेर स्वस्थ भऽ कऽ गामसँ आबय लगलहुँ तँ अहाँक भाबहु अथवा भाउजि, जे कहियनि, से पछाति फड़िछा लेब, कहलनि जे हमरा लै एहि बेरि एक खण्ड नीक नूआ लेने आयब । हम कहलियनि नीक माने की ? आब तँ तिनपढ़िआ होइते ने छैक । ओ कहलनि– पाढ़िवला नहि, 'वायल' साड़ी । हम कहलियन– हमरासँ दसटा टके लऽ लिअऽ अपन मङबा लेब । ई तेहन नाम अहाँ कहैत छी जे जखने स्टेशन पर टिकट कटबऽ लागब कि ई नामे बिसरि जायत । छपुआ कहो, छीट कही, बनारसी कही, ननगिलाठ कही से सब तँ मोन रहत, मुदा ई जे किदन कहलहुँ से एखने बिसरि गेल । नहि नहि, हमरा बुतेँ ई नहि होयत, फुसिये हँऽ कहि दिअऽ आ पछाति अहाँ गाल फुला ली । एहन नाम दरभंगा जाइत जाइत किन्हुँ ने मोन रहत । भूखनभाइ कनेक आक्रोश व्यक्त करैत बजलाह– कहू तँ, गृहस्थक पत्नी गाम घरमे रहत, उसिनिञा-पुसिनिञा, कुटिया पिसिया, गोबर-करसी करत तखन एहन सौखिनदार नूआ पहिरत जे अंग-अंग तर सँ झलझल करैत रहैक से छजत ! मुदा की कहू फैशनक पाछाँ अपन देश नाङट भऽ गेल अछि आ जोड़नाहर तबाह । धर्म पर आस्था, ईश्वर पर विश्वास नामक कोनो वस्तु रहिए ने गेल अछि, मुदा हम सब तँ आब नहि बदलि सकैत छी ।

एहि बेरक एकटा गप्प कहै छी । गाममे छलहुँ, हमर छोटकी ननकिरबी नीचाँमे खसल दू चारि दाना बीछि मुँहमे देबाक जोगर भऽ गेलि अछि । एक दिन पाँच सात झाड़ बदाम क्यौ खेतसँ उखाड़ि कऽ अनलकै आ नेना भुटका सोहि-सोहि खा रहल छल । ओ ननकिरबी उठल एकटा सौंसे छिम्मड़ि नाकमे ठुसि लेलक । आङनक लोक सब तेहन बुधियारि जे आङुर सँ बाहर करैत करैत ठेलि कऽ आरो भीतर कऽ देलकै । आब ओकर प्राण अकबक । लेरें पोटेँ, नोरेँ-झोरेँ तर-बतर भेल अड़राहटि मारय लगलै । सब कहय जे एकरा अस्पताल लऽ जइऔ । हम कहलिऐक– ओ साक्षात् यमपुरी थिकै, हमरा बुतेँ ओतय लऽ जायब पार नहि लागत । आङनसँ लोहछैत ओकरा उठौने अइलीह आ हमरा लग रखैत कहलनि– आब जँ ई मरतै तँ एकर हत्या अहींक कप्पार । हम कहलियनि– भगवतीकेँ भारा । लोहछि कऽ बजलीह-- हँऽ भगवतीकेँ एकर बलि चढ़ा दिऔनि ।

भाइ ! हम तमाकुल चुनबैत रही, मारलिऐ थपड़ी, छौड़ीकेँ लगलै सुरसुरी कि छिकलक ठाँहि आ छट दऽ ओ छिम्मड़ि नाकसँ छिटकि कऽ बाहर भऽ खसि पड़लैक ।

फेर हमरा मुँहसँ बहरा गेल भगवतीकेँ भारा। नाक फूलि गेल रहैक, किछु कालक बाद फेर खाय खेलाय लागलि। रौ भाइ। विश्वासे ने रहतौ तँ फल कोना भेटतो ? तेँ ने कहल गेल छैक 'विश्वासः फलदायकः'।

तावत विद्यार्थी आङनसँ लोटा-गिलास लेने आबि गेलाह। भूखनभाइ लोटा आगूमे राखि मन्त्र पढ़य लगलाह– जो कोई करे अदखोइ बदखोइ उसके घरमे बचे न कोइ, ओ न चढ़ाबै विजया कली उस मरद से औरत भली' एतबा कहि दू चुरू गिलासमे हमरा लेल राखि शेष घटोसि गेलाह। दूध चिन्नी देल छलैक, भरि मुँह प्रशंसा करैत डाँड़सँ एकटा छोटकी शीशी बाहर करैत कहलनि– दुःखित पड़ला पर प्रसन्नताक दोसर कारण भेल– ई शीशी। कहियासँ सेहन्ता होइत छल जे एकटा नीक शीशी भेटैत तँ पिपरमिन्ट रखितहुँ। पिपरमिन्ट राखऽ लेल देखू केहन सुन्दर ई शीशी अछि। जँ अहाँक लगमे हो तँ दू चारि दाना दऽ दिअऽ नहि तँ दोकानेक ठेकाना पता कहि दिअऽ जे जइती काल एहिमे भरबौने जाइ, आइ नीक दिन छै, भगतवीकेँ इच्छा भऽ गेलनि जे भूखन के शीशी भऽ जाइनि तँ हमहूँ एकरा आइ उड़ाहिए लेब।

(स्मारिका, 1981 बोकारो)



जीरोपावर

हमर भुटकुन भाइकेँ अहाँलोकनि अवश्य चीन्हैत होयबनि । हुनक व्यक्तित्वे एहन छनि जे हुनका बिनु चिन्हने कोनो व्यक्ति अपनाकेँ प्रसन्न रहनिहार अथवा आनन्द उठौनिहारक कोटिमे बुझिए ने सकैत अछि । यदि क्यो हमर भुटकुन भाइसँ अपरिचितो रहि दावा करैत अछि जे प्रसन्न रहैत अछि तँ ओकर दावा ओहने फोँक बुझबाक चाही जेना गहूमक थोक-व्यापारक राष्ट्रियकरणकेँ आजुक भारत सरकार सफल बुझबाक दावा कऽ रहल अछि अथवा बंगला देशक संग लड़बाक क्रममे पाकिस्तानक नेता जुलफिकार अली भुट्टो हजार वर्ष धरि लड़ैत रहबाक दावा करैत छलाह ।

कनेक कालक हेतु हम मानि लैत छी जे दुर्भाग्य अथवा दुर्योगवश अहाँलोकनिमेसँ किछु गोटे भुटकुन भाइसँ परिचय नहि पाबि सकलहुँ अछि, तेँ 'शुभस्यशीघ्रम्' एहि आप्त वाक्यक अनुसार शीघ्रातिशीघ्र परिचय प्राप्त कऽ ली से उत्तम । यद्यपि नीक होइत एही वस्तुकेँ अहाँलोकनि टेलीवीजनपर देखितहुँ तँ हमर कथनक सत्यतामे सन्देह नहि रहि जाइत– अन्न-पानिक व्यवस्था तँ बादोमे होयतैक, टेलीवीजन-सन आवश्यक अनिवार्य आवश्यकताक व्यवस्था भारत सरकार शीघ्रे करबाक हेतु चिन्तित अछि से परम प्रसन्नताक विषय थिक, से सम्भव भेला उत्तर हम अपन भुटकुन भाइसँ अवश्य साक्षात्कार करायब तावत एही माध्यमसँ हुनक परिचय सुनू ।

सभसँ पहिने हमर भुटकुन भाइक हुलिया सुनि लियऽ । लोक कहैत छैक, तीसी-सन नाम आ मसुरी-सन चाकर, मुदा हमर भुटकुन भाइ तकर बिलोम छथि अर्थात् मसुरी-सन नाम तथा तीसी-सन चाकर छथि । ई तँ भेल हुनक लम्बाइ-चौड़ाइ, आब हुनक आन हुलिया सुनू । रंगमे हमर भुटकुन भाइ ने आगिक भुभुक्का-सन गोर छथि ने आर्द्राक पानि पड़ल जामुन-सन कारी, विशेषता ई छनि जे गोर लोकक लगमे ठाढ़ कऽ देबनि तँ पिण्डश्याम बूझि पड़ताह आ कारी लोक लग ठाढ़ कऽ देला उत्तर गोर अर्थात् समुद्रतटीय जलवायु जकाँ ई समशीतोष्ण छथि, अनुष्णाशीत नहि ।

हमर भुटकुन भाइकेँ भकारसँ बहुत बेसी प्रेम छनि । अपन नामक आदिक भकार देखि हुनका असीम आनन्दक अनुभव होइत छनि । भगवान, भगवती, भोलानाथ सभमे पहिल अक्षर भकारे थिकै से स्मरण होइत बीच बाटोपर ठाढ़ भऽ पाँच मिनट आनन्द लुटबाक हेतु हमर भुटकुन भाइ आँखि मुनि समाधिस्थ जकाँ भऽ जाइत छथि । ओना, अपनहु ओ आनन्दमूर्तिए छथि । भगवतीक उपासक आ भोलाबाबाक भक्त तेँ भाङकेँ अपन सवारी बुझैत छथि ।

भगवद्भजनमे तेना तल्लीन रहैत छथि जे अहाँक ओहि ठाम जयबाक पलखतिए ने भेटतनि । यदि कदाचित् कोनो भोजमे अहाँ निमन्त्रण दऽ देबनि तँ बाध्य भऽ आबऽ पड़तनि । साधारण लोक आठ आना पाइ खर्च कऽ कोनो सवारी कऽ लेत आ सुट दऽ अहाँक ओहि ठाम पहुँचि जायत, मुदा हमर भुटकुन भाइ ओहि पाइक काबुली बदाम, अवजूस, अणाची आनि, सिलौट-लोढ़ीक संयोग करा, अंगन्यास कऽ हरियरी छानि लेताह आ दस मिनटमे हुनक हाथीक हौदा कसा जयतनि । बाटपर पैर आ जीहपर दुर्गा, फेर देखि लियऽ जे नमस्तयै नमस्तस्यैक तालपर कोमहर दऽ कखन अहाँक ओहि ठाम पहुँचि जयताह तकर खबरि हुनका अपनहु नहि भऽ पौतनि ।

तँ हम कहि रहल छलहुँ जे हमर भुटकुन भाइकेँ भकारसँ बड़ बेसी प्रेम छनि तकर प्रमाण यैह जे जलपानमे भूजा, तरकारीमे भाँटा, उत्सवमे भोज, भोजनमे भात, गीतमे भजन, भावमे भक्ति, सम्बन्धमे भैयारी, छात्रमे भुसकौल आ योगोमे भोग बड़ बेसी पसिन्न छनि । भगवतीक अनुकम्पासँ जँ कदाच एको बेर भेट, परिचय भऽ गेल तँ भऽ सकैछ जे अहाँकेँ ओ बिसरिओ जाथि, मुदा अहाँ जिनगी भरि हुनका बिसरि नहि सकैत छियनि ।

एक दिन हम पूछि देलियनि— भाइ ! अहाँकेँ भकारसँ एतेक प्रेम किएक अछि तँ उत्तर देलनि जे तत्त्वतः भकाराद्यक्षरे प्रेमक मूल थिक । तकर बाद भाष्य आरम्भ कयलनि— देखू उपासना करी तँ भगवती, जनिक प्रसाद वास्तवमे प्रसाद होइत छनि 'प्रसादस्तु प्रसन्नता । भक्ति भोला बाबाक, जनिका पूजा हेतु कोनो धूम-धड़ाकाक प्रयोजन नहि । बाम हाथक मध्यमा आङुरकेँ ठाढ़ कऽ ओहीपर एक लोटा पानि ढारि 'बंबंबूः' कहि दियौनि ताहीपर प्रसन्न, अढरनढरन, आशुतोष । पेयमे हुनके परमप्रिय भाङ, एकदम सस्त, चारि टा मरीचोक योगमे घसिकऽ चढ़ा लियऽ तँ त्रिभुवनक बादशाह बनि जाउ । तरकारीमे भाँटा, मोन हो तँ भूजि लियऽ जीह पनिआय तँ भँटवर बना लिया, इच्छा हो तँ अदौंड़ी मिलाकऽ झोरा लियऽ लटपट, दालि तरकारी दुनूक विश्राम आ हड़बड़ायल रही तँ कनेक हीङ पाचिकऽ भुम्हुर आगिमे धऽ दियौक, कनेक नोन-तेल-मेरिचाइक योग पड़ैत उडि जायत । जपलानमे भूजा, कोनो बखेड़ा नहि, खापरिमे लाड़निसँ चलाकऽ तैयार, थोड़बो रहत तँ ततबा पानि माङत जे तीन घंटा धरि ओहीपर खेपि लेब । गीतमे भजन, जकरा ने राग चाही ने ताल, ने साज-बाज, मात्र ढोल-झालिपर झमका दियऽ,

टोल-महल्ला गनगना उठत । भोजनमे भात, यदि आन वस्तुक जोगाड़ नहि भऽ सकल तँ ओकरे रससे नोन मिला सरपेटि जाउ, एकदम निश्चिन्त, आ चेलामे भुसकौल, जाहि विषयकेँ अपनो बुझबामे सन्देह रहय ताहू बातकेँ उनटा-पुनटा कऽ कहि दियौक, बिनु बुझनो कहि दैत जे खूब नीक जकाँ बूझि गेलिऐक आ सेवा करबामे सतत दत्तचित्त । यैह थिकनि हमर भुटकुन भाइक भकारक प्रति प्रेमक रहस्य ।

आब हमरा भुटकुन भाइक संग घटित एक घटनाक विवरण सुनू । एक दिन भुटकुन भाइ गेलाह बजार । करबाक छलनि कन्यादान, तेँ एक टा पेट्रोमेक्स कीनऽ चाहैत छलाह । एक टा बड़का दोकानमे पहुँचलाह । प्रवेश करैत देरी एक टा नोकर पुछलकनि– ओझाजी ! की लेबै' ? भुटकुन भाइ, तुरन्त आँखि मूनि कुर्सीपर बैसि गेलाह । ओ फेर पुछलकनि– की लेबै' ओझाजी ! भुटकुन भाइ हाथसँ शान्त रहबाक इशारा करैत कहलथिन– वस्तु पछाति लेब', पहिने हमरा आनन्द उठा लेबऽ दियऽ । ओ दू मिनट हिनक मुँह दिस तकैत ठाढ़ रहल । तखन भुटकुन भाइ पुछलथिन– अहाँक घर सलमपुर थिक ?

ओ अकचकाइत कहलकनि– ''से काहे ओझाजी ! ई की पुछली ?'' भुटकुन भाइ मुसकुराइत उत्तर देलथिन– अहाँ जे ओझाजी कहलहुँ से कान तृप्त भऽ गेल, हृदय प्रफुल्लित भऽ गेल । हमर विवाह सलमपुरे थिक, ओही ठामक लोक हमरा ओझाजी कहैत अछि । एतबा कहैत-कहैत हमर भुटकुन भाइ ओढ़ूलक फूल जकाँ भकरार भऽ गेलाह ।

ओ बेचारा बकर-बकर मुँह तकैत अप्रतिभ भऽ गेल । ओहि ठाम एक दोसर ग्राहक छलैक । बेस डील-डौल व्यक्तित्व । ओ हिनका झझकि कऽ कहलकनि– अहाँ तँ हिनका घुमा-फिराकऽ गारि पढ़ि देलियनि । बुझू तँ हमर भुटकुन भाइ ओहि तेहल्लाक हस्तक्षेपकेँ अपन मानहानि बुझलनि । कण्ठ धरि 'अग्रवादी दुराचारी बुड़ित्वं पंचलक्षणम्' पद आबि गेलनि, मुदा दृढ़तासँ प्रतिवाद करबाक साहस नहि होयबाक कारणेँ ओतऽसँ चलि देलनि । पेट्रोमेक्स तँ नहियेँ किनलनि, संगहि आजुक यात्राकेँ कुयात्रा बूझि डेरा दिस घूरि गेलाह । बाटमे आत्मविश्लेषण करैत आबि रहल छलाह । अपने मोनमे प्रश्न उठलनि– अग्रवादी तँ बूड़ि होइते अछि । हमरा प्रतिवाद करबाक चाहैत छल, मुदा से हम किएक नहि कऽ सकलहुँ ? अन्ततः निष्कर्षपर पहुँचलाह जे ओ व्यक्ति चश्मा लगौने छल, ताहिसँ ओकर व्यक्तित्व भरिआयल छलैक । सैह कारण छल जे हमरा दहसति भऽ गेल । अयँ ! चश्मासँ लोकक व्यक्तित्व एत्तेक बड़ि जाइत छैक ? ओह ! एकटा चश्मा अवश्य लेबाक चाही । बस ओही दिनसँ मित्रमण्डलीमे बाजऽ लगलाह जे रातिकऽ मेंही अक्षर पढ़बामे आँखिक डिम्हा दुखाय लगैत अछि । चारू दिससँ सब विचार देबऽ लगलनि– डाक्टरसँ आँखि देखाकऽ चश्मा तुरन्त लऽ लिअऽ । शुरूमे चश्मा लगा लेलापर

बादमे आँखिक रोशनी पलटि अबैत छैक । ओना कहबा लै हमर भुटकुन भाइ एकदम सुधंग छथि, हुनक गप्प-सप्प, चेष्टा-पात सुधंगे सन बुझायत, मुदा तेहन घुइयाँ छथि जे बुझैत छथिन सत्यानाश धरि ।

अस्तु, एक दिन समय बाहर कऽ एक नेत्र विशेषज्ञक ओतऽ पहुँचलाह प्रतिष्ठामे हमर भुटकुन भाइ हमरा सबसँ बहुत आगाँ छथि । विद्यार्थीओ तेहन छलाह जे दू शास्त्रमे तीन गोट स्वर्ण पदक प्राप्त कयने छथि । डाक्टर साहेब बड़ आदरसँ बैसा कऽ आँखि जाँच करऽ लगलथिन । देबालपर टाङल कलेण्डर सन कागत पर पैघसँ क्रमशः छोट होइत अंग्रेजी अक्षर लिखल छलैक से पढ़ऽ कहलथिन ।

भुटकुन भाइ कहलथिन– हम अंग्रेजीक एकेटा अक्षर चिन्हैत छिऐक 'बी', एहन अवैज्ञानिक एकर वर्णमाला छैक जे एहिमे ने ङ छैक ने ञ छैक ने ण छैक एतेक धरि जे भ अक्षर सेहो नहि छैक । तेँ हमरा एकर वर्णमालासँ घृणा अछि ।

डाक्टर साहेब पुछलथिन– तखन बी अक्षर कोना चिन्हैत छिऐक ? "आहि से नहि बुझलिऐक ? हमर नाम एही अक्षरसँ शुरू होइत अछि । डाक्टर– अच्छा, बी अक्षर कतहु छैक की नहि ?

"हँऽ हँऽ, सबसँ निचला मेहिक्का अक्षर वाला पाँतीमे ।

डाक्टर– अहाँक आँखिमे कोनो गड़बड़ी नहि अछि । चश्माक कोनो प्रयोजन नहि अछि ।

तखन भुटकुन भाइ मनक बात कहलथिन– डाक्टर साहेब, हम नमतीमे कने छोट छी ने, तेँ छुछुन्न बुझाइत छी आ चश्मा कने जँ पहिरि लैत छिऐक तखन कने भारी-भरकम बुझाइत छिऐक ।

डाक्टर– ताहि लै जीरो पावर लऽ लिअऽ ।

कदाचित जीरो पावर शब्द बिसरि नहि जाइनि तेँ हमर भुटकुन भाइ भरि बाट बजैत अयलाह– मरीचो पावर नहि, जीरो पावर, जीरो पावर जीरो पावर ।

[मिथिला मिहिर, 9 सितंबर 1973]





मरि कऽ 'अमल'सँ 'अमर' भेल हास्य व्यंग्यक कविअमरजी मातृभाषाक एहन विरल सिपाहीमेसँ एक छथि, जनिक प्राञ्जल प्रभामे प्रायः समस्त विधाक लेखन आलोकित अछि । मैथिलीक पहिल फिल्म '**कन्यादान**'मे प्रथम साहित्यकार-कलाकार, कवि हृदय एहि कथाकारमे '**टिपिकल**' चरित्रक चित्र खिचबाक अद्‌भुत चमत्कार ।

[मिथिला-मिहिर, 8 सितंबर 1974]